नवरात्रि विशेषांक
मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
जैन तंत्र सम्पूर्ण तंत्र
हाथों-हाथ लाभ प्राप्त कीजिए
मंत्रों से असाध्य पीड़ा निवारण
भगवती जगदम्बा
के
अति विशिष्ट दुर्लभ प्रयोग
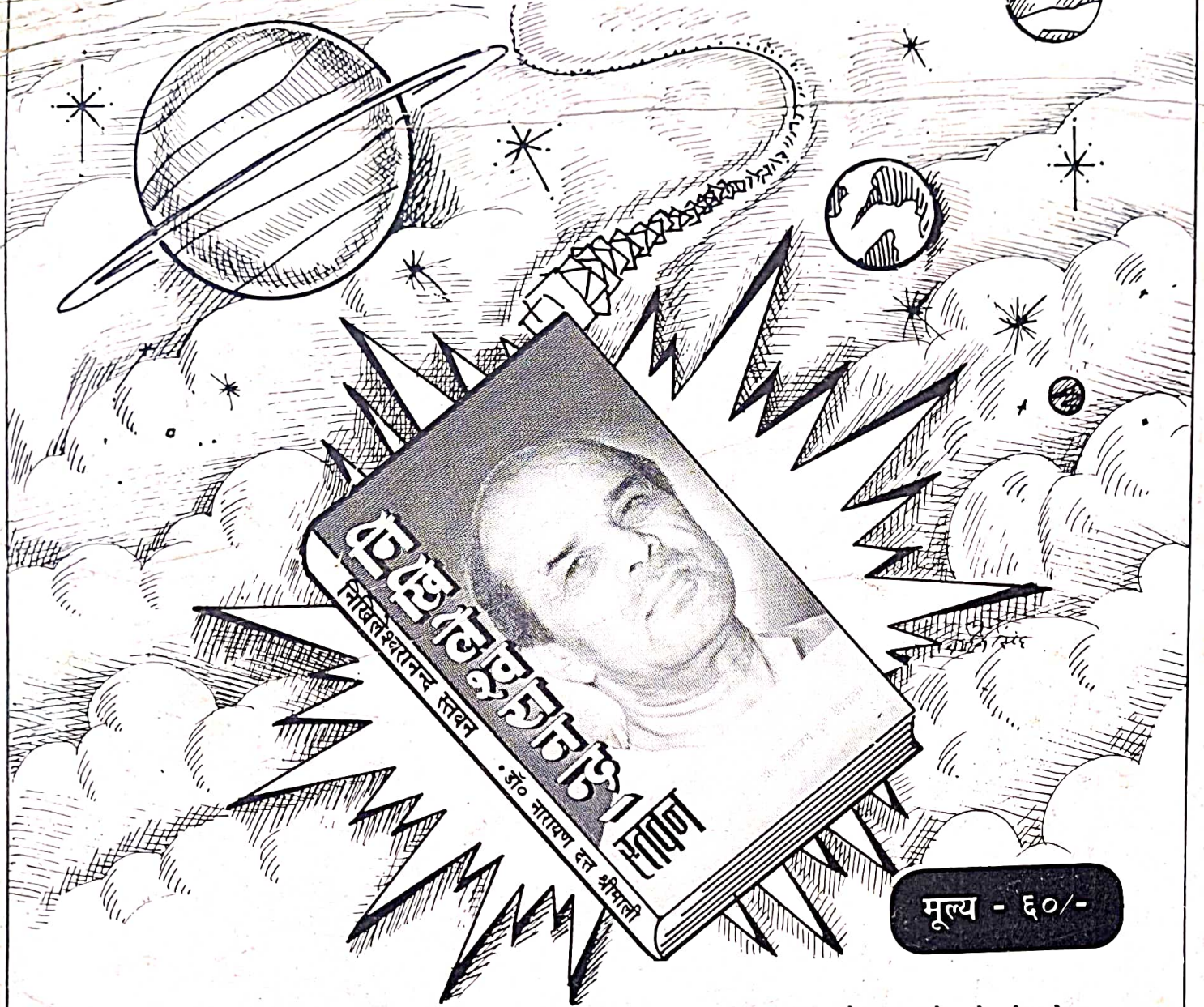
जो एक स्तवन नहीं शब्दों के माध्यम से ब्रह्म को व्यक्त करने का प्रयास है; सद्गुरुदेव के ओर-छोर को नाप लेने का प्रयास है।

और इस नाप लेने की क्रिया में ही छुपा है रहस्य अनंत विस्तार में पंख फैला कर उड़ने का,

जिसका पाठ करने ही स्वतः ध्यान की क्रिया आरम्भ हो जाती है, समाधि की भाव-भूमि स्पष्ट होने लगती है और सिद्धियां तो मानों हाथ जोड़ कर सामने आ खड़ी होती हैं।

क्योंकि यह रचना हुई है प्राणों से, तपोमयता से स्वयं प्रकृति के ही द्वारा।

तभी तो यह मात्र स्तवन नहीं काल के भाल पर लिखी अमिट पंक्तियां हैं, सिद्धाश्रम के भी योगिगों द्वारा नित्य पठनीय एवं श्रवणीय।

एक अद्भुत और अनोखा संकलन . . .

सम्पर्क

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन : ०११-७१८२२४८

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), ३४२००१, फोन : ०२९१-३२२०६

अजयकुमार उत्तम "निखिल"

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

तव च का किल न स्तुतिरम्बिके!
सकल शब्दमयी किल ते तनुः।
निखिल मूर्तिषु मे भवदन्वयो।
मनसिजासु बहिः प्रसरासु च।।

हे जगदम्बिके! संसार में ऐसा कौन सा वांड्मय है जो तुम्हारी स्तुति नहीं है, आपका तो शरीर ही सकल शब्दमय है। हे देवी! अब मेरे मन में संकल्प- विकल्प रूप से उदित होने वाली एवं समस्त संसार में दृश्य रूप से सामने आने वाली सम्पूर्ण आकृतियों में आपके स्वरूप का दर्शन होने लगा है।

नियम

अनुक्रमणिका

साधना

स्तम्भ

विशेष

चिकित्सा

सद्गुरु देव

विवेचनात्मक

दीक्षा

रिपोर्ताज

पाठकों के पत्र

● पत्रिका की हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा में भी प्रस्तुति अत्यन्त आकर्षक बन गई है। मुझे विश्वास है कि शीघ्र ही पूज्य गुरुदेव के वरद हस्त तले इसी प्रकार से आध्यात्मिक ज्ञान सारे भारत में फैलकर नई चेतना देगा। मैंने पूर्व में जो निवेदन किया था कि पूज्य गुरुदेव मुझे भी अपनी सेवा का अवसर दें, उसे दोहराने का इच्छुक हूं।

डी० एन० सहाय
बिक्री कर अधिकारी
गाजियाबाद

● मैंने आपकी पत्रिका पहली बार देखी तो पहले समझा कि कोई साधारण पत्रिका होगी। आजकल तंत्र एवं मंत्र को कौन इस तरह आसानी से पत्रिका में लिखकर सबको बता देगा। लेकिन जब उसमें मैंने पूज्य गुरुदेव के विषय में पढ़ा, तब समझा कि पत्रिका कैसे विद्वान के सम्पर्क में प्रकाशित हो रही है।

जयप्रकाश वहुगुणा, कुट्टीदेवी
उत्तर काशी

● **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** के गत अंकों में कहीं-कहीं मानसिक पूजा का निर्देश दिया गया है। मानसिक पूजा किस प्रकार करें, पत्रिका के अगले अंक में स्पष्ट करें।

एस० आर० मचली०, वस्तर

— सामान्य पूजन में जिन पदार्थों को वास्तविक रूप में भेंट करते हैं, वहीं मानसिक पूजन में उन्हीं को समर्पित करने की भावना मात्र की जाती है, यह क्रिया अत्यन्त उच्चकोटि के साधकों द्वारा सम्पन्न की जाती है।

— सहायक सम्पादक

● करीब दस साल पहले गुरुदेव का ज्योतिष सम्बन्धी साहित्य पढ़ा था, किन्तु जून ९३ की पत्रिका बुक स्टॉल से खरीद कर पढ़ने के बाद आपके बहुत नजदीक आ सका हूं। इसलिए पत्रिका का बहुत आभारी हूं . . . मैंने चालीस वर्षों में पहली बार सुख का अनुभव किया। ज्ञान दीक्षा, जीवन मार्ग दीक्षा एवं शक्तिपात से कुण्डलिनी जागरण के बाद मुझे अपने ज्योतिष के कार्य में अचानक लाभ होने लगा है।

दिनेश सुथार,
आणन्द, गुजरात

● मैंने आपकी **एस० सीरीज** की द्वितीय श्रृंखला की एक पुस्तक **'सौन्दर्य'** में **मेधा साधना** के बारे में पढ़ा। मैं चाहता हूं कि इस साधना को आप, अपनी मासिक पत्रिका **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** में शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित करने की कृपा करें, क्योंकि इससे विद्यार्थियों को विशेष लाभ होगा। विशेषकर स्नातक या इससे भी उच्च श्रेणी के।

शिव कुमार,
सोनभद्र

— आपका सुझाव प्रशंसनीय है, हम शीघ्र ही पूज्य गुरुदेव से इस साधना के सूत्र प्राप्त करने के उपरान्त पत्रिका में ऐसा लेख प्रकाशित करेंगे।

सहायक सम्पादक

● अगस्त का **चैतन्य विशेषांक** भगवान श्री कृष्ण से सम्बन्धित होने के कारण विविधता लिए हुए था, लेकिन योग, आयुर्वेद से सम्बन्धित जानकारियों का अभाव भी खटका। पिछली बार जिस प्रकार अगस्त अंक में अनंग रति नमस्कार का विवरण दिया था, उसी की अगली कड़ी का प्रकाशन करें।

वसन्त भाई जी० पटेल,
बलसाड़

● पत्रिका के अगस्त अंक में **डॉ० साधना** द्वारा प्रस्तुत लेख ज्ञानवर्धक बन गया है। आशा है आप पत्रिका के आगामी अंकों में भी इसी प्रकार प्रश्नावली प्रस्तुत कर पाठकों को नवीनतम जानकारी देंगे।

नरेश सिंह गहलौत,
महेन्द्रगढ़

● पत्रिका में पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा प्रकाशित भविष्यवाणियां चौंकाने वाली थीं आपने अंत में लिखा है कि - वार्तालाप इसके बाद भी चलता रहा जो संस्था की गतिविधियों पर आधारित था। क्या आप इस वार्तालाप को भी आगामी अंक में प्रकाशित कर रहे हैं। मेरा अनुरोध है कि आप इसे अवश्य प्रकाशित करें।

जे. एम. डुमासिया,
बम्बई

पत्रिका प्राप्ति के विषय में

हमारे अनेक पाठकों की शिकायत रहती है कि उन्हें पत्रिका समय पर नहीं मिल पाती अथवा नहीं मिल पायी है। हमारी जानकारी में ऐसी कई घटनाएं सामने आयी हैं कि कुछ शरारती तत्व पत्रिका को पाठक तक पहुंचने में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं। इसके लिए पत्रिका कार्यालय का समस्त पाठकों से अनुरोध है **कि वे अपने - अपने नगर की पत्रिकाएं एकत्रित रूप से मंगाएं।** इस प्रकार जहां आपको पत्रिका सुरक्षित रूप से मिल सकेगी, वहीं यह गुरु सेवा भी होगी। फिर भी यदि पाठक व्यक्तिगत रूप से पत्रिका सुरक्षित मंगाना चाहते हैं, तो वे **रजिस्टर्ड बुक पोस्ट** के माध्यम से मंगवा सकते हैं। जिसमें उन्हें प्रतिवर्ष **८५/-** का अतिरिक्त डाक व्यय देय होगा।

वर्ष १४ **अंक ९** **सितम्बर ९४**

प्रधान संपादक - नन्दकिशोर श्रीमाली

सह सम्पादक मण्डल - डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, सुभाष शर्मा, गुरुसेवक,गणेश वटाणी, नागजी भाई

संयोजक - कैलाश चन्द्र श्रीमाली, **वित्तीय सलाहकार -** अरविन्द श्रीमाली

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान , डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - ३४२००१ (राज.) ,फोन : ०२९१ - ३२२०९

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली ११००३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

सम्पादकीय
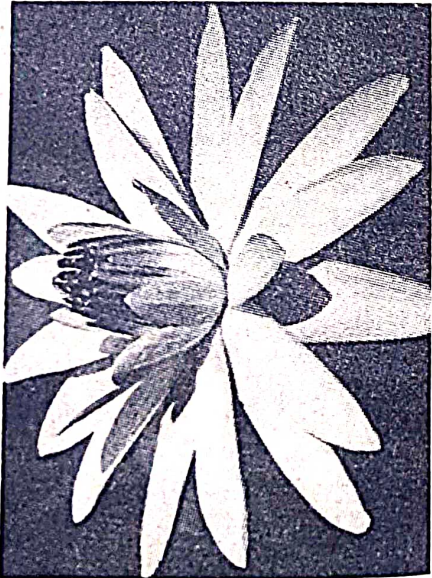
भारतीय जीवन पद्धति का मूल उत्स साधनाओं में ही छुपा है, और इसका प्रमाण है कि वर्ष का कोई भी माह किसी न किसी साधना के पक्ष से जुड़ा ही रहता है। इसी क्रम में यह आश्विन का माह दोहरी विशेषता समेटे है। इस माह का कृष्ण पक्ष जहां पितृ वर्ग के प्रति सम्मान व्यक्त करने की भावना से भरा है वहीं शुक्ल पक्ष में चिर-प्रतीक्षित नवरात्रि का पर्व आता है। हमने जीवन के इन दोनों ही मूल्यों को साधनाओं के माध्यम से समेटने की चेष्टा की है।

व्यक्ति शक्ति पर्व तभी मना सकता है, उत्सवमयता का अनुभव भी तभी कर सकता है जब उसका जीवन भय, बाधा, तनाव आदि से मुक्त हो। इसी बात को ध्यान में रख कर इस अंक में **प्रेतबाधा निवारक साधना, क्या घर भी अभिशप्त होते हैं, मृत पूर्वजों के प्रति सम्मान व्यक्त करना भी हमारा धर्म है,** जैसे लेख प्रकाशित किए जा रहे हैं, जिससे साधक जहां एक ओर दबावों से मुक्त हो सकें, वहीं पितृ ऋण से मुक्ति प्राप्त कर अपने जीवन में उन्नति प्राप्त कर सकें।

दूसरी ओर इस अंक का सर्वाधिक महत्वपूर्ण लेख है— **भगवती जगदम्बा के दुर्लभ विशिष्ट प्रयोग** जिसमें लघु प्रयोगों के माध्यम से साधकों को अनुकूलता देने के प्रबल एवं युगों से परीक्षित विवरण प्रकाशित किए गए हैं। इसके अतिरिक्त इसी अंक में शक्ति-ऐश्वर्य-सिद्धिदात्री आश्विन नवरात्रि, नवदुर्गा साधना रहस्य जैसे लेख एवं साधनाएं भी हैं, जिनसे हमारे साधक वर्ग को निश्चय ही एक विशेष प्रकार की साधनात्मक संतुष्टि प्राप्त होगी। साथ ही नवरात्रि के अवसर पर दुर्लभ प्रयोगों का वर्णन **'हाथों-हाथ लाभ प्राप्त कीजिए काम्य प्रयोग से'** लेख के अन्तर्गत् इस प्रकार से किया गया है जिससे साधक बिना किसी श्रम अथवा समय के अपव्यय के तुरन्त लाभ प्राप्त कर सके।

मंत्र विवेचन की अगली कड़ी, यात्रा संस्मरण, व्यक्तित्व को निखारने की साधना जैसे बहुविधि लेखों के माध्यम से यह **नवरात्रि विशेषांक** इस प्रकार बन गया है जिससे यह नवरात्रि सचमुच आपके जीवन में एक परिवर्तनकारी घटना सिद्ध हो।

शुभकामनाओं सहित,

आपका

नन्दकिशोर श्रीमाली

SEPTEMBER - 94
S 4 11 18 25
M 5 12 19 26
T 6 13 27
W 7 14 21 28
T 1 8 22
F 2 23
S 3 10 17 24
सदैव प्रभु पादाश्रित:

"गुरु का परिचय जगत में प्रकट होता है तो उनके ही द्वारा गढ़े गए शिष्य के रूप में. . .
– ज्यों घड़ा कुम्हार की उंगलियों का जादू खुद ही बता जाता है. . .
– उसमें भरे जल की शीतलता से कई, लोगों का कण्ठ तृप्त हो जाता है।
– वह तो आत्म कथा ही होती है अपने गुरु की – जीवित और जाग्रत।"

एक नाम जो कि बहुत पहले ही उल्लेख में आ जाना चाहिए था और जो अभी तक उल्लेख से परे रह गया वह नाम है **स्वामी विवेकानन्द** का। गुरु तत्व की चर्चा की जाए और स्वामी विवेकानन्द का नाम उल्लेख से परे रह जाए, यह सम्भव ही नहीं। आज इस आश्विन माह में उनका स्मरण करने के पीछे जो भावना है, वह सामान्य से कहीं अधिक गम्भीर और विशिष्ट है। न केवल शिष्यत्व की मर्यादा को स्पष्ट करने के रूप में उनका उल्लेख आवश्यक है, वरन् इसी आश्विन माह में उनको श्रद्धांजलि प्रदान करना भी आवश्यक है, क्योंकि यह माह है अपने पूर्वजों के स्मरण का पुण्य माह, और हमारे पूर्वज तो यथार्थ में ऐसे ही व्यक्तित्व हैं। मैं उन्हीं को तर्पण करता हूं, उन्हीं को नमन करता हूं और उससे भी अधिक उनका स्मरण करता हूं। वे शिष्यत्व की जिस प्रकार से साकार प्रतिमा बने हैं वही आने वाले युगों में भी स्थाई रहने वाली प्रतिमा है- एक ऐसी प्रतिमा जो गुरु तत्व के गौरवबोध से युक्त, शिष्य की प्रतिमा है। जो एक भक्त की या सामान्य शिष्य की प्रतिमा नहीं है, जो एक जीवित, जाग्रत, कर्मठ और सबसे वड़ी बात अपने गुरु के प्रति ललक से भरी मानवाकृति की है। मैं उनके लिए 'था' शब्द प्रयोग करने में असमर्थ हूं क्योंकि **ऐसे व्यक्तित्व भूतकाल के अंग कभी होते ही नहीं, वे सदैव वर्तमान के ही अंग होते हैं, यदि उनकी चेतना अनुभव की जा सके तो।**

मेरी कामना थी कि मैं उन्हीं के पुण्य स्मरण से पूज्यपाद गुरुदेव के विषय में चर्चा का प्रारम्भ कर सकूं, किन्तु ऐसे उदात्त व्यक्तित्व की चर्चा करते समय, उल्लेख करते समय सदैव एक झिझक मन में भर गई कि क्या हम ऐसे 'शिष्य' का उल्लेख करने के भी पात्र हैं अथवा नहीं, जिसके विषय में कभी पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा था. . . **यह इस देश का दुर्भाग्य रहा जो इसे विवेकानन्द जैसा व्यक्तित्व मात्र ३६ वर्ष के लिए ही मिला। यदि वे कुछ वर्ष और जीवित रह जाते तो आज इस देश का स्वरूप कुछ और होता।**

उनका उल्लेख करने का तात्पर्य यह नहीं है कि उनसे तुलना जैसी अहंमन्यता की जा रही है लेकिन कोई न कोई आदर्श तो सामने रखना ही पड़ता है। जबकि स्वामी विवेकानन्द की चर्चा का अर्थ है– श्री रामकृष्ण परमहंस की चर्चा, युगबोध की चेतना प्राप्त करने की चर्चा, अपने अस्तित्व को खोज लेने की चर्चा और साक्षात् गुरु तत्व की चर्चा।

ऐसे गुरुत्व के पर्याय, उसे नए ढंग से परिभाषित करने वाले, उसे गरिमा और सम्मान पूर्ण स्थान दिलाने वाले स्वामी विवेकानन्द के जीवन की ही एक घटना है, जब वे श्री रामकृष्ण परमहंस के पश्चात् मार्ग दर्शक बने (क्योंकि उन्होंने स्वयं को कभी गुरुपद पर प्रतिष्ठित माना ही नहीं) तब एक शिष्य को ध्यान के मध्य श्री रामकृष्ण परमहंस का चित्र रखे देखकर बोले बिना न रह सके – "जब तक मध्य में यह चित्र रहेगा तब तक उस तत्व से साक्षात् कैसे करोगे, जिसके लिए ध्यान की क्रिया में संयुक्त हो रहे हो?"

यदि सांसारिक दृष्टि से देखें तो यह एक प्रकार की न्यूनता और विचित्रता लगती है कि शिष्य ने अपने गुरु का चित्र ही हटा दिया, किन्तु वह व्यक्तित्व तो चेतना के उस धरातल तक पहुंच गया था जहां गुरु और ब्रह्म एक हैं, दोनों में कोई भेद है ही नहीं, फिर किसकी उपेक्षा और किसका सम्मान? लेकिन ऐसा अपने प्राणों से अनुभव करने वाले उन्हीं स्वामी विवेकानन्द ने पूरे जीवन में न कभी 'गुरु साक्षात् परंब्रह्म' का नारा लगाया, न ताली पीट-पीट कर भजन गाया, न आरती उतारी, न भक्ति को किसी प्रकार से थपथपाया, न पाला-पोसा, क्योंकि उनमें एक आग थी – अपने गुरु के मूल कार्य को पूर्णता देने की, उनकी चेतना को साकार रूप देने की, उनके वचनों को यथावत् पालन कराने की, उसे सारे संसार में पहुंचाने की, छोटे से छोटे स्थान पर भी अपने गुरु के प्रतीक रूप में केन्द्र खोलने की और जब अपनी अल्पायु में ही उन्होंने इन कार्यों को पूर्णता दे दी तो अंत में विनम्र होकर बस इतना ही कहा. . . **मेरे गुरु के द्वारा जिस महासेतु का निर्माण प्रारम्भ हुआ था , मैंने उसमें भगवान श्री राम के सेतु निर्माण के समय की उस**

गिलहरी जितना ही सहयोग दिया है, जो अपनी मुट्ठी में कुछ बालू के कण भर कर लाई थी। और फिर वह दिव्य आत्मा सदा-सदा के लिए उस आलोक में खो गई, जिसका पुंजीभूत स्वरूप बनकर आई थी।

यही गुरु के प्रति प्रेम है, जो ओठों से नहीं आन्तरिकता से स्पष्ट होता है, जहां शिष्य बिना बोले अथवा बहुत कम बोले ही अपने-आप को स्पष्ट कर देता है। स्वामी विवेकानन्द का सारा साहित्य, सारा चिन्तन और सारा जीवन - दर्शन मुड़ गया है उस तथ्य की ओर जिसे 'मानवता' कहा जाता है, उस चेतना की ओर जिसे 'करुणा' कहा जाता है , और बिना अपने गुरु का नाम रटे, कदम-कदम पर **श्री रामकृष्ण** का नाम उछाले बिना, जब वे दो शब्दों में ही अपनी आन्तरिकता व्यक्त करते हैं तब जैसे सारा शिष्यत्व एक नया आयाम पा जाता है। सब कुछ करते हुए भी, चेतनावान और गतिशील बनते हुए भी जब वे अंत में कहते हैं **सदैव प्रभु पादाश्रितः** तब उनके भीगे हुए हृदय का परिचय मिल जाता है ।

—और जो गुरु से वास्तव में प्रेम करते हैं, जो गुरु के प्राणों से एकरस होते हैं, वे दो शब्दों में ही अपनी बात कहते हैं , क्योंकि आगे के शब्द कहने से पूर्व ही उनका गला रुंध जाता है। यदि मुझसे पूछा जाए कि भारतीय आध्यात्मिक साहित्य के सबसे सुन्दर शब्द कौन-से हैं, तो मैं निःसंकोच इन्हीं दो शब्दों को कहूंगा, इसी भावभूमि को कहूंगा, जहां शिष्य ने अपने गुरु से सब कुछ प्राप्त कर लिया है, **'अहं ब्रह्मास्मि'** की चेतना पर खड़ा है किन्तु फिर भी निस्पृह है। यही भेद भक्त और साधक का है। साधक सब कुछ प्राप्त करते हुए भी निस्पृह रहता है और भक्त कदाचित कुछ भी न प्राप्त करते हुए बहुत ज्यादा अहं बोध में रहता है।

जब गुरु चर्चा हो तब दो भावभूमियां स्वतः ही सामने आकर खड़ी हो जाती हैं— साधक की और भक्त की, और निश्चय ही दोनों अपने-आप में मार्ग हैं ही। भक्त के अपने तर्क हैं और साधक के अपने तर्क, साधक के अपने अहं बोध हैं तो भक्त के भी अहं बोध कम नहीं होते। फिर क्या है जो इनमें भेद कर सकें और किस पथ को ग्रहण करके चल सकें, यह प्रश्न जिज्ञासु के समक्ष शेष रह ही जाता है, जबकि पहुंचना है दोनों को एक ही लक्ष्य पर। होता यह है कि साधक का पथ कुछ तीखा और खनक भरा होता है, जबकि भक्त का पथ एक दिनचर्या से अधिक कुछ नहीं होता है क्योंकि साधक एक ही आयाम पर टिक नहीं पाता और सर्वत्र उसी एक सत्ता के दर्शन करता हुआ, स्वयं अपने-आप में उसी विराट को खोजकर प्राप्त करता हुआ, तृप्त व पूर्ण मानता है, भक्त का लक्ष्य एक बिम्ब के दर्शन से अधिक कुछ नहीं होता, एक कलेण्डर में बने चित्र को पूजने से अधिक कुछ नहीं होता। कृष्ण कैसे थे यह उसे नहीं पता लेकिन बरसों से जो कलेण्डर बिक रहे हैं, वही उसके कृष्ण होते हैं। साधक कृष्ण की पूजा नहीं करता, साधक उस तत्व की पूजा करता है जिसके कारण कृष्ण जगद्गुरु कहलाए।

यह नहीं कि साधक के अन्दर भक्ति का अंश नहीं होता, यह अवश्य होता है कि वह उसका प्रदर्शन करना नहीं जानता। वह निरन्तर 'एक' के बोध में रहता हुआ स्वयं को अपने इष्ट से, अपने गुरु से अभिन्न ही मानता है, और वृहद अर्थों को लिए हुए गतिशील रहता है। जब उसका कार्य समाप्त हो जाता है, जब इस जीवन के रंगमंच पर उसकी भूमिका समाप्त हो जाती है, तब वह बिना किसी मोह अथवा लाग लपेट के अपनी सारी वेशभूषा उतार कर उस अनंत पथ पर चला जाता है, जिसका वह पथिक होता है। भक्त जिस बात को पूरे जीवन भर नाच-गाकर, चीख-पुकार कर कहता है, साधक उसी बात को अंत में अश्रुपूरित नयनों से मौन व्यक्त कर अपने-आप को समेट लेता है। **यही आत्मबोध है अपने अस्तित्व को शून्य मानना और शून्य मानते हुए भी सर्वत्र व्याप्त मानना ही साधक का लक्षण है।**

यहीं पर मुझे पुनः स्वामी विवेकानन्द की बात दोहराने की इच्छा होती है, जहां उन्होंने कहा है कि — मैं एक मस्जिद में जाऊंगा, वहां अपने मुसलमान भाइयों के साथ सजदा करूंगा और नमाज भी पढूंगा। बौद्ध मंदिर में जाकर उनके ढंग से प्रार्थना करूंगा, हिन्दुओं की सभाओं में भाग लूंगा, और ईसाइयों के चर्च में जाकर उन्हीं की तरह घुटना टेककर प्रभु यीशू मसीह से प्रार्थना करूंगा। मैं जीवन की एक विशाल पुस्तक पढ़ रहा हूं, जिसके किसी पन्ने पर बौद्ध धर्म लिखा है, किसी पन्ने पर मुस्लिम धर्म, कहीं हिन्दू धर्म और कहीं ईसाई धर्म और जब यह पुस्तक पूरी हो जाएगी, तब मैं **अपने घर** चला जाऊंगा।

मुझे मेरे गुरुदेव ने ऐसा ही बोध दिया है, उन्होंने व्यष्टि के रूप में तो मेरा परिचय मुझसे कराया ही है, समष्टि के रूप में भी उन्होंने मुझे मेरे आयामों से परिचित कराया है। उनकी समष्टि की सीमा केवल एक देश अथवा धर्म तक ही व्यापक नहीं है और न उनके पास धर्म-निरपेक्षता या अन्तर्राष्ट्रीय बन्धुत्व जैसी बातें हैं, किन्तु उनके द्वारा करवाया गया व्यापकता का परिचय ही सही में मेरा गुरुत्व बोध है। **उन्होंने अपनी चेतना से मुझे ऐसा ही प्रदान किया है। आघात करने का ढंग सिखाया है और प्रेम करने की शैली भी दी है।** ब्रह्म तत्व से भी परिचय कराया है तो ब्रह्म तत्व की व्यापकता को भी दृष्टि में लाए हैं। साधनाएं दी हैं तो साधनाओं से परे जाकर जीवन के मूल आनन्द की ओर उन्मुख होना भी सिखाया है। एकांत में ध्यान में लीन होने की शैली दी है तो सभी के मध्य रहने की आज्ञा भी दी है।

यह तो मैंने केवल अपना ही पक्ष वर्णित किया है, किन्तु मैंने खुली आंखों से देखा कि किस प्रकार से पल - पल में सामने वाले व्यक्ति की भावनाओं के अनुरूप बदलते रहते हैं, और उनके इस बदलाव के प्रति उनके शिष्यों का आचरण भी देखा है। **हर व्यक्ति उन्हें अपनी ही कसौटी पर कसना चाहता है, हर व्यक्ति उनसे एक प्रकार से अपने ही ढंग से मनोरंजन करना चाहता है। इस व्यक्तित्व के हृदय में क्या है, इसकी क्या भावना और वेदना है, उसे किसी ने भी समझने तक का ही प्रयास नहीं किया, उसे ज्यों का त्यों जीवन में उतारने की बात तो बहुत दूर।** यह एक कटु सत्य है कि हमें गुरु की अपेक्षा नहीं है वरन एक अदद् ऐसे भगवान की आवश्यकता है जिसे सामने स्थापित कर, उसकी आरती कर, अपने - आप की पीठ खुद थपथपा कर, अपने नित्य के जीवन को ज्यों का त्यों जीते रहें, जबकि जीवित गुरु तो इसी पर आघात करने के लिए आते हैं। उनके लक्ष्य तो कुछ और ही होते हैं।

कब तक बस पूजते रहेंगे हम उस व्यक्तित्व को, जो हृदय में समाने को तैयार है, कब तक उसको बांधने का प्रयास करते रहेंगे, जो सभी सीमाओं को तोड़ने के लिए व्यग्र है, और कब तक अपने मन की एक छवि को उसमें देखते हुए अपने ही ढंग से, एक प्रकार से मनोरंजन करते रहेंगे, यह बात आज मुझे मथ कर रख दे रही है। **गुरुदेव का परिचय कितना सीमित कर दिया है उन्हीं के शिष्यों ने, उन्हीं के भक्तों ने– यह बात वेदना दे ही रही है।**

कितनों ने सुना है इस व्यक्तित्व का स्वर, जो मूल स्वर है, जो पूज्य गुरुदेव की मूल चेतना है, जो उनकी व्यग्रता और तड़फ है, मैं इसी से अनुभूतियों की चर्चा नहीं कर पाता। यदि संस्मरण का तात्पर्य अनुभूतियों की चर्चा मात्र होता हो, तो इस अर्थ में वर्णन करने में मैं असफल हूं। अनुभूतियों की चर्चा तो प्रत्येक साधक, शिष्य के कदम-कदम पर होती ही रहती है, किन्तु क्या गुरु से सम्बन्ध मात्र इतना ही होता है? कुछ भौतिक समस्याओं का निदान प्राप्त कर लेना, थोड़ी सी अनुभूतियां लेकर एक तरह की गुदगुदी में भीग जाना, इतना ही अर्थ कर दिया गया है एक प्रज्ञा पुरुष पूज्यपाद गुरुदेव का। आश्चर्य है जिस व्यक्तित्व ने सदैव भक्ति पर आघात किया उसी के प्रति भक्ति प्रदर्शित करके उनके शिष्य अपने-आप को कितना धन्य अनुभव कर रहे हैं। जिसे मंच और नारों से सबसे अधिक घृणा रही उन्हीं **डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली जी** को मंच पर बैठाने और चीख-चीख कर जय-जयकार लगाने और लगवाने में अपने जीवन की उपलब्धि मान रहे हैं।

गुरु के प्रति प्रेम, गुरु के प्रति जीवन का समर्पण इस तरह से नहीं होता। गुरु की वास्तविक तृप्ति तो वहां है जहां उनका शिष्य स्वयं गुरु तत्व को समझता हुआ उदात्तता की ओर अग्रसर होता है। गुरु को समझना और प्राप्त करना तो फिर भी बहुत आगे की क्रिया है, पहले हम **स्वामी विवेकानन्द** को ही समझ लें, उन्हें अपने जीवन में उतार लें, फिर गुरु तत्व हमसे दूर नहीं है– वह गुरु तत्व जो आज हम सभी के समक्ष **डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली जी** के रूप में खड़ा है, जो **परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी** का आवरण स्वरूप है, जो आत्मीय स्वरूप है।

मेरे गुरुदेव का स्वरूप!

– योगी नित्यानन्द

प्रखर शक्ति स्वरूपा नवदुर्गा साधना रहस्य

वर्ष की दो प्रकट नवरात्रियों में से आश्विन नवरात्रि ही वास्तविक रूप से शक्ति साधना का उचित अवसर मानी गई है, जबकि चैत्र नवरात्रि (वासन्तीय नवरात्रि) तो महोत्सव की भावना समेटे है।

प्रस्तुत है इसी चैतन्य मुहूर्त पर शक्ति के सर्वाधिक प्रखर स्वरूप नवदुर्गा की साधना एवं साधना रहस्य. . . .

मातृ-शक्ति की उपासना मूलतः भारत की ही सम्पूर्ण विश्व को देन है और प्रत्येक चिन्तनशील सम्प्रदाय मातृशक्ति की पूजा अपने ढंग से करता है। इसके पीछे भावनात्मक रूप से नारी जाति के प्रति सम्मान की भावना तो है ही, साथ ही स्त्री पूजन या मातृ शक्ति-पूजन के द्वारा ही साधना जगत के गूढ़तम रहस्य भी प्राप्त किए जा सकते हैं। **तंत्र की पूरी की पूरी पद्धति मातृ-शक्ति की आराधना पर ही तो आधारित है।** यूं भी यदि सामान्य रूप से देखें तो इस बात को मां से अधिक उचित कोई भी नहीं जानता कि उस की संतान को कब और किस वस्तु की आवश्यकता सबसे अधिक है। संतान एक वार अपना कष्ट बताने में असमर्थ भी हो सकती है किन्तु मां की दृष्टि से संतान का कोई भी कष्ट अदृश्य रह ही नहीं सकता और उसके पास प्रत्येक स्थिति के लिए अलग-अलग उपाय भी होते हैं। वह जानती है कि कब और कैसे अपनी संतान को प्रसन्नता दी जा सकती है। यही साधना जगत में भी घ्यव्हत होने वाली बात है, क्योंकि साधक तो एक स्तर तक ही अपने बल से चल पाता है, आगे शक्ति ही तो उसका हाथ पकड़ कर मार्ग पूरा कराती है।

जब भी मातृ- शक्ति की बात आती है, उसकी उपासना और साधना की चर्चा होती है, तब स्वतः ही किसी भी शक्ति उपासक के नेत्रों व हृदय में अत्यन्त आह्लाद के साथ मां भगवती दुर्गा का मनोहारी बिम्ब आकर छा जाता है, उसके ओंठो पर मां भगवती दुर्गा का ही नाम अत्यन्त मधुरता से थिरक उठता है, और वह अत्यन्त व्यग्रता से नवरात्रि के उस पर्व की प्रतीक्षा करने लगता है जिसके एक-एक शक्तिमय दिन को सार्थक कर सके, भीग सके और दुर्गामय हो सके।

मां भगवती जगदम्बा की तो अनेक प्रकार से उपासना सम्भव है, दस महाविद्या, त्रिगुणात्मिका स्वरूप में महालक्ष्मी, महाकाली एवं महासरस्वती स्वरूप, किन्तु मां भगवती दुर्गा की साधना किए बिना साधक का हृदय तृप्त नहीं हो पाता है। उसके पीछे यही रहस्य है कि मां भगवती जगदम्बा के दुर्गा स्वरूप के अतिरिक्त कोई ऐसा दूसरा स्वरूप है ही नहीं जो इस प्रकार से करुणा, मातृत्व और दुर्गति के नाश हेतु तीव्रबल एक साथ संजोये हो। उग्रता एवं मृदुता की समन्वित मूर्ति का ही नाम है दुर्गा, जो अपने भक्तों की दुर्गति का नाश करने के लिए सदैव तत्पर रहती ही है।

किन्तु मां भगवती दुर्गा का परिचय केवल यहीं तक सीमित नहीं है, अपितु उनका रहस्य तो अत्यन्त गम्भीर व जटिल है। केवल दुर्गा कहकर या इसी स्वरूप में चिन्तन कर उनका सम्पूर्ण रहस्य समझ पाना कठिन ही है, इसके स्थान पर यदि इनके नवदुर्गा स्वरूपों का अवलोकन करें तब इनकी विशालता की हल्की सी झलक दिखाई देती है। भगवती दुर्गा के ये नौ स्वरूप हैं – **शैल पुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी,**

कालरात्रि, महागौरी एवं **सिद्धिदात्री।** इन नव विशिष्ट स्वरूपों का शास्त्रों में जिस प्रकार वर्णन मिलता है उनके अनुसार **प्रथम दुर्गा शैल पुत्री** वास्तव में भगवान शिव की पत्नी पार्वती है जो पूर्व जन्म में सती के नाम से विख्यात थी एवं जिन्होंने अपने पिता द्वारा अपने पति शिव का अपमान किए जाने के कारण यज्ञ कुंड में प्राण त्याग दिए थे। **दूसरी दुर्गा ब्रह्मचारिणी** अपने उग्र तप के कारण, ब्रह्म का आचरण करने वाली ब्रह्मचारिणी कहलाई। **तृतीय दुर्गा चंद्रघंटा** उग्रस्वरूपा एवं दुष्टों का संहार करने को तत्पर देवी है जबकि **चतुर्थ दुर्गा कूष्माण्डा** अपने भ्रू विलास से ही समस्त ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करने में समर्थ है। **पंचम दुर्गा स्कन्दमाता** देवताओं के भी सेनापति भगवान स्कन्द (कार्तिकेय) की माता होने के कारण इस संज्ञा से विभूषित हुई। **छठी दुर्गा की संज्ञा कात्यायनी** है जो कात्यायन ऋषि की तपस्या के कारण उनके घर पुत्री रूप में अवतरित होने के कारण इस नाम से जानी गई और जिनका स्वरूप अत्यन्त दिव्य व स्वर्णिम वर्णित किया गया है। **सातवीं दुर्गा की संज्ञा कालरात्रि** है जो विकराल स्वरूपा और संहार करने को तत्पर विशिष्ट शक्ति है। **महा गौरी** की संज्ञा से विभूषित **अष्टम् दुर्गा** वास्तव में **महालक्ष्मी** ही है एवं **नवम दुर्गा सिद्धि दात्री** परालौकिक विद्याओं की आश्रय- स्थला एवं प्रदात्री है, समस्त अठारह सिद्धियां यथा अणिमा, लघिमा, दूर श्रवण आदि इन्हीं की कृपा से साधक को प्राप्त हो पाती है।

यहां नवदुर्गा का संक्षेप में वर्णन करने से तात्पर्य मात्र इतना ही है कि जब साधक का चिन्तन व्यापक होता है तभी उसकी धारणा शक्ति में भी पुष्टता आती है। धारणा शक्ति में पुष्टता के द्वारा ही साधना में सफलता अत्यन्त सन्निकट हो जाती है, अतः इस वर्ष जब दुर्गा साधना में प्रवृत्त हों तो भगवती दुर्गा का सामान्य चिन्तन न करके उनके इसी नवदुर्गा स्वरूप का चिन्तन करें, और साधना व मंत्र-जप में तल्लीन हों।

कलियुग में मां भगवती दुर्गा की साधना को गणपति साधना के साथ-साथ प्रमुखता प्रदान की गई और इसका अर्थ यही है कि जहां अन्य साधनाएं किसी विशेष उद्देश्य हेतु सम्पन्न की जा सकती हैं, वहीं ये दोनों साधनाएं किसी भी समस्या के निदान अथवा मनोवांछा की पूर्ति के लिए सम्पन्न की जा सकती हैं। इनमें से भी दुर्गा- साधना मातृशक्ति की साधना होने के कारण और भी अधिक उपयोगी है। जिस प्रकार एक बालक अपनी मां से अपना हर कष्ट अथवा संकट निःसंकोच कह सकता है, वही दुर्गा साधना का मर्म है तथा इसकी पूर्णता नवदुर्गा साधना से होती है।

इस वर्ष की आश्विन नवरात्रि के शक्तिमय पर्व को ध्यान में रखकर इसी कारणवश नवदुर्गा की साधना प्रस्तुत की जा रही है, जिससे साधक को नवरात्रि के अल्पकाल में ही समस्त प्रकार के सुख-सौभाग्य मां भगवती दुर्गा की तेजस्विता से प्राप्त हो सके।

नवदुर्गा साधना अपने मूलरूप में अत्यन्त सरल साधना है, और इससे जुड़े विशिष्ट प्रयोगों को सम्पन्न करते हुए साधक इस आश्विन नवरात्रि में निश्चय ही परिवर्तन अनुभव कर सकता है। साधकों को चाहिए कि वे काफी समय पूर्व से इस सम्बन्ध में अपने मानस को स्थिर कर, साधना हेतु दृढ़ संकल्प कर आवश्यक यंत्र आदि की व्यवस्था कर लें। इस साधना में मूलयंत्र तो **नवदुर्गा यंत्र** एवं **खड्ग माला** ही है, जबकि इससे जुड़े विशिष्ट प्रयोगों में कुछ अतिरिक्त सामग्री की भी व्यवस्था करनी होती है।

नवदुर्गा यंत्र ताम्रपत्र पर अंकित एक विशेष प्रकार का यंत्र होता है जिसमें भगवती दुर्गा के एक-एक स्वरूप का स्थापन पूर्ण प्रामाणिकता के साथ किया जाता है। ऐसे श्रेष्ठ यंत्र को प्राप्त कर साधक इस नवरात्रि के किसी भी दिन प्रातः साधना में बैठे, उसके वस्त्र, आसन आदि सभी शुद्ध एवं श्वेत हो और उचित होगा कि आसन, वस्त्र नए ही हों। दिशा पूर्व या उत्तर हो सकती है। अपने समक्ष **भगवती दुर्गा के प्राण-प्रतिष्ठित चित्र** एवं नवदुर्गा यंत्र को स्थापित कर उसका केसर, अक्षत, पुष्प, घी के दीपक, नैवेद्य एवं अगरबत्ती से पूजन कर निम्न प्रकार मंत्र उच्चरित करते हुए एक आचमनी जल चढ़ाएं।

पूजन मंत्र

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।।

इसके उपरान्त नवदुर्गा के प्रतीक रूप में **नौ तांत्रोक्त फल** समस्त नवदुर्गा का नाम उच्चरित कर यंत्र के चारों ओर स्थापित करें। इनका पूजन केवल सिन्दूर से करें तथा इनके लिए एक घी का दीपक संयुक्त रूप से प्रज्ज्वलित करें। इसके उपरान्त **खड्ग माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करें-

नवदुर्गा मंत्र

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

मंत्र-जप के उपरान्त देवी से अपनी समस्त त्रुटियों की क्षमा प्रार्थना करें तथा **'क्षमस्व परमेश्वरी'** ऐसा बोलकर

अपना स्थान छोड़ सकते हैं।

यह साधना ७/१०/६४ से १२/१०/६४ के मध्य कभी भी सम्पन्न की जा सकती है। यदि साधक इसे विशेष रूप से दुर्गा अष्टमी के सिद्ध मुहूर्त पर ही सम्पन्न करना चाहे तो यह **अष्टमी तिथि १२/१०/६४** को पड़ रही है।

इसके उपरान्त शेष दिवस उत्सव की भांति प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करें, अपने परिवार के संग सामूहिक रूप से भोज बनाकर ग्रहण करें और यदि सम्भव हो तो किसी आठ वर्ष से कम आयु की बालिका को सम्मान पूर्वक भोजन कराकर वस्त्र, दक्षिणा के साथ सन्तुष्ट करें। साधना के उपरान्त यंत्र, माला, चित्र सभी को संभाल कर रख लें।

यद्यपि नवदुर्गा की साधना अपने-आप में सम्पूर्ण साधना है किन्तु कुछ समस्याएं ऐसी भी होती हैं जिनके शीघ्र समाधान के लिए साधक को पृथक साधना करने की आवश्यकता शेष रह जाती है। जिस दिन साधक उपरोक्त नवदुर्गा साधना सम्पन्न करें उसी दिन अपनी इच्छा एवं रुचि के अनुकूल कुछ अन्य प्रयोग भी सम्पन्न कर सकते हैं। **मूल नवदुर्गा साधना के मंत्र-जप से उन्हें जो विशेष ऊर्जा प्राप्त होती है, उसके द्वारा सहज ही किसी अन्य साधना में भी लाभ प्राप्त कर सकते हैं।**

मैं मूल नवदुर्गा प्रयोग के साथ सम्पन्न किए जाने वाले कुछ ऐसे ही विशिष्ट प्रयोग वर्णित कर रहा हूं।

१. आकस्मिक धन-प्राप्ति हेतु

साधक को चाहिए कि वह ताम्रपत्र पर अंकित मंत्र सिद्ध **आकस्मिक धन-प्राप्ति यंत्र** की व्यवस्था कर, उसे भी नवदुर्गा यंत्र के बगल में स्थापित कर, **सफेद हकीक माला** के द्वारा निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करें।

मंत्र

ॐ ह्रीं धनप्रदायै फट्

२. साधनाओं में सिद्धि हेतु

यदि स्पष्ट कहा जाए तो नवरात्रि का पर्व ही एक ऐसा पर्व होता है जबकि साधक अपने मन की इच्छाओं की पूर्ति के लिए मां भगवती दुर्गा की साधना जैसा उचित अवसर प्राप्त करता है, और इस अवसर को चूकने का तात्पर्य है कि पूरे एक वर्ष बाद ही ऐसे दुर्लभ संयोग को प्राप्त किया जा सकता है। कोई आवश्यक नहीं कि उस समय आपको इस साधना से सम्बन्धित सामग्री मिल पाए अथवा न मिल पाए। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु जिस विशिष्ट यंत्र का अंकन ताम्र पत्र पर किया जाता है तथा जिसे कात्यायनी मंत्रों से सिद्ध किया गया है, वह है **सर्वकार्य सिद्धि यंत्र।** इसे नवदुर्गा यंत्र के बगल में स्थापित कर **हकीक माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करना ही पर्याप्त माना गया है।

मंत्र

ॐ श्रीं अं कं हं सिद्धि हं कं अं फट्

३. पूर्ण वैभव एवं ऐश्वर्य प्राप्ति हेतु

जैसा कि प्रारम्भ में कहा गया है कि नवदुर्गाओं में से एक दुर्गा महागौरी, लक्ष्मी स्वरूपा है, उसी आधार पर यदि साधक नवदुर्गा साधना सम्पन्न कर पूर्ण वैभव एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए गतिशील होता है, तो उसे निश्चय ही इस काल में **'कुछ विशेष'** की प्राप्ति होती ही है। इसके लिए जिस यंत्र का वर्णन शास्त्रोचित माना गया है, वह है महागौरी के मंत्रों से सिद्ध ताम्रपत्र पर अंकित **लक्ष्मी जगदम्बा सिद्धि यंत्र।** इस साधना से सम्बन्धित मंत्र का जप **शुद्ध स्फटिक की माला** से करने का विधान है।

मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं ऐश्वर्यै ह्रीं ह्रीं

४. नवदुर्गा की स्थापना हेतु

जिनकी इष्ट भगवती दुर्गा हों उन्हें चाहिए कि वे **पारदेश्वरी दुर्गा** के रूप में, नवदुर्गा का स्थापन अपने घर में इसी नवरात्रि के पर्व में करें। पारद निर्मित पारदेश्वरी के ऊपर भविष्य में अनेक साधनाएं सम्पन्न की जा सकती हैं। यूं भी शक्ति की चैतन्य स्वरूपा मां भगवती दुर्गा का इस रूप में घर में स्थापन करना सौभाग्य ही है। इच्छुक साधकों को चाहिए कि वे ऐसे दुर्लभ विग्रह को प्राप्त कर नवरात्रि के काल में प्रतिदिन **खड्ग माला** से निम्न मंत्र की एक अथवा ११ माला का मंत्र-जप करें।

मंत्र

ॐ दुं दुर्गायै नमः

उपरोक्त मंत्र का नवरात्रि में सतत मंत्र-जप से साधक के प्राणों का सम्बन्ध पारदेश्वरी दुर्गा से हो जाता है, जिसका उसे भविष्य में भी लाभ मिलता रहता है। जिस खड्ग माला से उपरोक्त जप करें उस माला को अपने गले में धारण कर लें और भविष्य में जब भी अवसर मिले शुद्धता पूर्वक इसी मंत्र का जप पुनः कर लिया करें। यह अपने-आप में उच्चकोटि की नवदुर्गा साधना है।

यह सभी प्रयोग अनुभूत एवं कसौटी पर खरे उतरे हुए प्रयोग हैं। आकस्मिक धन-प्राप्ति हेतु, साधनाओं में सिद्धि हेतु, जो लघु प्रयोग दिए गए हैं उनमें प्रयोग की पूर्णता के उपरान्त समस्त सामग्री वस्त्र में बांध कर विसर्जित कर दें।

मंत्रों से असाध्य पीड़ा निवारण भी सम्भव है

यूं तो मंत्र, वर्णमाला के अक्षरों का एक समूह ही होता है, किन्तु प्रत्येक मंत्र में एक विशेष ध्वनि, लय और उच्चारण होता है, जिससे वह शब्दों का समूह मात्र न रहकर मंत्र के रूप में साक्षात् देवतुल्य, वन्दनीय और उल्लेखनीय बन जाता है। मंत्र के इन प्रारम्भिक पक्षों को हमने पत्रिका के पिछले अंक में भली-भांति प्रस्तुत किया था, जिसका तात्पर्य था कि जब तक मंत्र का भावार्थ एवं मंत्र की लय नहीं समझी जाती तब तक उसका साधना से सही रूप में सम्बन्ध नहीं हो पाता। **मंत्र और साधना दोनों एक-दूसरे की पूरक हैं।** साधना का तात्पर्य क्रिया और विज्ञान का यह सिद्धांत है कि — प्रत्येक क्रिया की एक निश्चित प्रतिक्रिया होती है। साधना में जो प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है , वही साधना की सफलता या साधना का फल कही जा सकती है। मंत्र इसी क्रिया को सम्पादित करने की मुख्य प्रेरक शक्ति है। साधना में शक्ति की जागृति, शक्ति तत्व का स्फुरण मंत्र के घर्षण से ही होता है अर्थात् जब साधक एक विशेष विधि से मनन पूर्वक अक्षरों का घर्षण करता है तभी ऊर्जा का स्फुटन होकर सम्बन्धित साधना के रूप में गतिशील होता है और **यह क्रिया प्रत्येक साधना के साथ अलग-अलग ढंग से होती है, किन्तु इसके मूल में जो रहस्य छिपा है वह एक ही है अर्थात् मंत्र-जप।**

जिज्ञासु पाठक के मन में यह विचार उत्पन्न होता है कि जिस प्रकार साधना के प्रति मंत्र एक उत्प्रेरक शक्ति का कार्य करता है, उसी प्रकार स्वयं मंत्र के लिए क्या क्रियाएं आवश्यक होती हैं? क्या मंत्र स्वतः शक्ति युक्त होते हैं, जिनके उच्चारण मात्र से साधना में सफलता मिल जाती है अथवा कुछ अन्य सहयोगी क्रियाएं भी आवश्यक

साधना का आधार होता है मंत्र, और प्रत्येक साधना में मंत्र-जप करता हुआ साधक मंत्र के वास्तविक तात्पर्य को समझने की चेष्टा भी करता रहता है। इसी बात को ध्यान में रखकर हमने पिछले माह ''मंत्र प्रामाणिक कैसे हो?'' लेख प्रकाशित किया था। प्रस्तुत है इसी विषय से सम्बन्धित, मंत्र-विज्ञान के विस्तृत क्षेत्र को प्रस्तुत करता एक अन्य आकलन. . .

होती हैं? मंत्र-जप से सम्बन्धित यह प्रश्न सर्वाधिक महत्वपूर्ण है और हम इस लेख में इसी प्रश्न पर विचार-विमर्श कर रहे हैं।

यह सत्य है कि प्रत्येक मंत्र अपने-आप में शक्ति होता है, क्योंकि वह किसी ऋषि अथवा उच्चकोटि के योगी के प्राणों से मंथन करके निकला होता है, किन्तु उसका प्रभाव साधक को भी यथोचित रूप में मिल सके, इसके लिए सहयोगी क्रियाएं भी आवश्यक होती हैं। मंत्र में मनन, विज्ञान, अध्ययन और भाव का जो महत्व है उसकी विवेचना हम पिछले अंक में भली-भांति कर चुके हैं। यहां उसका संक्षेप में पुनः वर्णन कर रहे हैं, जिसके अनुसार मंत्र के उच्चरित शब्द मन से होते हुए जब मस्तिष्क में ज्ञान और तत्व को जाग्रत करते हैं, तभी शक्ति के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। **इस प्रकार से सिद्ध होता है कि मंत्र का मुख्य केन्द्र मन होता है। इसी मन तत्व पर भली-भांति नियंत्रण स्थापित कर साधक मंत्र-जप में सफलता प्राप्त कर सकता है। शास्त्रों में ऐसे १२ तत्वों का विवेचन किया गया है, जिनके द्वारा साधक मंत्र-जप में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते हैं, ये १२ तत्व अथवा १२ क्रियाएं हैं– १. श्रद्धा, २. पूर्ण भावना, ३. दृढ़ संकल्प, ४. एकाग्रता, ५. प्राणायाम, ६. ध्यान एवं तपस्या, ७. मंत्र के अर्थ का मनन, ८. आसन, ६. दिशा, १०. साधना स्थल, ११. मौन एवं १२. संयम।**

इनमें से प्रथम तत्व है 'श्रद्धा'। मंत्र-जप में श्रद्धा एक ऐसा तत्व है, जो न केवल मंत्र के प्रति वरन् मंत्र के प्रदाता गुरु के प्रति, अपने इष्ट के प्रति और स्वयं अपने प्रति भी होनी आवश्यक होती है। सन्देह की स्थिति में, अविश्वास के वातावरण में मंत्र साधना का प्रारम्भ हो ही नहीं सकता है। जिस प्रकार श्रद्धा एक आवश्यक तत्व है, उसी प्रकार 'भावना' भी दूसरा आवश्यक तत्व है। भावना के ही द्वारा व्यक्ति अपने मन में आशा अथवा निराशा का वातावरण प्रवल कर सकता है। भावना के आधार पर वह अपने मन को इस प्रकार चैतन्य कर सकता है, जिससे वह सकारात्मक दृष्टि से चिंतनशील हो। तृतीय तत्व है 'दृढ़ संकल्प', जिसे व्यक्ति की इच्छा-शक्ति के नाम से भी जाना जाता है। प्रत्येक व्यक्ति में थोड़ी या कम इच्छा-शक्ति होती अवश्य है। कोई भी व्यक्ति इच्छा-शक्ति से सर्वथा रहित नहीं होता है। अन्तर केवल इतना ही होता है कि जो इसका सदुपयोग कर लेता है, वह दृढ़ संकल्प भी कर लेता है और यही दृढ़ संकल्प साधना का आधार है। **इसी कारणवश प्रत्येक साधना के प्रारम्भ में हाथ में जल लेकर संकल्प लेने का विधान रखा गया है।** एक साधक के रूप में इसको यूं समझा जा सकता है कि प्रारम्भिक असफलताओं से बिना विचलित हुए जो व्यक्ति अपने निश्चय पर अडिग रहता है, वही आगे चलकर मंत्र साधना में सफलता प्राप्त करता है।

चतुर्थ तत्व 'एकाग्रता' का तात्पर्य, बाहरी मन की भटकन को रोककर उसका सम्बन्ध अन्तःमन से करने का है। जब मंत्र-जप करें तो मन में न आवेश हो, न उत्तेजना, न दुःख केवल एक शांत व साक्षीभाव हो और इसके लिए आवश्यक है कि साधक जब अपनी साधना में बैठे, केवल तभी इसका अभ्यास न करे। वस्तुतः इसका अभ्यास तो सामाजिक जीवन में रहते हुए, चलते-फिरते ही अधिक किया जा सकता है क्योंकि जब आप समाज के कोलाहल में शांत रहना सीख जाएंगे तब साधना के क्षणों में अपने-आप को और भी अधिक सुगमता से एकाग्र कर सकेंगे। **जिस क्षण ऐसा हो जाता है उस क्षण आन्तरिक शक्ति का स्पर्श व्यक्ति के मन को मिलने लगता है, और तब मंत्र-जप में सफलता अवश्यम्भावी ही हो जाती है।**

ध्यान और तपस्या का तात्पर्य है किसी एक विशेष बिन्दु पर अपनी शक्तियों को केन्द्रित कर देना। यह एकाग्रता का उच्चतम सोपान है। एकाग्रता में तो केवल हम अपने मन को बाह्य परिवेश से काटते हैं, जबकि ध्यान व तपस्या की क्रिया में अपनी समस्त शक्तियों को जाग्रत करते हुए उसे किसी एक विशेष बिन्दु पर केन्द्रित कर देते हैं। मंत्र-जप में भी तो यही करना होता है। जिस देवता की साधना हम कर रहे हैं, उसके प्रति भी तो अपना ध्यान ही केन्द्रित करना होता है।

पांचवें तथ्य 'प्राणायाम' की क्रिया एक ऐसी क्रिया है, जिसके द्वारा मन तो नियन्त्रण में आता ही है, साथ ही प्राण शक्ति का जागरण भी सम्भव होता ही है। प्राण शक्ति के जागरण से ही मंत्रों की मूल ऊर्जा चैतन्य हो उठती है क्योंकि मंत्र मूलरूप में ऋषियों की प्राण ऊर्जा के ही तो प्रत्यक्ष स्वरूप हैं। अतः यदि ऐसी स्थिति में वे एकाएक प्रज्ज्वलित हो उठे, तो इसमें आश्चर्य कैसा? मंत्र-जप के सातवें तत्व 'मनन' का अर्थ हम पिछले अंक में भली-भांति स्पष्ट कर चुके हैं। बार-बार किसी मंत्र के प्रति चिन्तन को ग्रहण करते रहना, उसके स्वरूप को समझने का प्रयास करना, यही मनन है। मनन का एक अन्य अर्थ है कि, न केवल साधना के क्षणों में वरन् अपनी साधना के सम्पूर्ण काल में सम्बन्धित मंत्र को अपने रोम-रोम में स्थापित करते रहना। **यह भावना करना कि मंत्र मेरे सारे शरीर से गुंजरित हो रहा है, मैं स्वयं मंत्र स्वरूप बन गया हूं, यह भी मंत्र का मनन ही है।** इस प्रकार की क्रिया करते रहने से दूषित वृत्तियां, विचार आदि नष्ट होने लगते हैं और स्वतः ही एक अलौकिक स्फुरण अपने अन्दर प्रारम्भ हो जाता है।

मंत्र साधना में आसन अर्थात् स्थान का भी विशेष महत्व है। नदी का तट, गुरु-गृह, शक्तिपीठ या पवित्र वृक्ष के नीचे आदि ऐसे स्थान होते हैं जहां पर सदैव साधक के मानस के अनुकूल तरंगें प्राप्त होती हैं। यदि साधक को उचित साधना स्थल प्राप्त हो जाता है, तो उसकी आधी से अधिक समस्या तो स्वतः ही समाप्त हो जाती है। किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि व्यक्ति घर

में साधना नहीं कर सकता। उसे ध्यान रखना होता है कि जिस स्थान पर वह साधना करे उस स्थान को कोई दूसरा व्यक्ति उल्लंघित न करे। यदि आपके पास पृथक साधना कक्ष हो तब तो आप उसकी सुरक्षा अपने अनुसार कर ही सकते हैं। यदि ऐसा सम्भव न हो तब भी अपने मंत्र जप के स्थान को वस्त्र आदि से घेर कर इस प्रकार पृथक कर सकते हैं, जिससे कोई अन्य वहां प्रवेश न कर सके।

मंत्र साधना के अंतिम दो मुख्य तत्व हैं 'मौन' एवं 'संयम'। मौन का मंत्र-जप के क्षेत्र में इतना अधिक महत्व है कि यदि मंत्र के मध्य साधक कोई भी शब्द बोलता है, तो मंत्र-जप उसी क्षण खंडित मान लिया जाता है और साधक को पुनः स्नान आदि कर, शुद्ध होकर आसन पर बैठना होता है। अतः जहां तक सम्भव हो मंत्र-जप काल में वार्तालाप तो दूर सामान्य बातों का भी उत्तर न तो शब्दों में, न 'हां-हूं' के रूप में और न संकेतों के रूप में दें। प्रायः साधक ऐसा कर बैठते हैं और फल में जब न्यूनता आती है तो कारण समझ नहीं पाते हैं। **संयम एक बृहद अर्थ वाला शब्द है। इसका तात्पर्य केवल इन्द्रियों के संयम तक ही नहीं वरन् मन के प्रति भी माना गया है।** मन एक अत्यन्त चंचल तत्व होता है और मंत्र-जप के काल में इसकी उच्छृंखलता और अधिक बढ़ जाती है। इसी कारणवश साधक को बाह्य संयम की अत्यधिक आवश्यकता रहती है, जिससे उसका सूक्ष्म प्रभाव उसके आन्तरिक मन पर पड़े और शनैः-शनैः सम्पूर्ण रूप से एक सर्वांगीण संयम की उत्पत्ति हो। संयम ही एकाग्रता का भी रहस्य है।

शास्त्रों में वर्णित इन १२ तत्वों की परिपालना साधक के लिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी होती है। वास्तव में यह १२ तत्व इसके दैनिक जीवन के अंग ही बन जाते हैं। **ये १२ तत्व मंत्र-जप अर्थात् मंत्र साधना में सफलता दिलाने में शत-प्रतिशत सहायक ही होंगे, ऐसा तब तक नहीं कहा जा सकता है जब तक साधक ने इस क्षेत्र में विधिवत् दीक्षा लेकर प्रवेश न किया हो।** क्योंकि गुरु साक्षात् शक्ति का दूसरा रूप होते हैं और जब शक्ति सम्पन्न गुरु द्वारा शिष्य को दीक्षा दी जाती है, तभी शिष्य के भीतर शक्ति के बंद द्वार खुलने लगते हैं। इसीलिए गुरु अपने शिष्य को जो मूल मंत्र देता है, वही मंत्र उसके लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है। दूसरे शब्दों में गुरु मंत्र ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण मंत्र है।

प्रायः साधकों को इस बात की शंका रहती है कि वे किस मंत्र का जप करें अर्थात् किसे अपना इष्ट बनाकर उसकी साधना में संलग्न हों? जहां मन में इस प्रकार की ऊहापोह हो, वहां दीक्षा प्राप्त शिष्य को बिना किसी हिचक के गुरु साधना ही सम्पन्न करनी चाहिए, क्योंकि इस रूप में उसके प्राणों का सीधा जुड़ाव उसके गुरु से बना रहता है, जो मंत्र-जप से और भी अधिक पुष्ट होता है।

वस्तुतः मंत्र साधना का क्षेत्र इतना अधिक व्यापक है कि मंत्र साधना के द्वारा इतने अधिक कार्य किए जा सकते हैं, जिनका वर्णन व्यक्ति को एक बार अविश्वसनीय भी लग सकता है किन्तु इसमें सच्चाई है कि **मंत्र साधना के द्वारा रोग, पीड़ा का निवारण, अर्थ-प्राप्ति जैसी सामान्य बातें तो सिद्ध की ही जा सकती हैं। कुण्डलिनी जागरण, षट्चक्र भेदन, मन की शांति और परमतत्व की प्राप्ति भी मंत्र साधना के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है।**

(पृष्ठ ७३ का शेष)

मंत्र

ॐ श्रीं महाञ्जनाय पवनपुत्रवेशयावेशय हुं श्री हनुमते फट्।।

उपरोक्त मंत्र साधक को उच्चारण में प्रथम बार कठिन लग सकता है, किन्तु इसके वर्णों के संगुफन में एक विचित्र सी ऊर्जा छिपी हुई है जिसका अनुभव साधक जब मंत्र जप तीव्रता से करता है तो स्वयं अनुभव कर सकता है। इस काल में ऐसा भी अनुभव हो सकता है मानों कोई बाह्य शक्ति सारे शरीर को झिझोड़ रही है तथा हाथ से माला भी गिर सकती है किंतु ये सब केवल इस मंत्र की ऊर्जा के ही परिणाम हैं, अतः साधक कदापि भयभीत न हो। यदि मंत्र-जप खण्डित हो जाए तो पुनः प्रारम्भ से मंत्र-जप करें।

मंत्र-जप के उपरान्त प्रत्येक तांत्रोक्त नारियल को घर के प्रत्येक द्वार पर रख दें और रात भर रखा रहने दें। सुबह इन तांत्रोक्त नारियलों को यंत्र व माला के साथ किसी पवित्र स्थान पर विसर्जित कर दें अथवा घर से दक्षिण दिशा में जाकर कहीं एकान्त में गड्ढा खोदकर दबा दें।

उपरोक्त साधना के फलस्वरूप जहां साधक को गृह-शुद्धि प्राप्त होती है वहीं भगवान श्री हनुमान की कृपा का फल भी प्राप्त होता है, और यदि साधक आगे के जीवन में भी संयम पूर्वक रह कर भगवान श्री हनुमान की आराधना करे तो कई अन्य लाभ प्राप्त होते रहते हैं। यह ध्यान रखें कि जिस दिन यह साधना सम्पन्न करें उस दिन केवल फलाहार अथवा दुग्ध-आहार ही ग्रहण करें, मौन रहें तथा ब्रह्मचर्य का पालन करें। अशुद्धता से हनुमान साधना में लाभ प्राप्त होने के स्थान पर हानि भी प्राप्त हो जाती है।

जैन तंत्र सम्पूर्ण तंत्र

शब्दकोश में एक शब्द है पूर्वाग्रह, जिसका तात्पर्य है कि व्यक्ति के मन में कुछ धारणायें बनी होती हैं और वह उनसे अलग हटकर कुछ भी नहीं सोच पाता। ये धारणायें रोजमर्रा के जीवन में भी हो सकती हैं और धार्मिक जगत में तो होती ही हैं या यूं कहें कि आज जो कुछ भी धार्मिकता है, वह पूर्वाग्रहो का संग्रह मात्र ही नहीं तो और क्या है? फिर इसी पूर्वाग्रह के दर्पण में भगवान कृष्ण सदैव बंशी बजाते हुए दिखते हैं, भगवान शिव राख लपेटे गले में सांप डाले आते हैं और मां भगवती दुर्गा सदैव सिंह पर ही बैठी रहती हैं! इसका और चाहे जो भी प्रभाव हुआ हो किन्तु इस पूर्वाग्रह की शैली ने ही सारे समाज को कुंद करके भक्ति की नींव डाली, ऐसा कहने में कोई भी अतिशयोक्ति नहीं। **भारतीय जीवन-परम्परा जो सदैव से तत्व-चिंतन की रही, उसने एक सुविधाजनक स्वार्थगत शैली अपना ली जो परम्परा से भक्ति बनकर चल पड़ी, यद्यपि भक्ति से भी कोई स्वार्थ सधता नहीं है।** इससे कहीं श्रेष्ठ हैं वे साधक जो निर्भयता पूर्वक प्रत्येक देवी-देवता की साधना में तत्व चिन्तन करते हैं तथा उनके स्वरूप को समझते हुए साधना में रत होते हैं। यदि साधना में देवता का स्वरूप ही नहीं समझा तो देह में स्थापन किसका करेंगे? और जब तक अपने शरीर में सम्बन्धित देवता का स्थापन नहीं कर लेते तब तक साधना में सफलता भी कैसे प्राप्त करेंगे?

इसी पूर्वाग्रह के दर्पण में तंत्र एवं तांत्रिक की भी एक विशिष्ट छवि है— हट्टा-कट्टा शरीर, लाल आंखें चिलम, और घोर अश्लील व्यवहार, दूसरी ओर यदि जैन सम्प्रदाय का नाम लें, तो जो छवि बनती है वह एक करुणा, अहिंसा, दान, दया आदि मानवीय गुणों से युक्त साधु की बनती है, जिसने शरीर पर मात्र एक सफेद वस्त्र डाल रखा हो या समस्त दिशायें ही जिसके वस्त्र हों। आप स्वयं कल्पना कीजिए कि यदि आपके कोई मित्र कहें कि चलो एक जैन महामुनि से मिल आएं तो क्या आपकी आंखों के सामने ऐसा ही बिम्ब उपस्थित नहीं हो जाता?

यहां पर मैं इन्हीं दो सर्वथा विरोधी बातों के माध्यम से अपनी बात को स्पष्ट करने का इच्छुक हूं। यह सत्य है कि आंखों के सामने जो बिम्ब बनता है, उसके पीछे कोई न कोई आधार अवश्य होता है। किन्तु यदि यह कहा जाए कि वह बिम्ब अधूरा होता है तो कोई अनुचित बात नहीं। **जैन सम्प्रदाय में भी तंत्र को न केवल स्थान दिया गया है, वरन जैन साधकों ने तंत्र को उसकी पराकाष्ठा तक पहुंचाया है। यह जानकर फिर तंत्र के प्रति क्या आपके मन में तर्क- वितर्क करता वही भाव रहेगा?**

कदापि नहीं।

यही मेरे कहने का तात्पर्य है कि तंत्र एवं जीवन शैली दो भिन्न-भिन्न भावभूमियां हैं, अतः तंत्र और तांत्रिक को लेकर जो छवि बनी है वह निश्चित रूप से सत्य ही है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। तंत्र का आश्रय तो कोई भी ले सकता है, तंत्र के द्वारा कोई भी अपने जीवन को संवार सकता है, ठीक जैन साधुओं की ही तरह।

केवल जैन साधु वर्ग तक ही नहीं वरन् जैन सम्प्रदाय भी अपनी स्वच्छ जीवन शैली के कारण समाज में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। जिस प्रकार से वे अपने समाज के प्रति करुणा का भाव रखते हैं, धनाढ्य होने के साथ-साथ मुक्त हस्त से दान कर्म में विश्वास रखते हैं, वह सब अनुकरणीय तो है ही, कई पूर्वाग्रहों पर भी आघात करने वाली बात है।

जैन सम्प्रदाय में यह खुलापन और उदार मनःस्थिति वास्तव में उन्हीं के सम्प्रदाय के तीर्थंकरों एवं प्रर्वतकों द्वारा दी गई भावना है। जैन सम्प्रदाय एक ऐसा सम्प्रदाय रहा जिसमें कभी भी कोई गोपनीयता नहीं बरती गयी। अपने आचार-विचार की रक्षा करने में जैन साधुओं ने स्वयं को समाज से अलग अवश्य रखा, किन्तु अपनी तपस्यो या साधना के फल को गोपनीय नहीं रखा। उसे सम्प्रदाय विशेष की ही सम्पत्ति नहीं माना। जिस काल में आबू पर्वत एवं अरावली की पहाड़ियों के क्षेत्र में जैन

श्रमणों का वर्चस्व था, ठीक उसी काल में वहीं प्रचंड वामाचारी, खुलकर पंचमकारों का सेवन करने वाले तांत्रिकों का भी आतंक छाया हुआ था, लेकिन इसके बाद भी जैन साधकों ने न केवल अपना अलग स्थान बनाए रखा वरन् अपनी सौम्यता और मानवीय गुणों के कारण इसे शिखर तक पहुंचा दिया।

जैन सम्प्रदाय के साहित्य और परम्पराओं से ज्ञात ज्ञान का यदि विश्लेषण करें तो सहज ही स्पष्ट होता है कि, उनके पास ऐसी प्रखर मंत्र शक्ति थी जिसके माध्यम से वे असम्भव को भी सम्भव कर ही लेते थे, यद्यपि जैन साधु प्रदर्शन चमत्कार में कदापि विश्वास नहीं रखते, किन्तु आत्मरक्षार्थ ऐसी घटनाएं घटित कर देते थे जिनसे कोई भी हतप्रभ और उनके समक्ष नतमस्तक हो जाता था।

एक अवसर पर किन्ही जैन भिक्षुक को उस राज्य के राजा ने अपने दरबार में सैनिकों के माध्यम से उपस्थित कराना चाहा क्योंकि कुछ नागरिकों ने द्वेषवश यह शिकायत कर दी थी कि वे राज्य विरोधी गतिविधियों में लगे हैं। उन साधु ने मार्ग में ही अपनी तीस-पैंतीस वर्ष की अवस्था को देखते ही देखते नब्बे वर्ष के जर्जर वृद्ध में बदल दिया। जब उन्हें दरबार में लाकर उपस्थित किया तो राजा ने उल्टे शिकायत करने वालों को ही डांट लगाई कि इनसे तो मक्खी भी नहीं मरेगी ये किसी का क्या अहित करेंगे। और यह कहकर उन्हें मुक्त कर दिया।

जैन साधुओं के इतिहास को यदि टटोलें तो मिलता है कि अदृश्य हो जाना, वायुगमन, कायाकल्प, वाक्‌सिद्धि, वचन सिद्धि, परकाया-प्रवेश जैसी अनेक बातें उनके लिए अत्यन्त सहज थीं और विशेषता यह थी कि उन्होंने अनेक सिद्धियों के लिए पृथक रूप से साधनाएं नहीं की, किन्तु योग का ऐश्वर्य कही जाने वाली ये सिद्धियां उन्हें उच्चकोटि की आध्यात्मिक साधनाओं को सम्पन्न करने के कारण स्वतः ही मिलती चली गई। **अपनी साधनाओं को पूर्णता देने के क्रम में उन्होंने सर्वथा नवीन तंत्र की रचना की ही, मंत्र जगत में भी ऐसा विशाल भंडार छोड़ गए जो आज तक पूरे भारत की सम्पदा है।** किंन्तु मंत्रों का विशाल संग्रह होने के साथ इस क्षेत्र में प्रविष्ट नए साधक को यह भी भ्रम हो जाता है कि वह मूल मंत्र किसे माने, यह भ्रम किसी भी साधना पद्धति के साथ हो सकता है, और जब तक किसी साधना पद्धति का मूल मंत्र नहीं जान लिया जाता तब तक आगामी सफलता भी संदिग्ध ही रहती है।

समस्त जैन मंत्रों के मध्य सर्वाधिक महत्व पंच णमोकार महामंत्र का है। इस मंत्र की जैन सम्प्रदाय में इतनी अधिक महत्ता मानी गई है कि कुछ प्रसिद्ध जैन साधु तो केवल इसी के सतत् उच्चारण से जिनत्व को प्राप्त हो गए। इसके अतिरिक्त प्रत्येक जैन मतावलम्बी की दैनिक पूजा में इस मंत्र का जप आवश्यक होता है। एक प्रकार से कहा जा सकता है जिस प्रकार हिन्दू धर्म में ॐ प्रणव को मूल मंत्र माना गया है, उसी प्रकार जैन सम्प्रदाय में पंच णमोकार मंत्र को। इस मंत्र के संयोजन में कुछ ऐसी विशिष्टता है जिससे इसका सतत् जप करने से मानसिक शांति तो प्राप्त होती ही है, साथ ही विविध प्रयोग भी इस प्रकार से किए जा सकते हैं कि व्यक्ति को आशातीत लाभ हो।

जैन तंत्र का आधार मंत्र है– पंच णमोकार मंत्र। कुछ प्रमुख व्यक्तित्व तो केवल इसी का सतत् जप कर जिनत्व को प्राप्त हुए। मानसिक शांति दिलाने, आध्यात्मिक उन्नति में तो यह मंत्र बेजोड़ है ही, इसके आर्थिक, सामाजिक पक्ष से सम्बन्धित उपयोग भी हैं।

जैन सम्प्रदाय का मूल पंचणमोकार मंत्र इस प्रकार है—

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं

मानसिक शांति, आध्यात्मिक अभ्युदय, पारिवारिक शांति, आकस्मिक संकट- नाश, रोग - नाश जैसी स्थितियों के लिए तो इस मंत्र का नित्य जप लाभदायक होता ही है साथ ही यदि जैन तंत्र के अनुसार इसी मंत्र को आधार बनाकर कुछ लघु प्रयोग दैनिक जीवन में समाहित कर लिए जाएं तो व्यक्ति को भौतिक दृष्टि से भी श्री-वृद्धि प्राप्त होने लगती है।

ऐसे ही अनेक प्रयोगों में से चुनकर कुछ प्रमुख एवं दैनिक जीवन में उपयोग आने वाले प्रयोग हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं—

१. तीव्र रक्षाकारक मंत्र

जैसा कि ऊपर कहा गया यह मंत्र अपने-आप में निवारक क्षमताओं को भी समेटे, तीव्र रक्षाकारक मंत्र भी है। आकस्मिक विपत्तियों में तो इसका प्रयोग सदैव सफल एवं अचूक देखा गया है। यदि विपदाएं बार-बार आकर घेर लेती हैं तो एक **सिद्ध कवच** प्राप्त कर, उसे दाहिनी भुजा पर बांध लें तथा निम्न मंत्र का जप प्रतिदिन एक बार करें।

६४ योगिनी साधना, यक्षिणी साधना, पद्मावती साधना एवं दैनिक जीवन में उपयोग आने वाले सैकड़ों लघु प्रयोग . . . .

तभी तो जैन तंत्र सम्पूर्ण तंत्र कहा गया है।

मंत्र

ॐ णमो अरिहंताणं– हां ह्रदयं रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा
ॐ णमो सिद्धाणं – हीं शिरो रक्ष रक्ष हुँ फट् स्वाहा
ॐ णमो आयरियाणं – हुं शिखां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा
ॐ णमो उवज्झायाणं – एहि एहि भवगती वज्रकवच वज्रिणी रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।
ॐ णमो लोए सव्व साहूणं– हः क्षिप्रं साधय वज्रहस्ते शूलिनी दुष्टान रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

२. श्री-वृद्धिकारक णमोकार मंत्र

जैन व्यवसायी इस मूल मंत्र का जप न केवल अपनी आध्यात्मिक उन्नति हेतु अपितु एक विशेष ढंग से श्री-वृद्धि हेतु भी नियमित रूप से करते हैं, जिसके फलस्वरूप उनके धन-धान्य में कभी कमी नहीं आती। जिस प्रकार शाक्त तांत्रोक्त साधनाओं के मध्य 'हीं' मंत्र का विशेष महत्व है, उसी प्रकार जैन सम्प्रदाय में 'हीं' मंत्र एवं 'हीं' यंत्र को प्रमुखता दी गई है। प्रत्येक श्रद्धालु जैन मतावलम्बी अपने घर, पूजा स्थान, तिजोरी अथवा व्यवसाय स्थल पर गोपनीय रूप से ताम्रपत्र अथवा रजत पत्र पर अंकित **ही यंत्र** रखता ही है और इससे सम्बन्धित साधना को नियमित रूप से सम्पन्न करता है। इसी हीं यंत्र से सम्बन्धित जिस विशेष णमोकार मंत्र का विवरण जैन परम्परा में प्राप्त होता है वह इस प्रकार है–

मंत्र

ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आयरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्व साहूणं, ॐ हुं हां हीं हूं हौं हः नमः स्वाहा।।

प्रतिदिन अपने समक्ष हीं यंत्र को स्थापित कर इस मंत्र का १०८ बार **स्फटिक माला** से उच्चारण करने से पूर्णरूप से श्री वृद्धि होती है, तथा अखंड धन सम्पत्ति भी प्राप्त होती है। यह ध्यान रखना चाहिए कि ही यंत्र शाक्त पद्धति द्वारा मंत्र सिद्ध न होकर [illegible] पद्धति द्वारा इस साधना विशेष के लिए चैतन्य व प्राण-प्रतिष्ठित किया गया हो।

जैन तंत्र की यह विशेषता है कि अत्यन्त तीव्र होते हुए भी इसमें मारण प्रयोगों अथवा विद्वेषण प्रयोगों को स्थान नहीं दिया गया है। इसके स्थान पर आत्मरक्षा प्रयोग को ही प्रमुखता दी गई है। **प्रत्येक तंत्र में शक्ति का आश्रय लिया ही जाता है, जिस प्रकार शाक्त, तांत्रिक काली को आधार शक्ति मानते हैं, बौद्ध, तांत्रिक तारा को, उसी प्रकार जैन तंत्र में शक्ति की मूल आधार 'पद्मावती' को माना गया है।** यद्यपि पद्मावती शक्ति परम्परा में महालक्ष्मी का ही तांत्रिक स्वरूप मानी जाती है, किन्तु जैन ग्रंथों में इन्हें सम्पूर्ण रूप से शक्ति की अधिष्ठात्री देवी मानकर साधनाएं वर्णित की गई हैं, जो अत्यन्त तीव्र प्रभावों से युक्त है, जैन तंत्र में पद्मावती को आधार मानकर अनेक साधनाओं की सृष्टि की गई है एवं उनसे सम्बन्धित जो मंत्र हैं वे तांत्रोक्त भी हैं, मांत्रोक्त भी तथा साबर भी। ऐसे ही विशाल मंत्र संग्रह में से सर्व कार्य सिद्धि दायक मंत्र का प्रयोग इस प्रकार है–

३. सर्वकार्य सिद्धि दायक मंत्र

यह जैन तंत्र की एक अन्य श्रेष्ठ और अचूक साधना है तथा कई साधक प्रयास पूर्वक इसी साधना में सफलता पाने को सचेष्ट रहते हैं, क्योंकि इस साधना के द्वारा कई कार्यों की सिद्धि एक साथ जो प्राप्त हो जाती है। दूसरे प्रकार से यह मनोवांछा पूर्ति साधना भी है। साधक को चाहिए कि **वह ताम्रपत्र पर अंकित पद्मावती यंत्र** प्राप्त कर **पद्मावती माला** के द्वारा निम्न मंत्र की एक माला नित्य जप करे–

मंत्र

ॐ हीं श्रीं पद्मे पद्मासने श्री धरणेन्द्र प्रिये पद्मावति श्रियं मम कुरु कुरु दुरितानि हर हर सर्व दुष्टानां मुखं बंधय बंधय हीं स्वाहा।

इस साधना में दिनों की संख्या निर्धारित नहीं है और जब तक अपने कार्यों में सफलता न मिलने लग जाए तब तक इसका प्रयोग करते रहना चाहिए, किन्तु यह ध्यान रखना चाहिए कि एक ही समय में एक ही इच्छा को पूर्ण करने हेतु मानस बनाएं।

समस्त जैन साधनाओं के सन्दर्भ में यह बात भी उल्लेखनीय है कि साधक को पवित्रता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। प्रत्येक साधना में आसन व वस्त्र का रंग श्वेत ही उचित माना गया है, केवल पद्मावती से सम्बन्धित साधनाओं में वस्त्र-आसन लाल होने चाहिए। समस्त सौम्य साधनाओं में दिशा पूर्व एवं दिवस सोमवार अधिक फलप्रद माना गया है, जबकि पद्मावती से सम्बन्धित साधनाओं में दिवस मंगलवार व रविवार एवं दिशा दक्षिण फलप्रद रहती है।

हाथों-हाथ लाभ प्राप्त कीजिए काम्य प्रयोग से

नवरात्रि जहां मां भगवती जगदम्बा एवं उनके त्रिगुणात्मिका स्वरूपों की साधना का पर्व है वहीं ऐसा सिद्ध मुहूर्त भी है जब कि साधक अनेक लघु प्रयोगों को सम्पन्न कर अपने जीवन में मनोवांछित परिवर्तन ला सकता है। लघु प्रयोगों का महत्व ऐसी दशाओं में सर्वाधिक अनुकूल माना गया है जहां किसी कार्य की सिद्धि तुरंत प्राप्त करनी हो, और विस्तृत प्रयोग करने का अवसर उपलब्ध न हो। **यद्यपि स्थायी और ठोस सफलता तो साधना के द्वारा ही प्राप्त होती है।**

शास्त्रों में ऐसे लघु प्रयोगों को **काम्य प्रयोग** की संज्ञा दी गई अर्थात् व्यक्ति की कामना से सम्बन्धित प्रयोग। साधकगण इन सभी प्रयोगों को **दिनांक ७ से १२ अक्टूबर के मध्य** कभी भी सम्पन्न कर हाथों- हाथ लाभ प्राप्त कर सकते हैं—

१. अखंड सौभाग्य की इच्छुक स्त्री को चाहिए कि वह एक **अक्षय माला** प्राप्त कर अपने गले में धारण करें।

२. जिस स्त्री के पति के शत्रु बहुत अधिक हों, और बार-बार आघात जैसा भय बना रहता हो, वह **चित्रांगदा** नामक मणि अपने वक्षस्थल पर धारण करें।

३. रोग निवारण के लिए इन्हीं दिनों में **जाम्ब** नामक आदिवासी टोटका भी प्रयोग में लाने की परम्परा रही है।

४. विद्या की प्राप्ति के इच्छुक को चाहिए कि वह **वागीश्वरी यंत्र** कंठ में धारण कर सम्पूर्ण नवरात्रि में प्रतिदिन १०८ बार "ऐं" बीज मंत्र का जप करे।

५. अविवाहित कन्या के लिए योग्य वर प्राप्त करने हेतु उसे नवरात्रि में **कात्यायनी यंत्र (ताबीज रूप में)** धारण कराएं।

६. जहां किसी के विवाह में प्रबल बाधा आ गयी हो अथवा कहीं विवाह की बात बनकर टूटने की नौबत आ रही हो, वहां चाहिए कि इसी नवरात्रि में एक **लघु दुर्गा यंत्र** लेकर उसे भोजपत्र के ऊपर रखें तथा भोजपत्र पर मधु से, सम्बन्धित व्यक्ति का नाम लिखें। नवरात्रि के अंतिम दिन यह भोजपत्र सम्बन्धित व्यक्ति के दरवाजे के आस-पास डाल आएं तथा यंत्र को विसर्जित कर दें।

७. जहां कोई न कोई रोग बना ही रहता हो और पूरी तरह से छुटकारा न मिल रहा हो वहां एक **रक्तमणि** प्राप्त कर अपने सिर पर से घुमाकर घर से दूर फेंक दें।

८. अर्थोपार्जन का निश्चित जरिया न मिल पा रहा हो अथवा प्राप्त आय से संतोष न हो तो एक **लघु भुवनेश्वरी यंत्र** लेकर उस पर नित्य १०८ बार पेड़े के टुकड़ों अथवा दूध से बने किसी अन्य मिष्ठान के टुकड़ों का भोग **"ह्रीं"** मंत्र बोलते हुए लगाएं, तो शीघ्र ही आय का आकस्मिक स्रोत प्राप्त होता है। यह पूरी नवरात्रि का प्रयोग है।
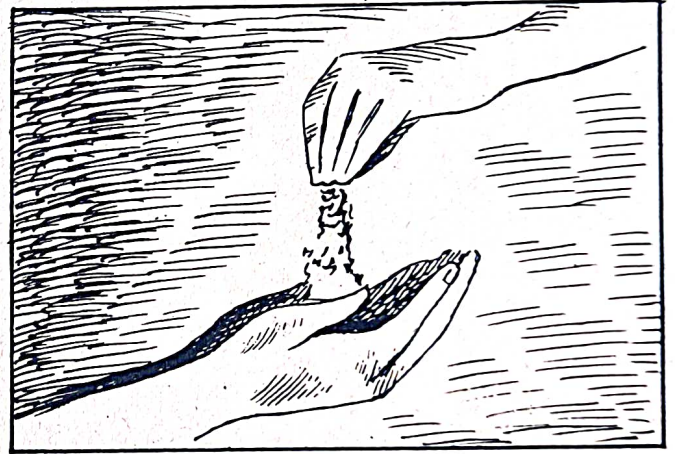
९. जहां किसी कारणवश नौकरी छूट गयी हो अथवा नौकरी पर संकट जैसी बात आ गयी हो, वहां **लघु भुवनेश्वरी यंत्र** लेकर नित्य १०८ बार सफेद फूल **"ह्रीं"** मंत्र के उच्चारण के साथ चढ़ाएं। ऐसा पूरी नवरात्रि भर करें।

१०. यदि किसी राजकीय बाधा में फंस गए हो अथवा किसी के षड्यंत्र द्वारा उलझा दिए गए हों तब एक **छिन्नमस्ता पाश** पर सम्बन्धित समस्या का उच्चारण कर घने जंगल में फेंक आएं।

११. प्राणों पर संकट बन आया हो या शत्रु बाधा से मन अत्यंत पीड़ित हो गया हो तब एक **दुर्गा फल** लेकर जितने शत्रु हों, फल पर उतने ही धागे बांध कर अग्नि में समर्पित कर दें तो निश्चय ही जीवन में सुख-संतोष का आगमन होता है।

१२. कैसी भी प्रबल प्रेत बाधा से ग्रसित कोई व्यक्ति हो उसे नित्य **भूतभृर्त यंत्र** के दर्शन नवरात्रि भर करा दें तो स्थिति में सुधार आने लगता है।

१३. जहां अस्वस्थता अथवा पीड़ा का कोई भी कारण समझ में न आ रहा हो और व्यक्ति दिन प्रतिदिन कमजोर पड़ता जा रहा हो, वहां एक **काली फल** उसके गले में धारण करा देना लाभप्रद रहता है।

१४. शनि की बाधा से जो जातक ग्रस्त होता है, जिसकी राशि पर साढ़े साती अथवा ढैय्या चल रही होती है, उसके ऊपर मानो कष्टों का पहाड़ ही टूट पड़ता है। ऐसे पीड़ित व्यक्ति को चाहिए कि वह **लघु शनि यंत्र** अपने समक्ष रख पूरी नवरात्रि भर **''ॐ अतिशनैश्वराय''** मंत्र का जप **काली हकीक माला** से करे।

१५. नवरात्रि का पर्व मोहन, वशीकरण, उच्चाटन आदि कर्मों के लिए तांत्रिकों का चिरप्रतीक्षित पर्व है, और उच्चकोटि के साधक इस काल में अनेक छोटे काम्य प्रयोग सिद्ध कर पर्याप्त लाभ प्राप्त करते हैं। ऐसे ही प्रयोगों में वशीकरण से सम्बन्धित एक ऐसा प्रयोग है जो हठी से हठी व्यक्ति को भी वशीभूत करके रख देता है। साधक को चाहिए कि वह एक **मंत्र सिद्ध आकर्षण मुद्रिका** प्राप्त कर, **हकीक माला** से **''ॐ जुं सः अमुकं मे वश्य मानय सः जुं ॐ''** मंत्र का १०८ बार उच्चारण करें। अत्यन्त साधारण से दिखते इस मंत्र में गजब की शक्ति भरी हुई है।

१६. **पञ्चांगुली देवी के प्राण-प्रतिष्ठित चित्र** को अपने समक्ष रख पूरी नवरात्रि में नित्य उसका पूजन कर फ्रेम में मढ़वा कर रख लें और आगे नित्य रात्रि को उसका दर्शन करके सोए तो स्वप्न में प्रश्न का उत्तर प्राप्त होता है।

१७. घर में सदैव कलह बनी रहती हो और अलगाव जैसी स्थिति आ गयी हो, तब एक **चण्डिका यंत्र** लेकर उसकी स्थापना घर के मुख्य द्वार पर कर दें।

१८. यदि किसी स्त्री को ऐसे प्रबल स्त्री रोग की समस्या हो जो सामान्य न हो रही हो, तब एक **निहली** नामक गुटिका लेकर धारण करने से शीघ्र ही लाभ मिलने लगता है।

१९. यदि किसी स्त्री को असमय बुढ़ापा आकर घेर रहा हो अथवा उसका आकार बेडौल होता जा रहा हो, तो इसी नवरात्रि में उसके लिए एक विलक्षण प्रयोग प्रस्तुत किया जा रहा है। उसे चाहिए कि पूरी नवरात्रि में किसी भी दिन शुद्ध पवित्र होकर अपने सामने एक कागज पर निम्न यंत्र बनाए तथा प्रत्येक में एक-एक **वेणु ''ॐ अप्रित अप्रित हुं''** का उच्चारण कर रखे तथा अनुमान से आधे घंटे तक इसी मंत्र का जप कर समस्त सामग्री बांध कर अपने संदूक में रख ले।

यंत्र

हुं	अ	ॐ
७	५	६

२०. इसी प्रकार यदि कोई पुरुष अपने व्यक्तित्व में क्षीणता अनुभव कर रहा हो तो उसके लिए भी एक श्रेष्ठ प्रयोग वर्णित किया गया है। सम्पूर्ण नवरात्रि में जिस दिन शुक्रवार पड़ रहा हो उस रात्रि को कागज पर निम्न यंत्र बनाकर उसके मध्य में एक तेल का दीपक रख **शुक्र माला** द्वारा **''ॐ शुक्र चक्र विचक्र हुं फट''** मंत्र की ग्यारह माला मंत्र जप करें तथा दूसरे दिन प्रातः सभी सामग्री विसर्जित कर दें।

यंत्र

६	४	६	७.
२	८	५	३

२१. कैसी भी प्रबल मानसिक चिंता हो यदि एक **सुंदर** लेकर इसी काल में धारण कर लिया जाए तो मानसिक शांति के साथ अनिद्रा रोग में भी लाभ मिलता है।

२२. जिनकी आराध्या भगवती दुर्गा हों, वे यदि एक **रौद्रा** स्थापित कर साधना करें तो नवरात्रि में प्रत्यक्ष सिद्धि मिलती है।

२३. मूठ प्रयोगों से मन खिन्न हो गया हो और कोई हल न सूझ रहा हो तो एक **विध्वंसिनी** लेकर दक्षिण दिशा में फेंक दें।

२४. महाविद्या साधकों के लिए पुण्य पर्व होता है नवरात्रि। कोई भी महाविद्या साधना करें एक **सिद्ध रत्न** अवश्य स्थापित करें।

२५. नवरात्रि के काल में यक्षिणी साधनाओं एवं योगिनी साधनाओं में भी प्रबल सफलता मिलने की स्थिति तब सबल हो जाती है जब साधक यंत्र पर भेंट स्वरूप **गुणदा** भेंट करता है।

प्रेत बाधा निवारक सत्राहिया यंत्र

स्पष्ट है कि प्रेत बाधा से पीड़ित व्यक्ति अपना उपचार स्वयं नहीं कर सकता, फिर क्या उसे यों ही तड़पते रहने दें?

पीड़ित व्यक्ति के लिए साधना करना, उसके परिवार को मनोबल देना, यह भी समाजिकता और समाज सेवा ही है।

पौरुषवान साधक ऐसा ही करते हैं।

भारतीय पद्धति से निर्मित पञ्चांग अपने-आप में काल विभाजन की सम्पूर्ण विधा है। प्रकृति का अत्यन्त सूक्ष्म अवलोकन कर इसमें दिवसों, माह का विभाजन, विशिष्ट मुहूर्तों का निर्धारण इस प्रकार किया गया है जिससे जीवन के प्रत्येक पक्ष की ओर समुचित ध्यान दिया जा सके। इसी कारणवश जहां भारतीय पद्धति में शिव, कृष्ण, दुर्गा, लक्ष्मी की उपासना-साधना के अवसर हैं, वहीं पूरे वर्ष में पन्द्रह दिन केवल अपने पितृ वर्ग एवं पूर्वजों के लिए निर्धारित किए गए हैं, जो आश्विन कृष्ण प्रतिपदा से आश्विन कृष्ण अमावस्या तक रहते हैं। **ये दिन पूरे वर्ष भर में सर्वथा अलग होते हैं और सामान्यतः इन दिनों में कोई भी शुभ अथवा मंगल कार्य नहीं किया जाता, किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि ये दिन अपवित्र अथवा दूषित होते हैं,** अपितु इसके पीछे जो मूल भावना है वह अपने पूर्वजों के प्रति गहन श्रद्धा व सम्मान की है। ये दिन अत्यंत गंभीरता व गहनता के होते हैं, जबकि यथार्थतः व्यक्तियों के मृत पूर्वज अपने सूक्ष्म स्वरूप में उपस्थित होकर अपने वंशजों के तर्पण आदि को तो स्वीकार करते ही हैं साथ ही इस दृष्टि से भी गतिशील रहते हैं कि, वे किस प्रकार अपने वंशजों का कल्याण भी कर सकें। ये दिन साधनात्मक दृष्टि से श्मशान साधनाओं के लिए अनुकूल माने जाते हैं और सामान्य साधक इसी कारणवश इन दिनों को अपवित्र मान कर इनका उपयोग नहीं करते हैं, जबकि यह वास्तविकता नहीं है। यह सत्य है कि इन दिनों में वायुमंडल एवं वातावरण भिन्न प्रकार का होने के कारण समस्त साधनाएं उतनी अधिक निरापदता से नहीं की जा सकतीं जितनी कि वर्ष के अन्य माह में, किन्तु इन दिनों का उपयोग भी सामान्य एवं सहज सौम्य पद्धति से साधना करने वाले साधक गण कर ही सकते हैं, और वातावरण से तादात्म्य स्थापित कर कुछ ऐसी समस्याओं का निदान प्राप्त कर सकते हैं जिनको वर्ष के अन्य दिनों में सिद्ध करने में सम्भवतः कई गुना मेहनत अधिक करनी पड़ती है।

ऐसी ही समस्याओं में एक मुख्य समस्या है प्रेत बाधा की, जिसके उदाहरण हमें ज्यादा दूर नहीं अपने ही गली-मुहल्ले में भी देखने को मिल सकते हैं, जिसमें पीड़ित व्यक्ति अर्धविक्षिप्त या पूर्ण विक्षिप्त बनकर पूरे-पूरे जीवन के लिए पंगु जैसा बन

जाता है। जहां एक ओर ऐसा व्यक्ति मानसिक रूप से अक्षम होता है वहीं उसकी शारीरिक क्षमता सामान्य से कई गुना अधिक बढ़ जाती है, साथ ही मानसिक विकृतियां भी। ऐसे व्यक्ति को जंजीरों में बांधकर रखने के अतिरिक्त परिवार वालों के पास कोई उपाय नहीं रह जाता है। ऐसे व्यक्ति की क्षुधा और कुप्रवृत्तियां इस प्रकार की हो जाती हैं कि पूरा का पूरा परिवार एक दुखद वातावरण में जीने को बाध्य हो जाता है। पूरे घर का सुख, चैन, शान्ति और प्रसन्नता चली जाती है।

पागलों की तरह चीखना, सिर पटकना, कपड़े फाड़ देना, बेहद अश्लील वाक्य बोलना, अश्लील मुद्राएं प्रदर्शित करना और हरेक को मारने दौड़ना जैसी घटनाओं के बाद वह परिवार सामाजिक रूप से समाप्त होने लग जाता है। तब ऐसी स्थिति में समाज के प्रत्येक व्यक्ति का एक प्रकार से दायित्व बनता है कि वह उस परिवार की यथासम्भव सहायता करे, उसे अलग पड़ने से बचाए और ऐसे साधनात्मक उपाय से परिचित कराए जिससे बिना किसी जटिलता के समस्या से मुक्ति प्राप्त की जा सके। ऐसी बाधाओं से पीड़ित व्यक्ति अथवा परिवार सामाजिक बहिष्कार के पात्र नहीं वरन् सहानुभूति के पात्र होते हैं और उन्हें घृणा की दृष्टि से न देखकर उनकी सहायता करना ही साधक का धर्म और गुण है।

प्रेत बाधा से पीड़ित व्यक्ति को मुक्त कराना अधिकांश स्थितियों में यदि असम्भव नहीं तो कठिन होता ही है, क्योंकि प्रेत एक अत्यन्त हठी योनि है। यों तो इतर योनि वर्ग में कई भेद हैं— भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस इत्यादि लेकिन प्रेत पीड़ित व्यक्ति का उद्धार अपेक्षाकृत कठिन माना गया है। प्रेत-पीड़ित व्यक्ति की पहचान यह है कि उसके चेहरे पर एक विचित्र सी क्रूरता भरी चमक आ जाती है, और साथ ही सहजता से अच्छे जानकारों की पकड़ में भी नहीं आती है। भूत बाधा से ग्रसित व्यक्ति का उद्धार फिर भी सहज और सरल है किन्तु प्रेत बाधा का उपचार कठिन होने के कारण उससे सामान्य जानकार व्यक्ति भी दूर ही रहना चाहते हैं।

किन्तु साधनात्मक जगत में किसी भी स्थिति को कठिन अथवा असम्भव माना ही नहीं गया है। साधनात्मक ग्रंथों में ऐसी कठिन स्थितियों के लिए भी प्रबल निवारक साधनाएं और उनके प्रयोग का उचित समय भी वर्णित किया गया है। आश्विन माह का यह कृष्ण पक्ष अर्थात् सामान्य बोलचाल की भाषा में पितृ पक्ष ऐसे समस्त कार्यों एवं साधनाओं के लिए अत्यन्त अनुकूल एवं निश्चित सफलतादायक समय माना गया है। आवश्यकता है तो इस बात की, कि व्यक्ति की साधनाओं के प्रति सम्मान भरी दृष्टि हो, साधना पद्धति, गुरु, मंत्र एवं सामग्री में आस्था व श्रद्धा हो तथा साथ ही साथ अपने पूर्वजों के प्रति सम्मान व आत्मीयता की भी भावना हो, क्योंकि पितर वर्ग के सहयोग से, उनके स्वयं के त्रिवर्गात्मक स्वरूप के होने से इस प्रकार की समस्याओं में निश्चय ही ठोस सफलता मिलती ही है।

इसी माह **दिनांक ३०-९-९४ (आश्विन कृष्ण पक्ष दशमी)** को एक महत्वपूर्ण दिवस पड़ रहा है जिसे **प्रेत सिद्धि दिवस** के नाम से जाना जाता है। यह दिवस सामान्य साधकों के लिए जहां प्रेत साधना में सफलता प्राप्त करने का एक चिर प्रतीक्षित दिवस है वहीं प्रेत मुक्ति का भी स्वयंसिद्ध दिवस है। साधनात्मक ग्रंथों में और विशेषकर साबर साधनाओं के प्राचीन ग्रंथों में इस दिवस के उपयोग से सम्बन्धित अनेक साधनाएं दी गई हैं। उनमें वर्णित किया गया है कि जिस प्रकार व्यक्ति घर में नौकर-चाकर रखता है उसी प्रकार प्रेत आदि को वश में कर अपनी सुरक्षा में नियुक्त कर सकता है अथवा उनसे घरेलू कामकाज ले सकता है। **नाथ योगी स्वभावतः हठी होने के कारण ऐसी साधनाओं में विशेष रुचि रखते थे, जो सरलता से न सिद्ध होती हो, जिनमें कुछ अटपटापन हो अथवा जिनमें चुनौती जैसी बात हो।** प्रस्तुत साधना ऐसे ही पौरुषवान साधकों की प्रबलता का एक प्रत्यक्ष उदाहरण है।

अभिशाप बन जाता है प्रेत पीड़ित व्यक्ति अपने पूरे परिवार के लिए, हर कोई तो कटने लगता है उस पूरे परिवार से ही . . . .

और उधर वह पीड़ित व्यक्ति भी भला अपनी व्यथा कहां कह पाता है?

किन्तु नाथ साहित्य में ऐसी विकट स्थितियों के लिए भी साधनाएं वर्णित हैं ही।

नाथ साहित्य में पन्द्रहिया, चौबीसा, बीसा, छत्तीसा जैसे यंत्रों के उपयोग से तो आप सभी भली-भांति परिचित हैं किन्तु उन्हीं नाथ योगियों के द्वारा प्राप्त किया गया एक अन्य महत्वपूर्ण यंत्र है सत्रहिया यंत्र। **यह यंत्र इसी प्रकार की समस्याओं के लिए अत्यन्त उपयोगी पाया गया है और श्मशान आदि स्थानों पर उग्र साधना करते समय नाथ योगी इसी प्रकार के विभिन्न यंत्रों के माध्यम से समस्त वातावरण को, पूरे-पूरे श्मशान को अपने वशीभूत कर लेते थे।**

साधक को चाहिए कि वह ताम्रपत्र पर अंकित ऐसे यंत्र को प्राप्त कर इस दिवस विशेष (३०-९-९४) की रात्रि में साधना में बैठे। यदि पीड़ित व्यक्ति उसके सामने बैठ सके तो उसे भी बैठा ले, नहीं तो उसकी अनुपस्थिति में यह प्रयोग उसके नाम का संकल्प लेकर किया जा सकता है।

विशेषकर ऐसी स्थितियों में जहां प्रयोग के बीच में पीड़ित व्यक्ति के उग्र हो जाने की सम्भावना हो, उसे सामने नहीं बैठाना चाहिए।

रात के दस बजे के बाद काले वस्त्र पहन कर, पश्चिममुख हो, काले वस्त्र पर तिलों की ढेरी स्थापित करे और उस पर ताम्र यंत्र पर अंकित **सत्रहिया यंत्र** स्थापित करे। स्वयं भी काले ऊनी आसन पर बैठे। साधना से पूर्व भगवान भैरव का स्मरण करे तथा एक **भैरव गुटिका** को भैरव स्वरूप मानकर गुड़ की ढेली का भोग लगाए और उनसे रक्षा की प्रार्थना कर समस्त दिशाओं से बाधा निवारण हेतु निम्न मंत्र बोलते हुए अपने चारों ओर जल छिड़के—

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

अन्तरिक्ष से विघ्न निवारण हेतु ऊपर की ओर देखते हुए **"फट्"** मंत्र उच्चरित करे तथा भूमि से होने वाले विघ्नों का नाश करने के लिए बाएं पैर की एड़ी से पृथ्वी पर आघात करे। तदोपरान्त लोबान धूप जला ले और एक **सिद्ध रक्षा चक्र** हाथ में लेकर पीड़ित व्यक्ति के नाम से संकल्प करे कि **मैं अमुक नाम, अमुक गोत्र का साधक, अमुक गुरु का शिष्य, अमुक व्यक्ति को प्रेत-बाधा से मुक्त कराने में अपने पूज्य गुरुदेव, पूर्वजों एवं पितरों की उपस्थिति में यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं। वे अपने सूक्ष्म बल द्वारा इसमें सफलता दें।** ऐसा कहकर सिद्ध रक्षा चक्र को यंत्र के सामने स्थापित कर दे और एक पात्र में जल रखकर, तेल का बड़ा दीपक लगाकर, **काले हकीक की माला** से निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र-जप करे।

मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं फट्

ध्यान रखें कि बिना पांच माला मंत्र-जप किए आसन को नहीं छोड़ना है। यदि इस बीच में कोई हलचल हो, भय उत्पन्न हो, आहट आए तब भी साधक मंत्र-जप का क्रम बनाए रखे, किन्तु मंत्र-जप के काल में यदि कोई आकृति स्पष्ट दिखाई दे जाए, तो बिना किसी हिचकिचाहट या विलम्ब के मंत्र-जप को स्थगित कर सामने रखे पात्र से जल लेकर उस पर छींटे मारे। ऐसा करने से यह प्रयोग पूर्णतयाः सिद्ध हो जाता है।

मंत्र के उपरान्त साधक शेष जल पीड़ित व्यक्ति को पिला दे और यदि व्यक्ति इसमें कोई बाधा उत्पन्न करे तो उसके सारे शरीर पर छिड़क दे। इस क्रिया से वह प्रेत बाधा से ग्रसित व्यक्ति अत्यन्त क्रोधित और उग्र हो सकता है, किन्तु चिन्तित न हो, इसके बाद साधक को जब भी अवसर मिले प्रेत बाधा से ग्रसित व्यक्ति के बाएं हाथ में सिद्ध रक्षा चक्र धारण करा दे। अधिकांश स्थितियों में दूसरे ही दिन से पीड़ित व्यक्ति की उग्रता में कमी आने लग जाती है।

साधना के उपरान्त काले हकीक की माला, सत्रहिया यंत्र एवं अन्य पूजन सामग्री किसी काले वस्त्र में बांधकर विसर्जित कर दे। ●

मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान

मंत्र-तंत्र-यंत्र

मंत्र-तंत्र-यंत्र

सर्व कष्ट निवारक
विराट
जगदम्बा यंत्र

जीवन की वास्तविक चैतन्यता तो तब है जब कुछ नए ढंग से कार्य किए जाएं, साधनाओं के क्षेत्र में नवीनतम पद्धतियों को हाथ में लिया जाए और चुनौती पूर्वक सफलता प्राप्त की जाए। लक्ष्मी साधना के स्थान पर लक्ष्मी कल्प इसी का एक उदाहरण है, जिसके द्वारा सफलता के नए आयाम प्राप्त किए जा सकते हैं. . .

लक्ष्मी साधना नहीं लक्ष्मी कल्प का प्रयोग करिए, इस प्रकार

लक्ष्मी का तात्पर्य ही है चुनौती और क्षमता। क्षेत्र चाहे भौतिक अर्थात् दैनिक जीवन का हो अथवा साधनात्मक, बिना जूझने की प्रवृत्ति के सफलता मिल ही कहां सकती है? इसी कारणवश जो साधक लक्ष्मी साधनाओं में रुचि रखते हैं वे किसी पद्धति अथवा किसी प्रयोग को ही जीवन भर पकड़े रहने में विश्वास नहीं करते, अपितु भिन्न-भिन्न साधना पद्धतियों को प्रयोग में लाते रहते हैं, क्योंकि पता नहीं कब कौन-सी साधना पद्धति उनके संस्कारों के अनुकूल सिद्ध होकर जीवन में एक चमत्कार सा घटित कर जाए।

वीतरागी हो या संन्यासी, गृहस्थ हो या अघोर पद्धति से जीवन जीने में विश्वास रखने वाला, लक्ष्मी की उपादेयता और आवश्यकता को कोई भी तो नहीं नकार सका। यही कारण है कि किसी भी सम्प्रदाय की साधना पद्धति को क्यों न लिया जाए, उसमें लक्ष्मी से सम्बन्धित प्रयोग, टोटके, साधना पद्धति मिलती ही है।

यहां तक की सर्वथा विरक्त एवं त्याग के मूर्तिमंत स्वरूप जैन साधुओं ने भी इस बात की आवश्यकता समझी कि समाज के गृहस्थ वर्ग को भली-भांति जीवनयापन करने के लिए आवश्यक है कि उन्हें धन से सम्बन्धित तीक्ष्ण व निश्चित प्रभावकारी साधनाएं दी जाएं, और इस बात का प्रमाण तो स्वयं जैन सम्प्रदाय है कि धन के द्वारा अध्यात्म का पोषण किस प्रकार सुगमता से किया जा सकता है। **दान, दया, समाज का हित जैसी सभी बातों का निर्वाह धन की पुष्टि के द्वारा ही तो किया जा सकता है।**

लक्ष्मी का स्वरूप एवं साधना सदैव से शुभ्रता एवं शुचिता की पराकाष्ठा मानी गई है, और यह घोषित किया गया है कि बिना पवित्रता अथवा साधना की स्वच्छता के लक्ष्मी का वरण करना कठिन है, किन्तु **दूसरी ओर ऐसे भी साधक हुए व साधना पद्धतियां प्रचलित रहीं, जिसमें उन्होंने अपने ही ढंग से जीवन जीते हुए लक्ष्मी को अपनी ही शर्तों पर उपस्थित होने को विवश कर दिया।** ऐसे ही सम्प्रदायों में नाथ योगी, अघोर सम्प्रदाय के साधक तथा कुछ विशिष्ट बौद्ध तंत्र के अनुयायी भी सम्मिलित हैं, जिनकी पद्धतियां आज तक प्रामाणिक और कसौटी पर खरी उतरी हैं।

यह माह आश्विन माह है, जबकि कृष्ण प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक का काल सौम्य साधनाओं की दृष्टि से अनुकूल नहीं है, किन्तु यही काल तांत्रिकों एवं अघोर पद्धति के साधकों का चिरप्रतीक्षित काल है। इस काल में केवल तीव्र और उग्र साधनाएं ही नहीं बल्कि उन्होंने प्रयोग के रूप में लक्ष्मी की साधनाएं भी कीं, और पूर्णता से यह सिद्ध किया कि यदि साधक में दृढ़ निश्चय हो, तो वह इस काल का भी ऐसा उपयोग कर सकता है, जो कि वर्ष में अन्य कभी नहीं मिल सकता। इसी कारणवश आश्विन का कृष्ण पक्ष जहां सामान्य वर्ग के मध्य पितृ पक्ष के नाम से प्रचलित है, वहीं विशिष्ट साधकों के मध्य **लक्ष्मी कल्प** के नाम से जाना जाता है। इस पक्ष में परम्परा से अलग हट कर साधनाएं सिद्ध करने का तात्पर्य यह नहीं है कि साधक को भी अघोर पद्धति से जीवन जीना होगा अथवा वामाचारी उपाय प्रयोग में लाने होंगे। वह उनके जीवन की पृथक शैली है, जिसका पृथक दर्शन है, जब कि उनके द्वारा प्राप्त किए गए प्रयोग अपने-आप में तीव्र स्पष्ट और बेहद सरल हैं। हम ऐसे ही कुछ विशिष्ट प्रयोग यहां प्रस्तुत कर रहे हैं, जिन्हें साधक २०/६/६४ से ५/१०/६४ के मध्य कभी भी सम्पन्न कर सकते हैं।

१. मंजूघोष प्रयोग

मंजूघोष देवता के वर्णन से सम्भवतः साधक परिचित नहीं ही होंगे, किन्तु शास्त्रों में इनका वर्णन एवं विवरण विस्तार से मिलता है तथा इन्हें साक्षात् भगवान शिव का ही स्वरूप कहा गया है। इनका वर्ण चन्द्रमा के समान उज्ज्वल, शरीर स्थूल तथा दोनों नेत्र कमल के समान हैं। कुमार अवस्था है तथा शांत स्वरूप है। एक हाथ में खड्ग और दूसरे हाथ में पुस्तक है तथा ये साक्षात् वाक् शक्ति के भी देव माने गए हैं। यद्यपि वामाचारी ढंग से मंजूघोष की उपासना के विविध प्रकार हैं, जिनसे साधक अपने अनेक लक्ष्यों की पूर्ति करते हैं किन्तु जहां तक धन-प्राप्ति के सम्बन्ध में मंजूघोष देवता की साधना वर्णित की गई है, उसके अनुसार साधक को इस कल्प भर अर्थात् आश्विन कृष्ण प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक एक लघु प्रयोग सम्पन्न करना होता है, जिसके अनुसार वह जब भी भोजन करने बैठे, **मंजूघोष माला** धारण कर जूठे मुख से मंजूघोष देवता का मंत्र अस्फुट स्वर में दोहराता रहे -

मंत्र

।।अ र व च ल धीं।।

इसमें मंत्र-जप की संख्या निर्धारित नहीं है। भोजन की समाप्ति पर थाली में उंगलियों से उपरोक्त मंत्र को लिख दे। पूरे मंत्र-जप के काल में किसी अन्य से न बोले तथा यथासम्भव भोजन भी एकांत में करे। इस प्रयोग की समाप्ति अर्थात् अमावस्या के दिन मंजूघोष माला को किसी भिखारी को कुछ दक्षिणा के साथ दान में दे दें। इस मंत्र की उपासना से धनार्थी प्रचुर मात्रा में धन, यश प्राप्ति का इच्छुक प्रबल यश एवं विद्या, आरोग्य आदि के इच्छुक अपनी-अपनी भावना के अनुसार फल पाते हैं।

२. उच्छिष्ट गणपति प्रयोग

यह प्रयोग भी आश्विन माह का एक अत्यन्त सिद्ध व सफल प्रयोग है तथा बहुत कुछ मंजूघोष प्रयोग की ही भांति है। अंतर केवल इतना है कि जहां मंजूघोष प्रयोग में भोजन करते समय मंत्र-जप किया जाता है वहीं उच्छिष्ट गणपति प्रयोग में भोजन के उपरान्त जूठे मुख बैठकर साधना-रत हुआ जाता है। उच्छिष्ट का तात्पर्य है "शेष" और जिस प्रकार इस साधना में उच्छिष्ट अन्न के कणों की साक्षी में (अर्थात् जूठे मुख) साधना की जाती है, उसी प्रकार **यह साधना जीवन की समस्त उच्छिष्ट (शेष रह गई) कामनाओं की पूर्ति में सहायक साधना है।** इस साधना को आश्विन माह की **कृष्ण चतुर्थी** (२३/०६/६४) से प्रारम्भ करना चाहिए और भोजनोपरांत बिना मुख धोए आसन पर बैठ अपने सामने पीला वस्त्र बिछाकर, **उच्छिष्ट गणपति यंत्र** स्थापित कर निम्न मंत्र की लगभग एक माला मंत्र-जप करें। इस प्रयोग में भी किसी माला की आवश्यकता नहीं होती, केवल अनुमान से साधक को निम्न मंत्र का १०८ वार उच्चारण करना होता है। मंत्र-जप के काल में अपनी समस्त मनोकामनाओं का स्मरण करते रहें।

मंत्र

।।गं हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा।।

उपरोक्त मंत्र की साधना प्रातः एवं सायं दोनों

समय करनी अनिवार्य है तथा अमावस्या के दिन उपरोक्त उच्छिष्ट गणपति यंत्र को यथोचित दक्षिणा के साथ दान में दे देना चाहिए।

३. धनदा प्रयोग

लक्ष्मी साधनाओं के क्षेत्र में धनदा देवी का जो महत्व है, उसे स्पष्ट करते हुए पत्रिका के पूर्व अंक में एक विस्तृत विवरण व प्रयोग प्रकाशित किया जा चुका है। **यहां हम धनदा देवी से सम्बन्धित उस प्रयोग को प्रकाशित कर रहे हैं, जो विशेषतः इसी आश्विन माह से ही सम्बन्धित है।** जो व्यक्ति घोर धनाभाव से पीड़ित हो, उन्हें तो सौ प्रयोग छोड़कर सबसे पहले इसी प्रयोग को सिद्ध करना चाहिए। यह लघु प्रयोग आश्विन माह के किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ कर रविवार को समाप्त किया जा सकता है, दूसरे शब्दों में यह तीन दिवसीय प्रयोग है। इसके लिए आवश्यक है कि साधक नित्य रात्रि में सर्वथा एकान्त में लाल रंग के वस्त्र पहन, लाल रंग के ही आसन पर उत्तर मुख होकर बैठे, सामने लाल वस्त्र पर ही **धनदा देवी के यंत्र** को स्थापित करे तथा **१०८ कनक कौस्तुभ** निम्न मंत्र के उच्चारण के साथ उस यंत्र पर चढा दे, तथा ऐसा नित्य तीन दिनों तक करे। ध्यान रखे, कि प्रथम दिन के चढ़ाए कनक कौस्तुभ वहीं रहने दे तथा दूसरे दिन नए **कनक कौस्तुभ** प्रयोग में लाएं।

मंत्र

।।ॐ ऐं श्रीं धनदायै नमः।।

साधना की समाप्ति पर समस्त ३२४ कनक कौस्तुभ एवं यंत्र को अपने घर के ही मुख्य द्वार के सामने एक गड्ढा खोद कर किसी पोटली में बांध कर गाड़ दे, तथा इस बात की पूरी गोपनीयता बनाए रखें।

५. धन वर्षिणी प्रयोग

बौद्ध तंत्र के अन्तर्गत का यह प्रयोग अपने प्रभाव में अत्यन्त तीक्ष्ण एवं निश्चित फलदायक माना गया है। इस प्रयोग में जिस देवी तारा की साधना की जाती है, वह महाविद्या तारा के ही एक विशेष स्वरूप की साधना है, जिसके फलस्वरूप बौद्ध भिक्षुक और विशेषकर बौद्ध तांत्रिक इतने अधिक सम्पन्न हुए, जिससे उन्होंने बिना राज्य पक्ष की सहायता अथवा आर्थिक सहयोग के अपने विशाल मठ एवं सम्पत्ति बनाई। यह प्रयोग सामान्य प्रयोगों से थोड़ा तीक्ष्ण एवं कुछ विशेष निष्ठा के साथ किया जाने वाला प्रयोग है, अतः इसे वे ही साधक करें, जो सम्पूर्ण साधना काल में अविचलित रह सकें। किसी भी मंगलवार की रात्रि को लाल वस्त्र धारण कर एकान्त में इस साधना को प्रारम्भ करें। साधक के पास **तारा वज्र, तारा मुद्रा** एवं **तारा चक्र** ये तीन सामग्रियां होनी नितांत आवश्यक हैं। अन्य प्रयोगों की भांति इस प्रयोग में भी किसी माला की आवश्यकता नहीं है, **केवल अनुमान से एक घंटे नित्य मंत्र-जप करना ही पर्याप्त है।** मंगलवार से यह प्रयोग आरम्भ करें, उससे अगले मंगलवार तक इसे नित्य करते रहें। साधना के प्रारम्भ में तीनों सामग्रियों को अपने सामने रखें एवं सुगन्धित धूप जला कर निम्न मंत्र का जप करें।

मंत्र

।।ॐ श्रीं श्रीं धनवर्षिण्यै नमः।।

अगले मंगलवार को प्रयोग सम्पूर्ण करने के उपरान्त सभी सामग्रियों को कहीं दूर ऐसी जगह फिंकवा दें, जहां सामान्य रूप से कोई उनको प्राप्त न कर सके।

६. अघोर लक्ष्मी प्रयोग

अघोर पद्धति से किया जाने वाला लक्ष्मी प्रयोग तो अपने ढंग में अनूठा ही है, और कहते हैं जिसको इस प्रयोग में पूर्ण सफलता मिल जाती है वह जेब में जितनी धनराशि की कामना करके हाथ डालता है, उसे वह धनराशि तत्काल प्राप्त होती ही है। यों भी जो कोई भी अपने जीवन में एक बार इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेता है, उसे धन की याचना तो कदापि करनी ही नहीं पड़ती। अघोर पंथ के अनुयायी इसे दीपावली की रात्रि में ही सम्पन्न करते हैं, किन्तु मुझे **अघोर पंथ के एक प्रसिद्ध योगी स्वामी ईंगुरनाथ** ने बताया कि उन्होंने अपने स्वप्रयोग से यह अनुभूत किया है कि — यदि इसे आश्विन की अमावस्या को भी सम्पन्न कर लिया जाए, तो समान फल प्राप्त होता है। इस वर्ष यह दिवस ५/१०/९४ को पड़ रहा है।

इस प्रयोग को करने के इच्छुक साधक को चाहिए कि वे **५/१०/९४** की रात्रि में काले वस्त्र पहिन कर, दक्षिण मुख हो अपने सामने लोहे की एक बड़ी थाली में काजल से निम्न यंत्र बना ले।

यंत्र

७	५	३
२	४	८

उपरोक्त यंत्र के प्रत्येक खाने में एक तेल का दीपक लगाकर उसमें एक **जोखड़ा** डाल दे तथा **अघोर माला** से निम्न मंत्र का १०८ बार उच्चारण करे।

मंत्र

।।ॐ श्रीं कार्य सिद्धये श्रीं फट्।।

मंत्र-जप के उपरांत समस्त सामग्री उसी रात को घर से कहीं दूर फिंकवा दे।

विश्व का सर्वश्रेष्ट अद्वितीय ज्योतिर्मय चेतना युक्त

दीपावली महोत्सव

२-३ नवम्बर १९९४

जोधपुर (राजस्थान)

सैकड़ों नहीं हजारों लोगों का, साधकों का स्वप्न है, इच्छा है, भावना है कि वर्ष का श्रेष्ठतम पर्व **"दीपावली पर्व"** पूज्य गुरुदेव के साथ मनाएं, हंसते हुए, मुस्कराते हुए, छलछलाते हुए, उमंग, उल्लास और मस्ती में अल्हड़ता व्यक्त करते हुए . . .

और गुरुदेव ने हमारी आरजू मानी, हमारे हठ को स्वीकार किया, दीपावली पर्व जोधपुर – गुरुधाम में, गुरुदेव के साथ, गुरु - परिवार के साथ, हमारे स्वयं के परिवार के साथ, अपने आत्मीय स्वजनों के साथ . . . साधक और साधिकाओं के नृत्य उमंग और उत्साह के साथ।

और पूज्य गुरुदेव के साथ तो एक - एक क्षण अनमोल हो जाता है, स्वर्णिम हो जाता है, जब वे मुस्कान बिखेरते हैं, जब वे प्रवचन करते हैं, जब वे साथ में नृत्यमय होते हैं, उमंगमय होते हैं।

तब इस मलिन दुनिया की सुध किसे रहती है? तब इस स्वार्थमय परिवार की याद किसे आती है? तब इस घटिया और दूषित वातावरण में सांस लेने की किसे इच्छा होती है?

एक चिन्तन. . . एक लक्ष्य . . . एक विचार . . . एक भावना कि पहुंचना है. . . गुरुदेव के चरणों में पहुंचना है. . . उनके हृदय में उतर जाना है।

और ऐसा ही दिव्य अवसर आ रहा है **२ और ३ नवम्बर** को जगमगाते हुए दीयों के बीच, दीपावली की जगमगाहट के बीच स्वर्गिक आनन्द, नृत्य और महोत्सव के साथ . . . ।

और इस बार समन्वय होगा भौतिकता और आध्यात्मिकता, श्रेष्ठता और पूर्णता का, जो आज तक नहीं हुआ, वह इस बार होगा।

सिद्धाश्रम स्थित देव लक्ष्मी प्रत्यक्ष क्रिया प्रयोग
और
परम पूज्य गुरुदेव परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द पूर्ण हृदयस्थ धारण प्रयोग

और फिर चाहिए ही क्या? इससे ऊंचा प्रयोग और हो भी क्या सकता है, दोनों ही प्रयोग अद्‌भुत, अनिवर्चनीय, अलौकिक . . .

और साथ ही साथ **सिंह लग्न मुहूर्त में चारों वेदों के मंत्रों से पूर्ण महालक्ष्मी पूजन सम्पूर्ण रात्रि पर्यन्त . . .**

वास्तव में ही वे साधक सोने की कलम से विधाता के हाथों अपना भाग्य लिखाकर लाये होंगे, जो इस अद्वितीय शिविर में भाग लेंगे।

एक अद्वितीय अनूठा पर्व

सिद्धिदात्री लक्ष्मी पूजन

२-३ नवम्बर १९९४

जोधपुर (राजस्थान)

: : : पूरे परिवार के साथ आएं, हम सब गुरुभाई - बहिन आप सबकी इन्तजार कर रहे हैं, पूरे घर में, जीवन में, और दिल में जगमगाहट जगाने के लिए : : :

नियम –

- प्रत्येक साधक को २ नवम्बर के प्रातः तक जोधपुर पहुंच जाना चाहिए, वापिस ४ नवम्बरको प्रातः प्रस्थान कर सकते हैं।
- **शिविर शुल्क मात्र ३३०/-**
- शिविर के नियमों का पालन अनिवार्य है।

गुरु-शिष्य सम्बन्ध

गुरु-शिष्य से सम्बन्धित गूढ़ प्रश्नों के उत्तर साक्षात् पूज्यपाद गुरुदेव के श्री मुख से . . . .

प्रश्न- दीक्षा में गुरु की क्या परिभाषा है?

उत्तर- गुरु का शाब्दिक अर्थ है- वह जो चेतना को ऊर्ध्व जाने में पड़ने वाली बाधाओं को दूर कर दे, अंधकार को हटा दे, बुरे संस्कारों से मुक्त कर दे, और उसे पूर्णता की ओर ले जाने में समर्थता दे। यह तो हुई गुरु की शाब्दिक परिभाषा, परंतु व्यवहार में गुरु का अर्थ आध्यात्मिक शिक्षक से ही लगाते हैं, जो आध्यात्मिक विषयों का ज्ञान देता है, वह गुरु है।

प्रश्न- क्या हर किसी के लिए गुरु आवश्यक है? इस जीवन में या अगले जीवन की पूर्णता के लिए गुरु का होना आवश्यक है?

उत्तर- हां, हर साधक को गुरु चाहिए, इससे पहले के जीवन में भी उसकी आत्मा, उसकी चेतना और वह स्वयं किसी न किसी गुरु के सान्निध्य में अवश्य रहा होगा, इस जीवन में भी पूर्णता के लिए एक माध्यम, एक चेतना पुंज, एक गुरु की आवश्यकता होती ही हैं अंतर केवल इतना ही है कि कुछ साधक गुरु को अनुभव करते हैं, अपने शरीर में, प्राणों में, अन्तश्चेतना में गुरु की उपस्थिति महसूस करते हैं, कुछ नहीं करते।

प्रत्येक व्यक्ति की अन्तश्चेतना में गुरु विद्यमान रहता है, परंतु बाहर का गुरु साधक को अन्तश्चेतना में बैठे गुरु का दर्शन करा देता है, और ऐसा होते ही साधनात्मक पद्धति प्रारम्भ हो जाती है।

प्रश्न- कहते हैं कि साधक या शिष्य अपने वर्तमान गुरु से पहले के जीवन में भी मिल चुका होता है, विगत जीवन का गुरु ही वर्तमान जीवन में गुरु के रूप में फिर मिलता है, यदि यह सत्य है, तो इसका अर्थ यह हुआ कि वर्तमान गुरु हमारे जन्म-जन्मान्तर के गुरु रहे हैं, फिर क्या कारण होते हैं, कि हमारा विगत जीवन के गुरु से सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है, और हमें पुनः गुरु प्राप्ति के लिए प्रयास करना पड़ता है।

उत्तर- यह सत्य है, कि गुरु का सम्बन्ध जन्म-जन्मांतर से होता है, गत जीवन का गुरु वर्तमान जीवन में भी गुरु रहता है, परंतु जब साधक जन्म लेता है, तो अपने विगत जीवन के गुरु को संस्कारवश भुला बैठता है और वह सयाना होने पर गुरु की खोज में लग जाता है।

कई बार ऐसा होता है, कि उसे गुरु मिलता है, पर मानसिक शांति नहीं मिल पाती, और कुछ समय बाद उस गुरु से धोखा खाने के बाद उसे ठोकर लगती है, बाद में प्रयत्न करने पर उसे सही गुरु मिल जाता है।

विगत जीवन में जो गुरु होता है, वही गुरु पुनः इस जीवन में जब तक नहीं मिल जाता, तब तक उसे बहुत अनिश्चिन्तता बनी रहती है, और जो शान्ति और सुख मिलना चाहिए, वह नहीं मिल पाता, ज्योंही उसे विशेष अनुभूति होने लगती है, उस गुरु के प्रति उसके भीतर उत्सर्ग, सम्मान और समर्पण की भावना प्रबल होने लगती है, गुरु की उपस्थिति में उसे आनन्द आता है, उसकी इच्छा बराबर गुरु के लिए उत्सर्गपूर्ण बनी रहती है, उसकी भावना यह रहती है, कि वह गुरु के लिए ज्यादा से ज्यादा उत्सर्ग करे, और यह बिन्दु जन्म-जन्मांतर का गुरु प्राप्त होने पर ही होता है।

प्रश्न- गुरु-दीक्षा के कितने रूप हैं? क्या गुरु-दीक्षा लेना जरूरी है? यदि हां तो क्यों? यदि कुछ सीखना ही है, तो बिना गुरु के भी सीखा जा सकता है? दीक्षा के द्वारा गुरु शिष्य के बीच कौन सा सम्बन्ध स्थापित हो जाता है?

उत्तर- जीवन में प्रत्येक कार्य व्यवस्थित रूप से हो और कम से कम समय में वह ज्ञान प्राप्त हो जाए, इसके लिए एक मार्गदर्शक, एक गुरु की आवश्यकता होती है, साधना का प्रारम्भ कहां से हो, इसकी क्या आवश्यकता होती है, इसकी क्या सीमा है, इसके मार्ग में क्या व्यवधान हैं, इन सब का ज्ञान शिष्य को तो होता नहीं, ऐसी स्थिति में यदि शिष्य पूर्णता प्राप्त करना चाहता है, तो यह आवश्यक है, कि उसे गुरु के द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त हो।

गुरु-दीक्षा के कई रूप होते हैं, परंतु व्यवस्थित और पूर्ण रूप आत्मिक रूप होता है, जहां गुरु और शिष्य में परस्पर पूर्ण सम्बन्ध स्थापित होता है, गुरु-दीक्षा से गुरु अपनी जिम्मेवारी महसूस करने लग जाता है, जब तक साधक दीक्षा नहीं लेता तब

तक आध्यात्मिक और साधनात्मक उन्नति का वह स्वयं जिम्मेवार होता है, परंतु ज्योंही वह दीक्षा ले लेता है, त्योंही उसकी जिम्मेवारी लगभग समाप्त हो जाती है, और गुरु की जिम्मेवारी कई गुना बढ़ जाती है, इसलिए व्यवस्थित और कम से कम समय में पूर्णता प्राप्त करने के लिए गुरु दीक्षा आवश्यक है।

बिना गुरु के सीखा जा सकता है, यों तो बिना पति के भी संतान उत्पन्न की जा सकती है, पर वह संतान अवैध और अव्यवहारिक होती है, इसी प्रकार बिना गुरु के सीखा जा सकता है, पर वह क्रमबद्ध और व्यवस्थित नहीं होता और न ही उससे पूर्णता प्राप्त हो सकती है, दीक्षा के द्वारा गुरु-शिष्य के बीच पारस्परिक पूर्णता का सम्बन्ध बन जाता है, और यही सम्बन्ध साधक को जीवन में सफलता दिलाने के लिए आवश्यक होता है।

प्रश्न- गुरु-शिष्य का सम्बन्ध कहां से प्रारम्भ होता है, और यह सम्बन्ध किस प्रकार का होता है?

उत्तर- वास्तव में गुरु-शिष्य का सम्बन्ध लौकिक रूप में प्रारम्भ होता है, और इन सम्बन्धों की परिणति आध्यात्मिक या साधनात्मक स्तर पर होती है, गुरु तत्व एक निराकार तत्व है, जिस पर शिष्य अपने-आपको पूर्णता के साथ समर्पित कर देता है, इसीलिए साधना के मार्ग में गुरु की उपस्थिति आवश्यक मानी गई है, जिस प्रकार अविवाहित पुत्र या अविवाहित पुत्री भटक सकती है, उसी प्रकार अदीक्षित शिष्य भी भटक सकता है। संसार में या सामाजिक जीवन में तो फिर भी यदि कोई भटकता है, तो मां, बाप, भाई-बहन, रिश्तेदार उसे समझा देते हैं, रास्ता दिखा देते हैं, **परंतु इस आध्यात्मिक या साधनात्मक जीवन में तो समझाने वाला कोई है भी नहीं, क्योंकि उस रास्ते को हर कोई जानता ही नहीं है, और जो जानता है, वह वापिस लौटता भी नहीं। इसलिए साधना पथ पर भटकने की गुंजाइश ज्यादा है, और इसलिए गुरु की आवश्यकता और अनिवार्यता भी इस क्षेत्र में ज्यादा है।**
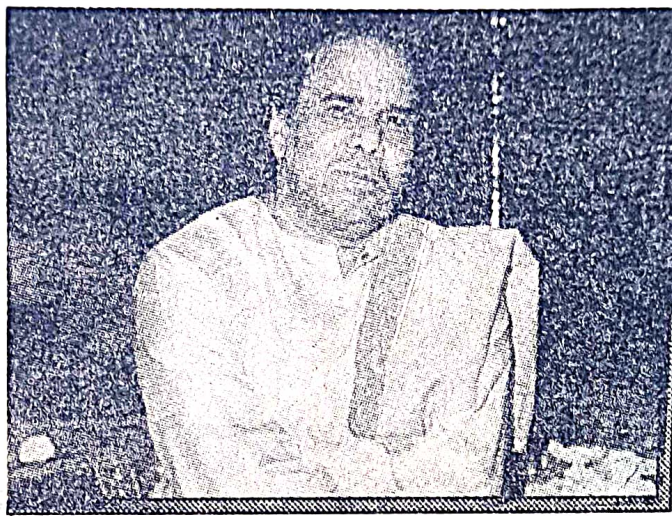
जीवन में गुरु-शिष्य का सम्बन्ध कई प्रकार से हो सकता है, यह सम्बन्ध पिता-पुत्र का, भाई-भाई का, दास्य और स्वामी का, मित्र-मित्र का हो सकता है, गीता में श्री कृष्ण ने कहा है- तू मुझे पिता, भाई, मित्र या पति समझ सकता है, इसका तात्पर्य यह है, कि तू मुझे जिस प्रकार से समझेगा, मैं उसी प्रकार से तुम्हें फल दे पाऊंगा।

कुछ व्यक्ति गुरु के पास स्वार्थ के वशीभूत होकर शिष्य बनने के लिए आते हैं, **कुछ थके-मांदे अपनी बीमारी दूर करने के लिए आते हैं, कुछ केवल मनोविनोद के लिए आते हैं,** तो कुछ पूर्णता प्राप्त करने के लिए गुरु के पास आते हैं, जिसके मन में जैसी भावना होती है, उसे वैसा ही फल मिल जाता है।

प्रश्न- गुरु से प्रत्यक्ष मंत्र ग्रहण करने से क्या लाभ होता है?

उत्तर- जब गुरु द्वारा बोला गया मंत्र शिष्य अपने कानों से सुनता है, तो उसकी आत्मा उस मंत्र को नोट कर लेती है, और इस प्रकार वह मंत्र बीज रूप में उसकी आत्मा में स्थापित हो जाता है, जैसे-जैसे वह मंत्र-साधना में प्रगति करता है, वैसे-वैसे वह बीज वृक्ष के रूप में बढ़कर पल्लवित, पुष्पित तथा फलप्रद हो जाता है।

प्रश्न- मैंने गुरु से मंत्र प्राप्त कर काफी लम्बी साधना की है, फिर भी सफलता नहीं मिली, इसका क्या कारण है? मैंने अनेक मंत्रों की साधना की, पर अब तक मेरा मन भ्रमित ही रहा है, मैं कैसे जानूं कि मेरे लिए कौन-सा मंत्र उपयुक्त है?

उत्तर- यह तो वैसी ही बात हुई कि मैंने अनेक विवाह किए, परंतु कोई भी विवाह सफल नहीं रहा, विवाह की सफलता के लिए पति-पत्नी का एकाकार होना और एक-दूसरे के प्रति परस्पर निष्ठा रखना आवश्यक है, उसी प्रकार मंत्र के लिए भी यह आवश्यक है, कि किसी स्थान में टिक कर उसकी साधना जारी रखी जाए। मंत्र बार-बार बदला नहीं जाता, इसी प्रकार गुरु भी बार-बार बदला नहीं जाता। सफलता का रहस्य यही है, कि उसे मजबूती से पकड़े रहो, भले ही तुमने जिसको पकड़ा है वह कमजोर हो, परंतु एक न एक दिन उसके सहारे मंजिल पर पहुंचोगे अवश्य ही। मंत्र साधना में ऊबना नहीं चाहिए, इसका सतत् और नियमित क्रम चालू रखना चाहिए, जिससे अवश्य ही सफलता प्राप्त हो जाती है। भौतिक जीवन में भले ही आप पति-पत्नियां बदलते रहिए, परंतु आध्यात्मिक जीवन में यह प्रवृत्ति दूर रखिए, इधर-उधर मुंह मारने की आदत साधनात्मक जीवन में नहीं चल सकती। **''एक गुरु, एक मंत्र और एक साधनात्मक पद्धति''** ही जीवन की पवित्रता कही जा सकती है।

प्रश्न- मैं एक गुरु से दीक्षा बहुत पहले ले चुका हूं, क्या मैं गुरु बदल सकता हूं?

उत्तर- पहले तो तुम्हारे मन में गुरु का तात्विक अर्थ स्पष्ट कर दूं। क्षेत्र विशेष में जो अज्ञान होता है तुम्हारे मन से उस अज्ञानता या अंधकार को दूर करने वाला तुम्हारा गुरु है, जिससे योग साधना सीखी वह तुम्हारा योग गुरु हुआ, दूसरे से तुमने चिकित्सा ज्ञान प्राप्त किया वह तुम्हारा चिकित्सा गुरु हुआ, इस प्रकार

जीवन में एक से अधिक क्षेत्र ज्ञान विशेष की दृष्टि से हो सकते हैं, और इसमें परिवर्तन सम्भव है, जब एक गुरु से सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त कर लेंगे तो दूसरे के पास जाना ही होगा, परंतु साधनात्मक गुरु इन सबसे हटकर होगा, कुछ गुरु केवल तुम्हें अपने कार्य, स्वार्थ या संगठन का पुर्जा समझकर उपयोग करते हैं, ऐसी दृष्टि से वह सही अर्थों में गुरु नहीं कहा जा सकता, वह संगठनकर्त्ता हो सकता है।

जो तुम्हें साधनात्मक दृष्टि से पूर्णता तक पहुंचाने का प्रयत्न करता है वही तुम्हारा सही गुरु है, और उसे बदलने की जरूरत नहीं है, क्योंकि उस गुरु का एक विशेष तरीका है जिसके द्वारा वह तुम्हें पूर्णता तक पहुंचाने का प्रयत्न करता है, उसे छोड़कर जब तुम फिर दूसरा गुरु करोगे, फिर तीसरा गुरु करोगे तो यह क्रम समाप्त नहीं होगा, और तुम्हें अपने जीवन में पूर्णता भी प्राप्त नहीं होगी।

प्रश्न- कहते हैं जो जीवन दान करते हैं वे जीवनदानी कहलाते हैं, इसका क्या तात्पर्य है?

उत्तर- जब दीक्षा ही ले ली, तो अपना सब कुछ गुरु के चरणों में समर्पित कर दिया, परंतु आज के इस व्यस्त युग में गुरु कहीं और रहता है, शिष्य उससे सैकड़ों-हजारों मील दूर अपने परिवार के बीच रहता है, ऐसी स्थिति में निरन्तर सम्पर्क नहीं रह सकता, फलस्वरूप वह जीवन में पूर्णता नहीं प्राप्त कर सकता।

शास्त्रों की मर्यादा के अनुसार कुछ साधक अपना पद, प्रतिष्ठा, मकान, धन, वैभव आदि छोड़कर पूर्ण रूप से स्वयं या अपनी पत्नी के साथ हमेशा-हमेशा के लिए गुरु गृह में उनके चरणों में सशरीर रहने के लिए आ जाते हैं, उनकी स्वयं की कोई इच्छा या आकांक्षा नहीं होती, साथ ही वे अपने परिवार से या परिवार के सदस्यों से किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं रखते, इस प्रकार के उत्सर्गमय जीवन देने वालों को जीवनदानी साधक या शिष्य कहा जाता है, और ऐसे शिष्य ऊंचे उठकर समय आने पर सूर्य की तरह देदीप्यमान होते हैं।

प्रश्न- गुरु को शिष्य का कर्म भोगना पड़ता है, यह बात सत्य है क्या?

उत्तर- यह सत्य है, गुरु-शिष्य का सम्बन्ध बहुत गहरा होता है, जब गुरु और शिष्य दोनों आत्मिक भावयुक्त हो जाते हैं तो दोनों की अन्तश्चेतना परस्पर मिल जाती है, ऐसी स्थिति में गुरु के संचित पुण्य शिष्य को मिल जाते हैं, और शिष्य के संचित पाप गुरु को भोगने पड़ते हैं, इन शिष्यों के संचित पापों को भोगने की प्रतिबद्धता के कारण ही गुरु को लौकिक जीवन में कई बाधाओं, कष्टों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है, इसीलिए गुरु को कम से कम शिष्य बनाने चाहिए, जिससे कि वह कम से कम शिष्यों के संचित पापों को भोगने के लिए बाध्य हो।

प्रश्न- लौकिक जीवन में गुरु को भी जब अभावग्रस्त, दुःखी और विविध समस्याओं से युक्त देखते हैं तो आस्था डगमगा जाती है, वे तो समर्थ होते हैं, फिर वे इस प्रकार की समस्याएं और दुःख क्यों भोगते हैं?

उत्तर- यदि तुम्हारा विश्वास इन लौकिक समस्याओं को देखकर डगमगा रहा है तो तुम शिष्य बने ही नहीं हो, केवल शिष्य बनने का ढोंग करते हो, शिष्य तो गुरु में आत्मसात होता है, उसके सुख-दुख, पीड़ा, चेतना में समान रूप से भागीदार होता है।

शिष्य के पाप और कुकर्म भी गुरु को भोगने पड़ते हैं, **पातंजल शास्त्र** में इस बारे में स्पष्ट व्याख्या है, उन शिष्यों के दोषों को अपने ऊपर ओढ़ने की वजह से ही गुरु को लौकिक जीवन में दुखी, परेशान, अभावग्रस्त या समस्याग्रस्त देखते हैं, वास्तव में यह एक माया का आवरण है, जो तुम्हें गुरु के दुख या गुरु की समस्याएं दिखाई देती हैं, वह वास्तव में ही उनकी स्वयं की न होकर शिष्यों की होती हैं, यह तो तुम लोगों का सौभाग्य है कि तुम्हें उच्च कोटि के गुरु मिल गए और उन्हें अपने दुख और समस्याएं, कुकर्म और पाप दे दिए और तुम इन सबसे लगभग मुक्त से हो गए।

ऐसी स्थिति में जब तुम शिष्य हो, तो तुम्हारी धड़कनों पर इन दुखों या गुरु की समस्याओं का अनुभव होना चाहिए, और तुम्हारा नैतिक कर्त्तव्य होता है कि ऐसी स्थिति में आगे बढ़कर सहयोग दें, सेवा करें और ज्यादा से ज्यादा उनके प्रति अनुरक्त रहें।

प्रश्न- वे शिष्य जो गुरु के आश्रम में निवास नहीं करते, किस प्रकार से गुरु सेवा कर सकते हैं?

उत्तर- सेवा का तात्पर्य है, आत्मा की शुद्धि, वह गुरु से दूर अपने परिवार के बीच रहकर के भी की जा सकती है, गुरु की शिक्षाओं का पालन परिवार में रहकर भी किया जा सकता है, गुरु का अधिकांश समय चिन्तन-मनन और उच्च तत्वों की प्राप्ति और तपस्या के लिए समर्पित होता है, ऐसी स्थिति में गुरु की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते रहना भी शिष्यों का कर्त्तव्य होता है, इसलिए मासिक या वार्षिक तौर पर गुरु के आश्रम को चलाने के लिए अपनी आमदनी का कुछ न कुछ भाग शिष्यों को नियमित रूप से भेजते रहना चाहिए, गुरु पूर्णिमा या गुरु जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में भी उनकी सेवा की जा सकती है, **गुरु द्वारा निर्मित साहित्य के प्रचार-प्रसार या प्रकाशन में सहयोग देना, अपने बंधु-बांधवों के बीच उनके प्रकाशित साहित्य को वितरित करना भी शिष्यों का परम कर्त्तव्य होता है, इस प्रकार से शिष्य गुरु से दूर रहकर भी उनकी सेवा कर सकता है।**

जगदम्बे!
भगवती शरणाष्टकम्

अशिवस्तुतस्ते शिवनामधेयः
विपरीत कर्माऽधर्माऽतिचारी
त्वमेका गतिस्तस्य भ्रान्तस्य मातः
चरणाम्बुजे ते पापः नतोऽसौ ।।१।।

हे मां! तुम्हारा यह अशिव पुत्र विपरीत कर्म करने वाला अधर्मी और अत्याचारी है, इस भूले-भटके की तुम्हीं एकमात्र गति हो, यह पापी आप के चरण-कमलों में नमन करता है।

मातः प्रपन्नस्त्वामस्मि जातः
अज्ञः सुतोऽहं तव पापपीतः
विषयेषु मग्नः खलमोहमूढः
एकोऽवलम्ब करुणा त्वदीया ।।२।।

हे मां। तुम्हारा यह पुत्र दुखी है, अज्ञानी है, पापपूर्ण है, विषयों में आसक्त रहता है। खल और मूढ़ है, तुम्हारी एक मात्र करुणा ही मेरा सहारा है।

कृतं न पुण्यं चरितं न धर्मः
दानं न दत्तं न तप्तं तपो वा
न जानामि शास्त्रं जपयोग ध्यानं
माता कृपा ते आशा ममैका ।।३।।

हे मां! मैंने न कोई पुण्य किया, न धर्म किया, न दान दिया, न कोई तप किया। ना तो मैं किसी प्रकार के जप, योग, ध्यान व शास्त्र को जानता हूं, तेरी कृपा ही मेरी एकमात्र आशा है।

भवती हि जननी गरिमा महीयसी
करुणाक्षमा ते सहजस्वभावः
पापे वरिष्ठः अधदर्पितोऽहम्
मातः! सुतोऽसौ खलु रक्षणीयः ।।४।।

हे मां! आप बहुत गरिमामयी हैं, करुणा और क्षमा आपका सहज स्वभाव है। मैं अति पापी और अहंकारी हूं। फिर भी आपका पुत्र हूं और रक्षा योग्य हूं।

ममतामयी त्वं माताऽस्मदीया
पुत्रा वयं ते कृतभूरिदोषाः
शरणं न अन्यं क्वचिदस्ति मातः
शरणाश्रयं ते अम्बे भजामः ।।५।।

तुम मेरी ममतामयी माता हो और मैं दोषयुक्त पुत्र हूं। हे मां! तुम्हारे अतिरिक्त कोई मेरा सहारा नहीं है, तुम्हारे चरणों का आश्रय लेकर ही मैं तुम्हारा भजन करता हूं।

भक्तिं प्रयच्छ मातः विमलां मतिं च
मदकाममोह रहितं कुरु मानसं मे
सद्असद्विवेकं अमलञ्च ज्ञानम्
प्रयच्छ माता शरणं शरण्ये ।।६।।

हे मां! मुझे अपनी भक्ति प्रदान करो, निर्मल बुद्धि से युक्त बनाओ, मेरे मन को अहंकार, काम, क्रोध और मोह से रहित बनाओ, मुझे सत् और असत् का विवेक करने वाला निर्मल ज्ञान दो। मैं आपकी शरण में हूं।

एकं वरं त्वामम्बे हि याचे
अचलाऽस्तु निष्ठा गुरुपादपद्मे
शिवस्वरूपस्य गुरोश्च करुणा
बलमस्तु मे निःश्रेयस प्राप्तिहेतोः ।।७।।

हे मां! मैं आपसे एक ही वरदान मांगता हूं कि शिव - स्वरूप, करुणामय - गुरु के प्रति अविचल श्रद्धा और निष्ठा मेरे हृदय में हो, जो मेरे बल और निःश्रेय प्राप्ति का हेतु है।

चरणौ जनन्याः शरणास्थलौ नः
सुखाकरौ खलु त्रय तापहारकौ
स्त्रोतौ च भक्तयाः ज्ञानस्य विमलौ
पोतौ भवाब्धोर्नः तारकौ तौ ।।८।।

हे मां! आपके चरण-कमल ही हमारे लिए शरणप्रदाता हैं, सुखकारी हैं, त्रयतापहारी हैं, भक्ति के स्त्रोत हैं, निर्मल ज्ञान दाता हैं तथा भवसागर से पार उतारने के लिए जहाज स्वरूप हैं।

प्रस्तुति- भुवनेश्वर भारतीय

लखनऊ में ललिताम्बा षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना

एक अद्वितीय समारोह

भारत का हृदय प्रदेश है "उत्तर- प्रदेश" और उत्तर प्रदेश का हृदय है 'प्राचीन अवध प्रांत'। जिसकी मुख्य नगरी **लखनऊ** अर्थात् वर्तमान उत्तर- प्रदेश की राजधानी और प्राचीन परम्पराओं के अनुसार मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के अनुज भगवान श्री लक्ष्मण द्वारा स्थापित नगरी लक्ष्मणपुर। अयोध्या यदि मर्यादा पुरुषोत्तम की लीलाओं का केन्द्र है, तो लक्ष्मणपुर उन्हीं के सहचर और अनुज की गतिविधियों का केन्द्र है। अयोध्या और लखनऊ के बीच की सारी धरती ही राममय है, लक्ष्मणमय है, सीतामय है और हनुमानमय है। दूसरे शब्दों में कहें तो मर्यादामय है, प्रेममय है, करुणामय है और सेवामय है। यह अनायास ही नहीं है कि आज भी इस धरती का इतिहास सम्पूर्ण भारत से बहुत कुछ अलग हटकर है, इस भीषण झुलसते वातावरण में भी सौहार्द्रमय है, जहां अभी भी परस्पर टकराव की घटनाएं या वैमनस्य की घटनाएं नहीं के ही बराबर हैं, क्योंकि यह सारी भूमि जहां एक ओर अनेक साधु, सन्तों, मनीषियों एवं तपस्वियों की भूमि रही है वहीं मुस्लिम, पीर, फकीर, सूफी - सन्तों के भी इबादत की भूमि रही है, जिन्होंने अपने व्यवहार और उपदेश से साम्प्रदायिक सद्भाव की ऐसी नींव डाली जो आज तक इस प्रदेश की थाती है।

ऐसे ही जन भावनाओं की केन्द्र पर, इस भूमि पर **'सिद्धाश्रम साधक परिवार'** की ओर से सात दिवसीय नवरात्रि शिविर का आयोजन सम्पन्न किया जा रहा है। प्रत्येक वर्ष जिस स्थान का चयन किसी साधना शिविर के लिए होता है, उसकी साधनात्मक महत्ता तो गुरुदेव ही जानते हैं। फिर भी यदि सामान्य दृष्टि से देखें तो इस वर्ष का यह महत्वपूर्ण शिविर एक ऐसे स्थान पर हो रहा है जो अपने- आप में तीर्थ स्थानों का केन्द्र है। एक ओर अयोध्या और वाराणसी जैसी तीर्थ स्थल, तो दूसरी ओर प्रयागराज जैसा पावनतम् स्थान, और तीसरी ओर नैमिषारण्य का अतिविख्यात तीर्थ स्थल। लखनऊ इन सबके समन्वय की भूमि है, और इसी कारणवश यहां की संस्कृति को गंगा- जमुनी संस्कृति कहा गया है। ऐसे स्थान पर शिविर सम्पन्न होना अपने- आप में सचमुच एक विलक्षण अनुभव होगा। यों तो वर्ष १९८८ में लखनऊ के साधक गुरु - पूर्णिमा का आयोजन कर अपनी कार्य कुशलता और क्षमता प्रदर्शित कर ही चुके हैं, किन्तु यह नवरात्रि शिविर तो एक नवीन अनुभव होगा।

नवरात्रि का पर्व वास्तव में गुरु चरणों में मनाया जाने वाला पर्व ही है। अनेक साधकों की यह मनः स्थिति रहती है कि यह तो शक्ति का पर्व है और इसको हम घर पर नवार्ण मंत्र जप कर सम्पन्न कर सकते हैं। किन्तु यह धारणा अधूरी है, शक्ति का पर्व तो वास्तव में गुरु- चरणों में ही बैठ कर मनाया जाता है। जो साधक तांत्रोक्त परम्परा से गुरु पूजन करते हैं, वे जानते हैं कि किस प्रकार गुरु और शक्ति का सम्बन्ध अभिन्न होता है, और किस प्रकार मात्र गुरु- चरणों के पूजन से ही सम्पूर्ण शक्ति- पूजन भी सम्पन्न हो जाता है। **श्री गुरु तंत्र** में इस विषय में स्पष्ट कहा गया है —

यस्तु सम्पूजयेच्चण्डीं गुरुं ब्रह्म - स्वरूपिणीम्।
तस्य तुष्टौ भवेन्नित्यं शिवश्चाहं न संशयः।।

अर्थात् ब्रह्म स्वरूप गुरुदेव रूपा चण्डी देवी की समुचित रूप से पूजा करने वाले के प्रति मैं शिव सदा सन्तुष्ट रहता हूं। हे देवि! मेरे सन्तोष से तुम्हारी भी उस व्यक्ति पर प्रीति होती है जिससे वह शीघ्र ही जीवन मुक्ति का लाभ प्राप्त कर लेता है।

इसी को यदि और विस्तार में जाकर देखें तो शक्ति के दो भेद किए गए हैं— कुल एवं अकुल। अकुल का तात्पर्य है - ब्रह्माण्ड रूप में शक्ति का स्वरूप अर्थात् महादेवी, और वही पिण्ड रूप में अर्थात् कुल रूप में जीव के अन्दर मूलाधार में कुण्डलिनी के रूप में प्रसुप्तावस्था में रहती है, जिसका जागरण गुरु के बोध द्वारा ही सम्भव होता है। इसीलिए गुरु की संज्ञा शाक्त परम्परा में कौल

ही सम्भव होता है। इसीलिए गुरु की सज्ञा शाक्त परम्परा में कौल के रूप में दी गई है, और कौल धर्म का पालन करने वाले शिष्य को ही सर्वोच्च कहा गया है। शास्त्रीय जटिलता और विधि- विधान की बात यदि और आगे नहीं बढ़ाएं तब भी व्यवहार रूप में आप सभी शिष्यों और साधकों ने इस बात का प्रत्यक्ष अनुभव किया है कि किस प्रकार पूज्यपाद गुरुदेव स्वयं मातृ स्वरूपा ही बनकर साधनाएं सम्पन्न कराते हैं। जिन्होंने पिछली नवरात्रियों में अथवा किसी भी साधना शिविर में भाग लिया हो, वो इस बात का अनुभव पूर्णता से कर सके हैं।

यों तो हर साधना शिविर ही अपने - आप में अनूठा प्रयास होता है। अल्प काल में ही शिष्यों की अनेक समस्याओं और साधना सम्बन्धी जटिलताओं का समाधान देने के लिए, किन्तु नवरात्रि का शिविर इस रूप में विशिष्ट होता है कि इसमें साधक के सामने पर्याप्त समय होता है। अन्य साधना शिविरों की अपेक्षा इसमें ठहराव होता है और साधक, साधनाओं की जटिलता का एक - एक पग समझते हुए, उसे आत्मसात् करते हुए आगे बढ़ने की क्रिया सम्पन्न करता है। शक्तिमयता के ये दिवस तो होते ही हैं, मां भगवती जगदम्बा के त्रिगुणात्मक स्वरूपों के फल- वर्षा के दिन तो होते ही हैं और जब इनका संयोग गुरुमयता से हो जाता है तो मानों तीव्र उफनती नदी को एक प्रारूप देकर उसके ऊर्जा के संरक्षण और सदुपयोग की बात भी सम्पन्न हो जाती है। **शक्ति का उद्भव करना उसे अपने शरीर में जाग्रत करना फिर भी कठिन नहीं है किन्तु उसे नियन्त्रित करना अत्यन्त कठिन और दुष्कर कार्य है, और इसी स्थान पर आकर एक बार पुनः सद्गुरु की महत्ता प्रकट होती है। जो साधक को न केवल शक्ति से परिचित कराते हैं, वरन् उसके सदुपयोग का क्रम भी बताते हैं।**

एक प्रकार से यह नवरात्रि ही इस वर्ष की महत्वपूर्ण नवरात्रि है, क्योंकि यह **'हीरक जयन्ती वर्ष'** की नवरात्रि जो है। पूज्यपाद गुरुदेव की षष्ठी पूर्ति पर्व की संयुक्ति जो लिए हुए है और इसके फल स्वरूप पूज्य गुरुदेव के विशेष आशीर्वाद से भी अभिसिक्त हो गयी है। पूज्यपाद गुरुदेव ने तो सदैव परम्पराओं और रूढ़ियों पर चोट की है, जीवन का कोई भी क्षेत्र हो उसमें नवीनता को अपनाने पर बल दिया है, और यही पुनः एक बार प्रदर्शित होगा इस आश्विन नवरात्रि में, जिसका एक - एक दिन किसी परम्परा अथवा घिसे - पिटे ढंग से न मनाकर श्रद्धा व आनन्द से मनाया जाएगा, प्रत्येक दिन एक नया प्रयोग सम्पन्न कराया जाएगा। जिसमें जीवन के भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही पक्ष सम्मिलित होंगे। दीक्षाओं, शक्तिपात और कुण्डलिनी जागरण का क्रम तो रहेगा ही। अनेक जागरुक साधकों ने सूक्ष्म बुद्धि का परिचय देते हुए, अवसर का लाभ लेकर पूज्यपाद गुरुदेव से सम्पूर्ण **१०८ दीक्षाओं** को प्राप्त करने का जो क्रम प्रारम्भ किया है उसका अगला चरण भी इसी नवरात्रि में सम्पन्न होगा। साथ ही जो सौभाग्यशाली नये साधक इस ओर लालायित होंगे उनके जीवन में भी एक स्वर्णिम पृष्ठ इसी नवरात्रि में जुड़ेगा। यदि साधक चाहे तो इसी महत्वपूर्ण पर्व का उपयोग उन २१ दीक्षाओं को भी प्राप्त करने में कर सकते हैं, जिनका विवरण पत्रिका के इस अंक में किया गया है और जो अपने - आप में प्रत्येक गृहस्थ साधक के लिए सम्पूर्ण क्रम होगा।

इसी नवरात्रि शिविर में जहां पूज्यपाद गुरुदेव अपने समस्त शिष्यों को **शक्तिपात युक्त ब्रह्मत्व दीक्षा** प्रदान करेंगे, वहीं इसी दीक्षा का उच्चतर सोपान **पूज्यपाद परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द हृदय धारण प्रयोग** भी सम्पन्न कराएंगे, और इन दोनों क्रियाओं के समवेत फलस्वरूप साधक प्रथम बार उस अलौकिक आनन्द व समाधि सुख का अनुभव कर सकेंगे, जिससे वे अपने जीवन के तनाव, विसंगतियों एवं द्वंद्वों से परे हो सकें। किन्तु यह स्थिति तब तक अपूर्ण है जब तक साधक का भौतिक जीवन भी परिपूर्ण न हो, अन्यथा जब साधक समाधि की भाव - भूमि से अपने भौतिक जीवन में लौटता है, उसकी विसंगतियों को देखता है तो उसके जीवन में कटुता के अतिरिक्त कुछ रह ही नहीं जाता। **जब तक भौतिक जीवन सुदृढ़ नहीं होगा तब तक ध्यान, धारणा और समाधि का भी कोई अर्थ नहीं है, क्योंकि आज का साधक जंगल में जाकर साधना करने वाला साधक नहीं है** वरन् समाज का ही एक अंग है, इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर पूज्यपाद गुरुदेव जहां **लक्ष्मी कल्पवृक्ष प्रयोग** सम्पन्न कराएंगे, वहीं सर्वथा नवीन पद्धति से साधक को केवल **बगलामुखी साधना** मात्र सम्पन्न ही नहीं कराएंगे, वरन् उसके शरीर में बगलामुखी का स्थापन भी करायेंगे, जिससे जहां एक ओर जीवन में किसी कामना की पूर्ति जैसी बात हो वहीं किसी बाह्य आघात से जीवन के छिन्न- भिन्न होने का खतरा भी न रहे, जहां कोई काम्य प्रयोग सम्पन्न कराना सद्गुरु की एक क्रिया होती है, वहीं उसको स्थायित्व देना और अपने शिष्य को सुरक्षा चक्र देना भी सद्गुरु की ही क्रिया होती है अन्यथा किसी प्राप्ति का कोई महत्व रह ही नहीं जाता।

इसी नवरात्रि के किन्हीं दिनों में उचित मुहूर्त पर (जिसे पूज्यपाद गुरुदेव ने गोपनीय रखा है) **रतिकाम सौन्दर्य प्रयोग** भी सम्पन्न कराया जायेगा जिससे साधक के जीवन में अतिरिक्त ओज व उत्साह आ सके। **देवत्व प्राप्ति दीक्षा** एवं **सिद्धाश्रम गमन प्रयोग** भी इसी नवरात्रि में सम्पन्न कराये जाएंगे। ये तो कुछ उदाहरण हैं और इस विशेष पर्व की एक झलकी है, कि कितना कुछ सम्पन्न होगा इन्हीं दिनों में जबकि कुछ ऐसी भी घटनाएं होती हैं जिनकी घोषणा प्रारम्भ से करना उचित नहीं होता है, जो शास्त्रीय मर्यादा में बंधे होने के कारण पहले से व्यक्त नहीं की जा सकती है, किन्तु सद्गुरु के शक्ति प्रवाह द्वारा सम्पन्न तो होती ही है, और ऐसी कौन - कौन सी घटनाएं सम्पन्न होंगी इनकी प्रतीक्षा में देश के समस्त साधक अभी से आतुर हो चुके हैं, **क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव के शब्दों में–'यह नवरात्रि मात्र एक साधना शिविर नहीं है, अपितु मेरे प्रत्येक शिष्य के जीवन में आने वाली एक परिवर्तनकारी घटना है'।**

सुमुखी काली

दक्षिण काली साधना में सर्वाधिक प्रमुख स्थान तंत्र द्वारा काली को जागृत कर अपनी अभीष्ट सिद्धि हेतु शक्ति प्राप्त करना ही है। इस साधना में सुमुखी साधना सर्वाधिक प्रमुख है। यह एक अत्यन्त गोपनीय पराविद्या है। इस साधना को संपन्न कर साधक मूल रूप से कर्म और अकर्म से मुक्त होकर तीव्रतम सिद्धि प्राप्त करता है। वह वास्तव में वाम मार्ग की साधना है।

तंत्र साधना में सर्वाधिक प्रमुख स्थान महाकाली साधना को ही दिया गया है, और जो साधक तंत्र में पूर्ण सिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं, तंत्र के माध्यम से अप्राप्य को प्राप्त करना चाहते हैं, तो उन्हें काली साधना करनी ही पड़ेगी। यह आवश्यक नहीं कि काली साधना केवल संन्यासी ही कर सकता है। गृहस्थ व्यक्ति भी इस साधना को संपन्न कर सकते हैं, और **काली तंत्र** अपने-आप में इतना अधिक विशाल है कि साधक के लिए यह कठिन हो जाता है कि वह मां काली के किस स्वरूप की साधना करे, जिसके परिणाम स्वरूप वह तंत्र के दुर्गम क्षेत्र में प्रगति कर अपनी गृहस्थ जीवन की समस्त इच्छाओं, कामनाओं की पूर्ति कर सके।

काली का सर्वोत्तम सौन्दर्य स्वरूप-सुमुखी

काली का स्वरूप सामान्य साधक के लिए अत्यन्त डरावना है, क्योंकि दक्षिण काली का स्वरूप ही विशाल मुख, खुले केश, गले में मुण्डमाला, चार भुजाएं, बाएं ऊपरी हाथ में अभय मुद्रा, निचले हाथ में तुरन्त कटामुण्ड है, इसी प्रकार दाहिने ऊपरी हाथ में खड्ग तथा निचले हाथ में वरमुद्रा है, कानों में दो शंव लटक रहे हैं, कमर में शव करधनी है। वे श्याम वर्ण तथा श्मशान निवासिनी हैं। ऐसे स्वरूप की सीधे साधना करना प्रत्येक साधक के लिए दुष्कर है। **इसलिए उसे काली के उस सौन्दर्यतम स्वरूप की साधना करनी चाहिए, जिसे वे अपने हृदय में स्थापित कर सकें।**

दक्षिण काली का सर्वाधिक सुन्दरतम स्वरूप सुमुखी है। जो वाम मार्ग की साधना होते हुए भी गृहस्थ साधकों के लिए उपयुक्त है, और सबसे बड़ी बात यह है कि काली के इस स्वरूप की साधना के लिए न तो श्मशान जाने की आवश्यकता है, न ही शिवालय, यह तो अपने घर में एकान्त स्थान में बैठ कर की जा सकती है।

सुमुखी को पराविद्या कहा गया है, क्योंकि यह साधना साधक तंत्र सिद्धि के लिए सम्पन्न करता है, जिसमें वशीकरण भी है, शत्रु मारण भी, और भाग्यहीनता-निवारण भी।

सुमुखी स्वरूप

रक्त वर्ण के आभूषणों से विभूषित, लाल वस्त्र धारण किए, लाल रंग के आलेपन से सुशोभित कमनीय कांति वाली विकसित यौवन, गुञ्जाहार से सुशोभित, उच्च स्तनों वाली जिनके

दाहिने हाथ में खड्ग तथा बाएं हाथ में नर कपाल है, और जो शव पर आसीन हैं, ऐसी परम सुन्दरी सुमुखी अपने साधकों को सदैव सम्पत्ति प्रदान करती हैं।

यह मोहिनी विया की तंत्र साधना है, जिसमें साधक को किसी प्रकार के विशेष आचार-विचार की आवश्यकता नहीं है, और यह साधना रात्रि समय भोजन करने के पश्चात् ही की जा सकती है।

सुमुखी साधना में इनकी १६ शक्तियों-कला, कलानिधि, काली, कमला, क्रिया, कृपा, कुला, कुलिना, कल्याणी, कुमारी, कलाभाषिणी, कराला, किशोरी, कमल, कुलभूषणा एवं कैल्पदा का पूजन भी अवश्य किया जाता है। इन शक्तियों से सिद्ध सुमुखी का सौन्दर्यमय स्वरूप अत्यन्त प्रिय बन, साधक को शांत मन से उस साधना की ओर प्रेरित करता है, जिसमें सुमुखी प्रसन्न होकर अपनी शक्तियों के साथ साधक के हृदय में स्थापित होकर, उसे शक्ति से सिंचित कर देती हैं।

सुमुखी साधना सम्पन्न किया हुआ साधक ही वास्तव में काली तंत्र की अन्य साधनाओं में सिद्धि प्राप्त करने का अधिकारी बनता है।

सुमुखी साधना मूल रूप से सम्पत्ति साधना है, क्योंकि काली साधना के दूसरे स्वरूपों में सम्पत्ति के स्थान पर शत्रु विजय, तीव्रता, संहार इत्यादि पर विशेष जोर दिया गया है, जहां मारण विद्वेषण, उच्चाटन, कीलन हेतु दक्षिण काली साधना उपयुक्त है वहीं सम्पत्ति के लिए दक्षिण काली के सौन्दर्यतम स्वरूप सुमुखी की साधना करना ही उपयुक्त है, अनिवार्य है।

सुमुखी साधना विधान

इस साधना में मूलतः **मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठा युक्त ताम्र पत्र अंकित सिद्धि दायक सुमुखी यंत्र** तथा **हरित हकीक सम्पत्ति माला** आवश्यक है। इसके साथ ही सुमुखी साधना में पूजन केसर मिश्रित चंदन से ही किया जाता है।

यह साधना किसी भी रविवार की रात्रि को प्रारम्भ की जा सकती है, और पूर्ण विधान में एक लाख मंत्र का जप आवश्यक है।

यंत्र स्थापना

रविवार की रात्रि को साधक लाल वस्त्र पहनें, स्वयं को लाल रंग का टीका लगाएं अपने सामने एक लाल वस्त्र बिछाकर मध्य में सुमुखी महायंत्र की स्थापना करें। सबसे पहले विनियोग, फिर ध्यान, तदन्तर गुरु पूजा और सुमुखी मंत्र का उच्चारण करते हुए देवी को अर्घ्य, आचमन, नैवेद्य अर्पित करें।

विनियोग

ॐ अस्य सुमुखी मंत्रस्य भैरवऋषिर्गायत्री छन्दः सुमुखी देवता ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।।

प्रथम आवरण पूजन

यंत्र मध्य में सुमुखी देवी का ध्यान कर केसर से बिन्दी लगाएं तथा उस पर लाल रंग से रंगे हुए अक्षत अर्पण करें, उसके पश्चात् सिंदूर के पांच बिन्दु लगाकर देवी की पंच रत्न की शक्तियों का पूजन करे — ॐ चन्द्रायै नमः, ॐ चन्द्राननायै नमः, ॐ चारूमुखै नमः, ॐ चारूकरप्रभायै नमः, ॐ चतुरायै नमः।।

मंत्र बोलते हुए पूजन करें तथा पुष्पांजलि अर्पित करें।

द्वितीय आवरण पूजन

यंत्र में शक्तियों ॐ कलायै नमः, ॐ कलानिधयै नमः, ॐ काल्यै नमः, ॐ कमलायै नमः, ॐ क्रियायै नमः, ॐ कृपायै नमः, ॐ कुलायै नमः, ॐ कुलीनायै नमः, ॐ कल्याणै नमः, ॐ कुमार्यै नमः, ॐ कलाभाषिण्यै नमः, ॐ करालायै नमः, ॐ किशोर्यै नमः, ॐ कमलायै नमः, ॐ कुलभूषणायै नमः, ॐ कल्पदायै नमः का पूजन करें तथा पुष्पांजलि अर्पित करें।

इसके पश्चात् १० दिक्पालों का पूजन कर, मूल मंत्र एवं अभिष्ट सिद्धि की प्रार्थना कर, पुष्पांजलि अर्पित करें।

इस प्रकार आवरण पूजा कर देवी के मूल मंत्र का जप प्रारम्भ करें। यहां विशेष बात यह है कि पूजा के प्रारम्भ में देवी को जो नैवेद्य अर्पित किया था, उसे खाकर बिना आचमन-कुल्ला इत्यादि किए उच्छिष्ट मुख से ही मूल मंत्र का जप करना आवश्यक है।

सुमुखी महामंत्र

उच्छिष्ट चाण्डालिनी सुमुखिदेवि महापिशाचिनि
ह्रीं ठः ठः ठः।

साधक के लिए यह आवश्यक है कि वह प्रतिदिन पूजन करते हुए कुल १० हजार मंत्रों का जप अवश्य करें। इससे देवी प्रसन्न होकर उसे आर्थिक अनुकूलता प्रदान करती हैं। इसके अतिरिक्त कुछ विशेष प्रयोग भी हैं। इस साधना में मंत्र-जप के पश्चात् उसका दशांश हवन करने से अनेक कार्य सिद्ध होते हैं। इस मंत्र का जप करते हुए मधु सहित बेर के पुष्पों के हवन से भाग्यहीन स्त्री सौभाग्यवती होती है।

मधु (शहद) घी एवं पान के हवन से श्री वृद्धि होती है तथा लक्ष्मी का आगमन किसी न किसी रूप से अवश्य होता है।

घी मिलाकर बेल पत्रों की एक हजार आहुति प्रतिदिन देने से एक माह में संतानहीन स्त्री को संतान प्राप्त होती है।

इस प्रकार महाकाली साधना क्रम में यह साधना विशेष सौम्य, शांत एवं गृहस्थ व्यक्तियों के लिए तत्क्षण फल प्रदाता साधना है।

• राजेश गुप्ता
दिल्ली

गुरु पूर्णिमा महोत्सव

पानीपत

जहां! किसी का पतन होता है वहीं से उसका उत्थान भी होता है, जहां कुछ विनष्ट हुआ होता है वहीं से निर्माण भी प्रारम्भ होता है, यही जीवन का चक्र है- इन गुरु वचनों के साथ प्रारम्भ हुई हीरक जयन्ती वर्ष की ऐतिहासिक गुरु पूर्णिमा की स्वर्णिम रात्रियां और इन दो वाक्यों में कितना कुछ छुपा हुआ है- गुरु का अर्थ, गुरु पूर्णिमा का महत्व, आने वाले सुखद भविष्य का संकेत और साधनामयता का महत्व।

चार दिवसीय शिविर जिसके लिए १८ तारीख की प्रातः से ही पानीपत के आयोजन स्थल होटल सिंगला पैलेस में सारे भारत के साधकों की भीड़ उमड़ पड़ी। प्रथम दिवस का पूज्य गुरुदेव का आह्वान एवं आशीर्वचन समारोह इन्हीं रिमझिम फुहारों के बीच में ही हुआ, किन्तु जिनके हृदय पर ही रिमझिम फुहारें पड़ रही हों, गुरुवचनों की, वे किन्हीं और बूंदों को क्यों कुछ समझने लगे। प्रथम दिवस का आयोजन, **पूज्यपाद गुरुदेव श्रीयुत नंद किशोर श्रीमाली जी** द्वारा सम्बोधन, पूज्य गुरुदेव का आशीर्वचन— ये सब तो उपादान थे जिनके द्वारा साधकों को एक नया जीवन और हिलोर दी गयी।
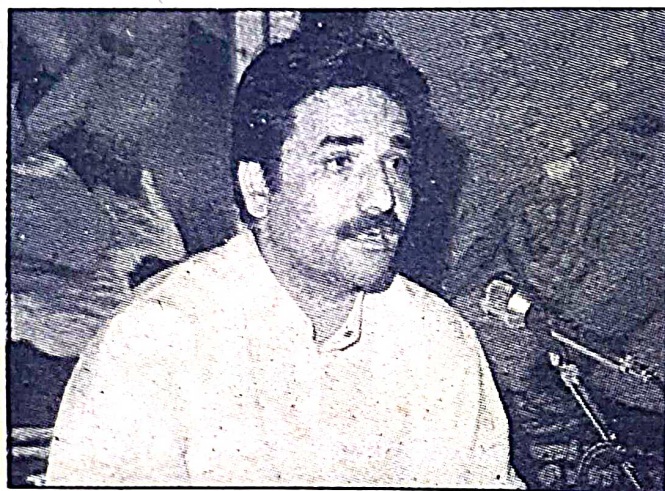
प्रथम दिवस यदि आत्मीयता और पूज्य गुरुदेव द्वारा पितृ स्वरूप में शिष्यों को सम्हालने की घटना थी तो वहीं अगला दिवस था साधनामयता का, उत्सवमयता का और जीवन के इन दोनों छोरों का मिलन पूज्य गुरुदेव ने सम्भव कराया **कुण्डलिनी जागरण प्रयोग** के माध्यम से। **जिन साधकों ने इस प्रयोग में भाग लिया उन्होंने अनुभव किया कि किस प्रकार पूज्य गुरुदेव के दीक्षा देने के क्षणों में एक अनोखी ऊर्जा**

उनके रोम-रोम से बहकर साधक के सारे शरीर में व्याप्त हो जाती है। साधकों के भौतिक जीवन में कोई अभाव न रहे इसी कारणवश पूज्य गुरुदेव ने **महालक्ष्मी प्रयोग** भी सम्पन्न कराया तथा स्वयं अपनी उत्सवमयता से प्रकट किया कि किस प्रकार जीवन तो प्रत्येक क्षण जीने की घटना है, इसी हेतु ईश्वर की ओर से दिया गया उपहार है। इन क्षणों को सुंदरतम बना देने के लिए सम्हाली **श्री गुरु सेवक जी** एवं **श्री गणेश वटाणी जी** ने जबकि समस्त शास्त्रीय विधि-विधानों व यज्ञ मण्डप की क्रिया का निर्देशन कर रहे थे संस्था के वरिष्ठ संन्यासी **डॉ० राम चैतन्य शास्त्री।** जिन क्षणों में उन प्रयोगों **(लक्ष्मी कल्पवृक्ष प्रयोग एवं सिद्धाश्रम प्राप्ति प्रयोग)** को पूज्यपाद गुरुदेव ने सम्पन्न कराया, उन क्षणों की भाव विह्लता और साधकों की करते जा रहे थे, गुरुधाम जोधपुर में सेवारत **श्री चेतन चौहान** एवं स्टिल फोटोग्राफी का कार्य संभाल रखा था भूतपूर्व प्रख्यात प्रेस फोटोग्राफर एवं वर्तमान में सर्वस्व त्याग कर गुरुधाम जोधपुर में सेवारत **श्री हेमंत देसाई** ने।

पूज्यपाद गुरुदेव ने साधकों के समक्ष उदाहरण रखा कि आज वे जिस सुख और आनन्द में कुछ क्षण
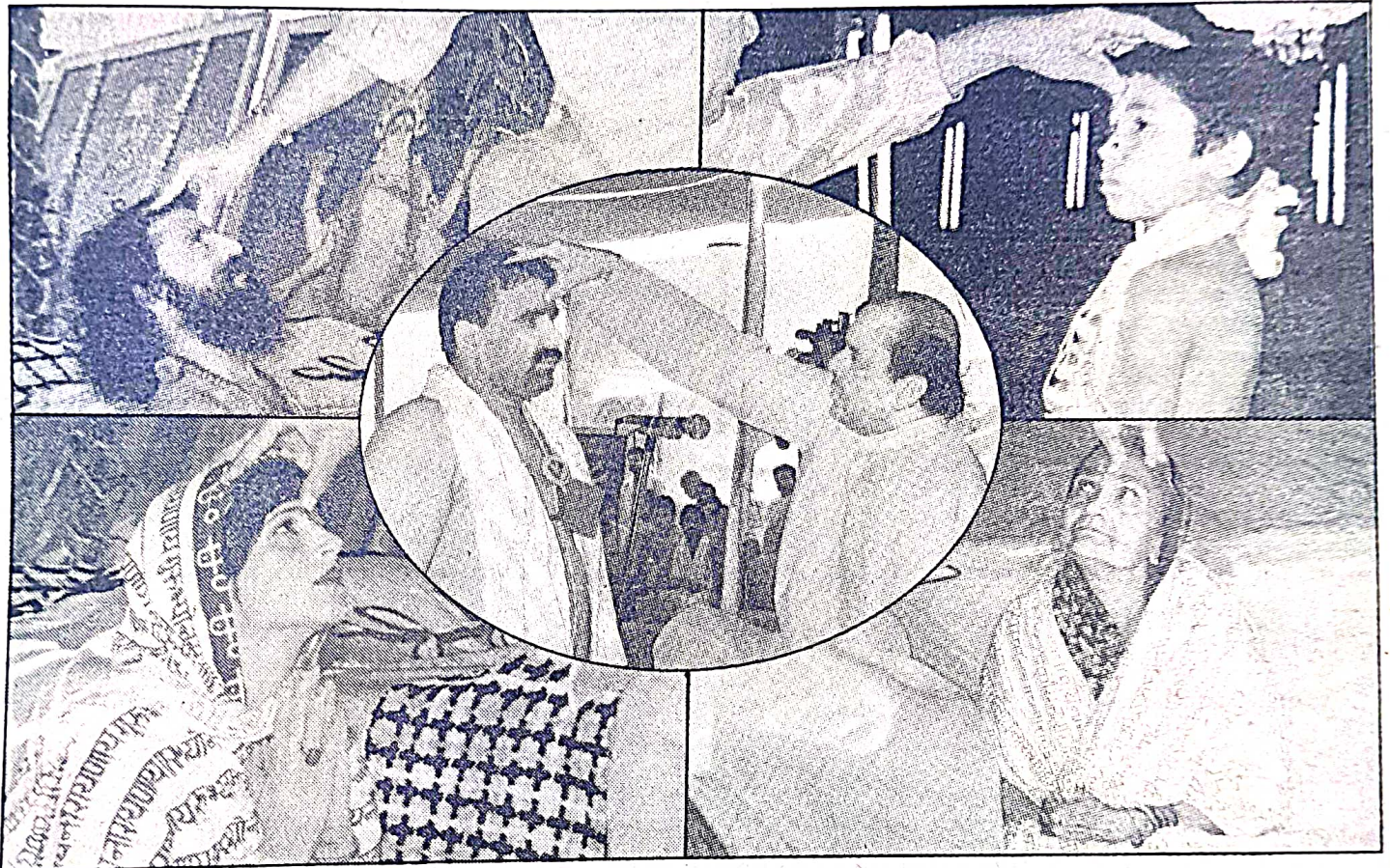
भाई आनन्द (दिल्ली), जय प्रकाश (मनाली) एवं **बहन दिव्योत्तमा (दिल्ली)** ने अपने सुललित कंठों की रसधार से वातावरण और भी अधिक मधुर कर दिया जब कि संगीत को ही पूर्णता देने की दृष्टि से **रूपाली, प्रीति, मधु,** ने आकर्षक नृत्य द्वारा भाव भंगिमाएं प्रदर्शित कीं।

सरसता के बाद पुनः कर्मठता और कर्मठता के साथ-साथ सरसता यही और भी अधिक स्पष्ट कर रहा था साधना शिविर का तृतीय दिवस अर्थात् २१.७.९४। मंच की व्यवस्था आंखों में उतर आए आंसुओं को मैंने देखा। सभी साधक बिना कुछ बोले अपने रोम-रोम से कृतज्ञता प्रकट कर रहे थे और इसी आनंद को उन्होंने फिर व्यक्त किया सायंकालीन सत्र में अपने हाथों में मोमबत्ती की आरती लेकर। जबकि **डॉ० साधना (भोपाल)** समेत अन्य साधिकाएं हाथों में आरती की थाली लेकर नृत्य करती यों लग रही थीं मानों इस धरा पर जहां कहीं जो भी प्रकाश है वह उनके हाथों में सिमट आया है। इन क्षणों को निरंतर वीडियो में कैद के लिए ही लीन हो सके हैं **उसी को वे इस धरा पर साक्षात् सिद्धाश्रम की स्थापना करके चिरस्थायी कर देना चाहते हैं। जिससे आने वाली पीढ़ियां भी इस आनन्द को प्राप्त करने से वंचित न रह जाएं।** सचमुच सौभाग्य होगा उनका जो ऐसी महती योजना में तन-मन-धन न्यौछावर करके अपने-आप को मिटा करके भी पूज्य गुरुदेव के हृदय में बसने वाले हैं।

फिर आया साधकों का चिर-प्रतीक्षित पर्व गुरु पूर्णिमा इस दिवस विशेष पर पूज्य गुरुदेव ने

उदाहरण था। सैकड़ों साधक व्यक्तिगत रूप से उन दीक्षाओं को प्राप्त कर सके जो पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित होती रही हैं, क्योंकि गुरु पूर्णिमा से अधिक सिद्ध मुहूर्त और क्या हो भी सकता था। ऐसे सौभाग्यशालियों में २ माह के अबोध शिशु से लेकर ८० वर्षीय वृद्ध तक सम्मिलित थे, क्योंकि जीवन में चैतन्यता का स्पर्श जब भी मिल जाए तभी सौभाग्य होता है। इसे किसी आयु वर्ग में बांध कर नहीं देखा जा सकता।

अपने समस्त शिष्यों को दुर्लभ **देह वज्र प्रयोग** एवं पूर्णता के रूप में पूज्यपाद प्रातः **स्मरणीय दादा गुरुदेव परमहंस स्वामी सच्चिदानंद** के स्थापन प्रयोग से भी यों भर दिया कि कहना पड़ता है यदि साधक अब भी रुक जाए या अटक जाए तो उसका दुर्भाग्य ही है। इन दो महत्वपूर्ण प्रयोगों के बाद आरम्भ हुआ वह चिरस्मरणीय गुरु पूजन प्रयोग जिसका साक्षात् तो कुछ ही साधक कर सके, किन्तु जैसा कि पूज्य गुरुदेव ने कहा कि वे इस अवसर पर अपने समस्त उपस्थित और अनुपस्थित दोनों ही शिष्यों को अपने हृदय में धारण करके प्रत्येक को इस पूजन का साक्षी बना रहे हैं। क्या कोई अन्य गुरु यह क्रिया कर सकते हैं? क्या कोई अन्य गुरु इतना अधिक विराट चिन्तन रख सकते हैं? इसी से पूज्यपाद गुरुदेव सद्गुरु के पद को सुशोभित कर ही रहे हैं, सद्गुरु की समाज में पुनर्प्रस्तुति और पुनर्व्याख्या कर रहे हैं कि किस करुणा और किस विराटता को लेकर इस पद पर आसीन हुआ जा सकता है। इस शिविर के चारों दिवसों में उन्होंने अपने मुक्त हस्त से जिस प्रकार शक्तिपात के रूप में दीक्षाओं को प्रदान किया वह इसी का तो जीता जागता

श्री अनीश अग्रवाल

बिलासपुर के **श्री के. बी. द्विवेदी,** डेहरी ऑन सोन के **श्री रनजीत कुमार बनर्जी, अनीश अग्रवाल** (पानीपत) ने १०८ दीक्षाओं के क्रम में आगामी दीक्षाएं प्राप्त कीं।

इस वर्ष की गुरु पूर्णिमा की विशेषता यह थी कि भारत के समस्त प्रांतों से साधकों का आगमन उत्साह और उल्लास के साथ-साथ हुआ, जिसमें हिमांचल प्रदेश के साधकों ने तो अपने नृत्य और उत्साह से समां ही बांध दिया। गुजरात प्रांत से भी बहुत दिनों बाद इतनी विशाल संख्या में साधकों की टीम आयी। मध्य प्रदेश के साधकों को कुशलता से एक सूत्र में बद्ध करने का कार्य जहां **डॉ० विभा चन्द्राकर** ने सम्हाल रखा था। वहीं उत्तर प्रदेश के साधक **श्री. एस. के. मिश्रा** से आगामी नवरात्रि को लखनऊ में सम्पन्न होने की बात सुन सभी साधक जोश में भरे हुए थे।

ऐसे श्रेष्ठ आयोजन की व्यवस्था जिन्होंने की, **जिन्होंने कई महीने पूर्व से अपने-आप को सेवा कार्य में लगा दिया वे हैं श्री सत्यवीर सक्सेना एवं श्री सतीश सिंगला। उगाला अम्बाला के श्री सेलर ग्रीन नम्बरदार एवं अम्बाला के ही राजेश गुप्ता का योगदान भी विशेष उल्लेखनीय रहा।**

इसके अतिरिक्त पानीपत के युवा अधिवक्ता **श्री अनीश अग्रवाल,** श्री सत्यवीर सक्सेना के पुत्रद्वय, **आदित्य सक्सेना, निर्भय सक्सेना** का योगदान भी उल्लेखनीय है। युवा कार्यकर्ताओं में

श्री सतीश सिंगला एवं श्री सत्यवीर सक्सेना

पानीपत के **यशवीर सक्सेना, राजेश, अजय, श्रवण, सुरेश, पवन, अरुण, सन्दीप पवार, श्री रामपाल** का नाम भी उल्लेखनीय है। आयोजकों की सक्रियता पर ही प्रमाण था कि हरियाणा सरकार के वरिष्ठ मंत्री **श्री बलवीर पाल शाह** ने भी प्रथम दिवस मुख्य अतिथि के रूप में पधार कर समारोह को गरिमा दी।

गुरुधाम दिल्ली से गए **श्री अपर अपार सिंह** एवं **श्री रविन्द्रपाल** ने जिस प्रकार से शिबिर कार्यालय की व्यवस्था संभाली वह निश्चित रूप से साधुवाद ज्ञापित किए जाने योग्य है। गुरुधाम दिल्ली से ही **श्री सुभाष शर्मा, बहिन वर्षा, बहिन कनक पांडे, वासुदेव पांडे, सुशील गुप्ता, वियापति सहाय, राकेश यादव, के० के० तिवारी, बंटी, राजेश भारद्वाज** ने भी मौन रखकर अपने सेवा भाव को प्रकट किया।

अपने व्यक्तित्व को विजेता का व्यक्तित्व बनाइए

यूं तो हर साधना पर्व का एक विशेष महत्व और चैतन्यता होती है किन्तु कुछ पर्व ऐसे होते हैं जो विशिष्टतम होते हैं। विजयादशमी का पर्व एक ऐसा ही पर्व है जिसकी चैतन्यता अपने-आप में अनिर्वचनीय है। किसी भी पर्व पर कोई भी साधना सम्पन्न की जा सकती है, किन्तु प्रतिवर्ष पूज्य गुरुदेव की ओर से किसी भी पर्व के लिए जो साधना प्राप्त होती है उसके पीछे उन्हीं का गूढ़ चिन्तन छिपा होता है, और इस वर्ष इस महत्वपूर्ण पर्व विजयदशमी के लिए जो साधना प्राप्त हुई है वह है पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा ही प्राप्त क्षेत्रपाल साधना। **यह अपने व्यक्तित्व में क्षेत्रपाल के समान तेज, बल, पौरुष प्राप्त करने की भी साधना है। यही विजयादशमी पर्व की मूल भावना भी है** कि हम आन्तरिक और बाह्य रूप से इस प्रकार पुष्ट हों जिससे चतुर्दिक ख्याति-लाभ, सुख-लाभ, आरोग्य-लाभ आदि प्राप्त कर सकें। जब तक व्यक्तित्व में तेज नहीं समाता है तब तक व्यक्ति साधनाओं तथा भौतिक जीवन किसी में भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता, और तेजस्विता की साधनाएं सम्पूर्ण वर्ष भर नहीं की जा सकतीं उनका संयोजन तो विजयादशमी जैसे पर्व से करना होता है।

अतः यह आवश्यक हो जाता है कि प्रत्येक साधक कोई ऐसी साधना सम्पन्न करे जिससे उसे विशेष चैतन्यता और बल की प्राप्ति हो सके। क्षेत्रपाल साधना, शास्त्रों में इसी प्रकार की साधना वर्णित की गई है और इस साधना के लिए विजयादशमी के पर्व में कोई आमूल-चूल परिवर्तन नहीं करना है अपितु अपने ढंग से परम्परागत पूजन करते हुए एक ऐसा लघु प्रयोग भी सम्पन्न कर लेना है जो भविष्य की दृष्टि से अत्यन्त फलप्रद सिद्ध होता है। रात्रि में दस बजे के पश्चात (और उचित होगा कि १२ बजे के आसपास) इस साधना को प्रारम्भ करें। वस्त्र, आसन आदि का रंग लाल रहे, दक्षिण मुख अथवा पश्चिम मुख होकर अपने सामने एक लाल वस्त्र पर ही चावलों की ढेरी बनाकर **क्षेत्रपाल यंत्र** स्थापित करें। यह यंत्र इस साधना के लिए इस प्रकार से मंत्र सिद्ध एवं चैतन्य किया जाता है जिससे इसी यंत्र पर क्षेत्रपाल के साथ-साथ दस दिक्पालों की साधना भी भली-भांति सम्पन्न की जा सकती है। दस दिक्पालों की साधना सम्पन्न कर लेने से साधक को समस्त दिशाओं से तेजस्विता और तेजस्विता से भी अधिक ऐसी निर्विघ्नता प्राप्त होने लगती है जो उसके जीवन के लिए अत्यन्त सहायक होती है।

साधक अपने आसन पर बैठकर आचमन आदि से अपने को शुद्ध कर निम्न प्रकार से न्यास करें।

	करन्यास	**अंगन्यास**
क्षां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्षीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
क्षूं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
क्षैं	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
क्षौं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्रत्रयाय वौषट्
क्षः	करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

उपरोक्त ढंग से न्यास करने के पश्चात भगवान श्री क्षेत्रपाल की उपस्थिति की भावना करते हुए उन्हें यंत्र के रूप में दस दिक्पालों सहित स्थापित करने की कामना करते हुए यंत्र पर सिन्दूर का टीका लगाएं तथा फल एवं पुष्प से पूजन कर घी का दीपक लगाएं। इसी यंत्र के चारों ओर **दस लघु नारियलों** के रूप में दस दिक्पालों — इन्द्र, अग्नि, यम, वायु, ईशान, ब्रह्मा, निर्ऋति, वरुण, कुबेर एवं गणपति की स्थापना करें। इन दसों लघु नारियलों का पूजन केवल कुंकुम-अक्षत से करें तथा निम्न प्रकार से ध्यान करें —

भाज्रच्चण्ड-जटा-धरं त्रिनयनं नीलाञ्जनाद्रि-प्रभम्
दोर्दण्डात्त-गदा-कपालमरुण-स्रग-वस्त्रोज्ज्वलम्
घण्टा-मेखल-घर्घर-ध्वनि-मिलज्झंकार-भीमं विभुम्
वन्देऽहं सित-सर्प-कुण्डल-धरं श्री क्षेत्रपालं सदा

भगवान श्री क्षेत्रपाल का ध्यान करने के उपरान्त निष्कम्प भाव से **रुधिरा माला** द्वारा निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें। इस सम्पूर्ण काल में घी का दीपक अवश्य जलाए रखें। सुगन्धित द्रव्य व अगरबत्ती आदि की कोई आवश्यकता नहीं है।

मंत्र

ॐ श्रीं हुं श्रियै नमः

मंत्र-जप समाप्त होने के उपरान्त भगवान श्री क्षेत्रपाल से पुनः हाथ जोड़कर प्रार्थना करें कि वे अपनी समस्त शक्तियों के साथ साधक के शरीर में स्थापित हों एवं उसे बल आदि से पूरित करें। मंत्र-जप के उपरान्त यंत्र, माला एवं समस्त लघु नारियलों को लाल वस्त्र में बांधकर विसर्जित कर दें।

भगवान श्री क्षेत्रपाल की एक अन्य विशेषता यह भी है कि वह व्यक्ति के व्यक्तित्व के पोषक होने के साथ-साथ उसके घर और स्थान के भी रक्षाकारक देव होते हैं, जिस प्रकार से भगवान श्री भैरव की आराधना से साधक का जीवन सुखी एवं निर्विघ्न होता है, वही प्रभाव क्षेत्रपाल साधना से भी होता है।

राशिफल

मेष - स्वभाव में व्यग्रता व उग्रता बनी रहेगी। कई कार्य प्रारम्भ तो श्रेष्ठ ढंग से होंगे किन्तु विभिन्न अड़चनों के कारण बीच में ही रुक जाएंगे, अतः बड़ी योजनाओं के प्रति विचार त्याग दें। निर्माण सम्बन्धी कार्यों को भी स्थगित रखें। पारिवारिक सुख की दृष्टि से श्रेष्ठ माह है। परिवार में पिछले कुछ समय से चला आ रहा तनाव भी समाप्त होगा। मित्र वर्ग उदार व सहयोगी सिद्ध होगा। धनोपार्जन की स्थितियां आपके पक्ष में निर्मित होंगी। अनुचित उपायों से धनोपार्जन का चिन्तन त्याग दें, हानि होगी। शत्रु पक्ष पूरे माह सक्रिय बना रहेगा किन्तु मानसिक क्लेश के अतिरिक्त कोई क्षति पहुंचाने में असमर्थ रहेगा। यात्राएं मध्यम फलदायक ही रहेंगी।

मिथुन - व्यवसाय में स्थिति संतोषजनक होगी तथा उत्तरोत्तर विकास की ओर अग्रसर होगी। धन सम्बन्धी सारे विवाद सुलझेंगे तथा कहीं ऋण में फंसा धन अचानक वापस मिलने से मन में उल्लास रहेगा। परिवार के किसी सदस्य की लम्बे समय से चली आ रही बीमारी समाप्त होगी तथा घर में श्री व सुख का वातावरण बनेगा। शेयर आदि के कार्यों में इस माह विशेष सक्रियता से भाग न लें। मित्र वर्ग की ओर से उपेक्षा प्राप्त होने से मन में खिन्नता उत्पन्न होगी। लम्बे समय से चली आ रही मुकदमेबाजी में निर्णय आपके पक्ष में रहेगा। सम्पूर्ण रूप से सफलतादायक माह होने के साथ-साथ चोट की दृष्टि से सतर्क रहना भी अति आवश्यक है। दिनांक ९, १८, २१, २७ को इस दृष्टि से सावधानी रखें। मांगलिक कार्यों के अवसर भी इसी माह उपस्थित हो सकते हैं।

सिंह - धन सम्बन्धी जटिलताओं का सामना करना पड़ सकता है, जिसका निदान माह के दूसरे पखवाड़े में ही सम्भव हो सकेगा। किसी रिश्तेदार का सहयोग विशेष लाभप्रद सिद्ध होगा। परिवार के साथ दूर भ्रमण की योजनाएं भी बन सकती हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से अनुकूलता प्राप्त होगी। मन में समस्त बाधाओं के बाद भी उल्लास बना रहेगा। विरोधी परास्त होंगे तथा व्यवसाय में आपकी बातों को मानने के लिए बाध्य होंगे। वाहन प्रयोग में अति उत्साह का त्याग करें अन्यथा आपके द्वारा किसी को हानि पहुंचने की सम्भावनाएं प्रबल हैं। पत्नी के विचारों की उपेक्षा मत करें। विविध उलझावों के बाद भी यह माह व्यवहारिक एवं सांसारिक दृष्टि से सफलतादायक है।

वृषभ - पारिवारिक विवादों में तीव्रता आएगी तथा महत्वपूर्ण निर्णय लेने पड़ सकते हैं। संयम व धैर्य प्रबल रूप से अपेक्षित। आर्थिक हानि की भी स्थितियां निर्मित हो सकती हैं। जीवन साथी की ओर से सहयोग प्राप्त नहीं होगा। राजकीय पक्ष तनाव उत्पन्न कर सकता है। विविध उलझावों के कारण आर्थिक पक्ष में भी न्यूनता संभावित। व्यवहारिक एवं सांसारिक दृष्टि से यह माह असफलताओं से भरा होने के साथ-साथ आध्यात्मिक रूप से सफलतादायक भी है, अतः इस माह का सदुपयोग साधनाओं के प्रति कर सकते हैं। तीव्र साधनाएं अथवा भैरव साधना विशेष रूप से अनुकूल सिद्ध होगी।

कर्क - नवीन विचारों का उदय होगा जिनसे जीवन का मार्ग निर्धारित करने में सहायता प्राप्त होगी। धन सम्बन्धी समस्याएं भी सुलझेंगी तथा आय-प्राप्ति का प्रबल स्रोत प्राप्त होगा। एकाएक बड़ी धनराशि प्राप्त करने के प्रयास व्यर्थ ही सिद्ध होंगे तथा आकस्मिक धन-प्राप्ति के योग भी क्षीण हैं। कल्पनाशीलता के साथ-साथ व्यवहारिक पक्षों को भी ध्यान में रखने से ही संतुलन बन सकेगा। प्रेम-प्रसंगों में शिथिलता आएगी किन्तु आगामी दिनों में मिलन के प्रचुर अवसर उपलब्ध होंगे। परिवार में किसी सदस्य का स्वास्थ्य चिंता का कारण बन सकता है।

कन्या - मनोमालिन्य का त्याग आवश्यक है। जिन कठिनाइयों को लेकर मन में खेद है, उनका निदान उचित समय पर स्वतः ही होगा। भ्रमण एवं दूरस्थ यात्राएं इस दृष्टि से लाभप्रद सिद्ध होंगी। चित्त को निराशाजनक होने से बचाएं एवं मित्रों का संग करें। पारिवारिक दृष्टि से सुख व शांति प्राप्त होगी। आर्थिक दृष्टि से यद्यपि प्रबलता नहीं रहेगी, किन्तु पूरे माह किसी प्रकार की कोई कठिनाई भी नहीं रहेगी। पुत्र की ओर से सुख प्राप्त होगा। स्वास्थ्य की मामूली कठिनाई बनी रह सकती है। पडोसियों के व्यवहार से खेद सम्भावित, किन्तु संतुलित व्यवहार द्वारा स्थिति अप्रिय होने से बची रहेगी।

तुला - प्रबल धैर्य अपेक्षित अन्यथा कुछ एक महत्वपूर्ण अवसर हाथ से निकल जाने की सम्भावनाएं प्रबल हैं। व्यवसाय का चुनाव सावधानी से करें। अर्थोपार्जन की दृष्टि से अभी अनुकूलता प्राप्त होना कठिन। स्थान परिवर्तन से भाग्योदय में अनुकूलता आएगी। वरिष्ठ व्यक्तियों की सलाह को महत्व दें। स्वास्थ्य में दृढ़ता व उत्फुल्लता बनी रहेगी। भ्रातृ पक्ष से विशेष सुख प्राप्त होगा। मन में उत्तेजना बनी रह सकती है। व्यवसायी वर्ग को उतार-चढ़ाव का सामना पूरे माह करना पड़ सकता है। प्रेम-प्रसंगों में जड़ता आएगी। यात्राएं बहुत अधिक लाभदायक नहीं कही जा सकती हैं। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें।

धनु - जो व्यक्ति शिक्षा जगत से सम्बन्धित हैं, उन्हें इस माह उल्लेखनीय सफलता प्राप्त होगी। इंटरव्यू एवं चयन से सम्बन्धित प्रयास सफल होंगे। मन में संतोष व सुख व्याप्त होगा। व्यवहार में शालीनता और गंभीरता की वृद्धि होगी। धन का संचय सम्भावित नहीं। जीवन साथी की ओर से विशेष सहयोग मिलेगा। विदेश यात्रा के अवसर भी उपलब्ध हो सकते हैं। सामाजिक जीवन में सफलता प्राप्त होगी। दाम्पत्य जीवन में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। राज्य पक्ष की ओर से पूरे माह तनाव ग्रस्त रहेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

कुंभ - धन का संचय होगा। नवीन क्रय की योजनाएं माह के दूसरे पखवाड़े में मूर्तरूप लेंगी। परिवार की ओर से सम्पूर्ण सहयोग इस दिशा में विशेष लाभप्रद रहेगा। पत्नी के रिश्तेदारों का सहयोग महत्वपूर्ण योगदान देगा। संतान की ओर से हर्षदायक समाचार प्राप्त होंगे। मन में आध्यात्मिक विचारों की प्रबलता रहेगी। शत्रु पक्ष कूटनीतिक चालें चल सकता है। यात्राएं बहुत अधिक दूरी की न करें। घर में मित्रों व रिश्तेदारों का आवागमन बना रहेगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

वृश्चिक - मन में जड़ता बनी रहेगी। नवीन विचारों एवं जोखिम के प्रति उदासी रहेगी। सामाजिक रूप से भी गतिविधियां सीमित कर परिवार के प्रति ही केंद्रित रहेंगे। पत्नी से विचारों में अनबन बनी रह सकती है। पुत्र सुख उल्लेखनीय रहेगा। गतिशीलता के अभाव में स्वास्थ्य सम्बन्धी गड़बड़ का भी सामना करना पड़ सकता है। कार्यालय में अलोकप्रियता बढ़ेगी। आध्यात्मिक व धार्मिक वृत्तियों का उदय होगा। धन सम्बन्धी रुकावटों का बार-बार सामना करना पड़ सकता है। शत्रु पक्ष शांत रहेगा। रिश्तेदारों की ओर से कष्ट सम्भावित। यात्राएं पूर्णतः निष्फल एवं निरर्थक।

मकर - मित्र वर्ग का विस्तार होगा यद्यपि उससे भविष्य में किसी विशेष लाभ की आशा करना व्यर्थ है। नई साझेदारी की योजनाएं त्याग कर पहले के सम्बन्धों को ही प्रगाढ़ कीजिए। धन का संचय स्थायी न रहकर आकस्मिक रूप से आए कार्यों में व्यय हो जाएगा। मन में गोपनीयता की भावना बढ़ेगी, जिसके कारणवश पारिवारिक जीवन में तनाव उत्पन्न हो सकते हैं। शत्रु पक्ष से पीड़ा प्राप्त होगी। अप्रिय स्थितियों के समाधान के लिए आपको ही कदम उठाने पड़ेंगे। यात्राएं हानिप्रद सिद्ध हो सकती हैं। भृत्य—सुख में न्यूनता आएगी।

मीन - गंभीरता एवं दायित्व बढ़ेंगे। विवाह सम्बन्धी प्रयासों को मूर्तरूप मिलेगा। कोई मानसिक द्वंद्व चलता रहेगा। आत्मीय जनों का सम्पर्क बना रहेगा। शत्रु पक्ष कष्ट दे सकता है। धन सम्बन्धी सभी चिंताएं मिटेंगी। शरीर में पीड़ा बनी रह सकती है। उचित निर्णय शक्ति का अभाव रहेगा। झुंझलाहट एवं क्रोध बढ़ सकता है। लेखन, कला, अध्यापन विधि व्यवसाय से जुड़े व्यक्तियों के लिए श्रेष्ठ व रचनात्मक माह। यात्राएं असफल रहेंगी।

व्रत पर्व एवं त्यौहार

०३.०९.९४	भाद्रपद कृ. पक्ष १३	गुरु दिवस
०९.०९.९४	**भाद्रपद शु. पक्ष ०४**	**गणेश चतुर्थी**
१२.०३.९४	भाद्रपद शु. पक्ष ०८	राधाष्टमी.
१३.०९.९४	भाद्रपद शु. पक्ष ०९	१०८ लक्ष्मी सिद्धि दिवस
१५.०९.९४	भाद्रपद शु. पक्ष ११	पद्मिनी एकादशी
१६.०९.९४	**भाद्रपद शु. पक्ष १२**	**भुवनेश्वरी जयन्ती**
१७.०९.९४	भाद्रपद शु. पक्ष १३	विश्वकर्मा पूजा
१८.०९.९४	**भाद्रपद शु. पक्ष १४**	**अनन्त चतुर्दशी**
२२.०९.९४	आश्विन कृ. पक्ष ०३	सर्वार्थ सिद्धि योग
२६.०९.९४	आश्विन कृ. पक्ष ०९	मातृ नवमी
५.१०.९४	आश्विन अमावस्या	देवकार्य अमावस्या
६.१०..९४	आश्विन शुक्ल प्रतिपदा	शारदीय नवरात्रि प्रारम्भ
९.१०.९४	आश्विन शुक्ल पंचमी	ललिता पंचमी
११.१२.९४	आश्विन शुक्ल सप्तमी	महासरस्वती पूजन
१२.१०.९४	**आश्विन शुक्ल अष्टमी**	**दुर्गा अष्टमी**
१४.१०.९४	आश्विन शुक्ल दशमी	विजयादशमी पूजन
१७.१०.९४	आश्विन शुक्ल त्रयोदशी	गुरु सिद्धि दिवस
१९.१०.९४	**आश्विन पूर्णिमा**	**शरद पूर्णिमा**
२२.१०.९४	कार्तिक कृष्ण तृतीया	तारा जयन्ती
२३.१०.९४	कार्तिक कृष्ण चतुर्थी	करवा चौथ
२७.१०.९४	कार्तिक कृष्ण अष्टमी	गुरु पुष्य अमृत सिद्धियोग

• विजय सिंह शास्त्री
नारनौल

भगवती जगदम्बा के अति विशिष्ट दुर्लभ प्रयोग
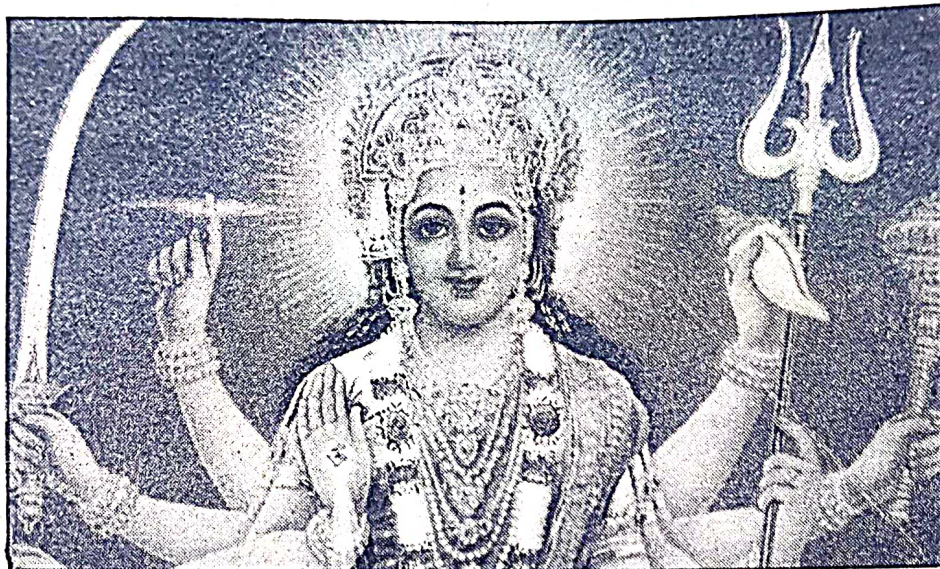
भवानि त्वं दासे मयि वितर दृष्टिं सकरुणा-
मिति स्तोतुं वाञ्छन् कथयति भवानी त्वमितिच

(आद्य शंकराचार्य)

"हे भगवती! मेरे जैसे अकिंचन दास के लिए आप अपनी कृपा दृष्टि प्रदान कीजिए, मेरा धृष्ट मन आपके चरणों में बार - बार ऐसा निवेदन करने के लिए आतुर हो रहा है।"

भगवती दुर्गा की पूजा उपासना से सम्बन्धित सर्वाधिक प्रामाणिक ग्रंथ दुर्गा सप्तशती ग्रंथ का अध्ययन करने से स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है कि इतनी अधिक व्यापकता और सक्षमता किसी भी अन्य रूप से नहीं प्राप्त हो सकती है, और फिर नवरात्रि का पर्व यह तो साधना से भी अधिक मां भगवती दुर्गा की कृपा में भीगने का पर्व है। जीवन की अनेक समस्याएं होती हैं प्रत्येक समस्या के लिए दुर्गा सप्तशती में छोटे-छोटे अनेक प्रयोग वर्णित किए गए हैं। जहां एक ओर नवरात्रि में साधक मां भगवती दुर्गा को अपने हृदय में धारण करने की क्रिया करता है वहीं **दुर्गा सप्तशती** में वर्णित अनेक छोटे-छोटे प्रयोगों के माध्यम से अपने जीवन को भी परिवर्तित कर सकता है।

दुर्गा सप्तशती तो अपने-आप में रहस्यों और रत्नों का अनमोल खजाना है। दुर्गा सप्तशती अपने-आप में केवल पाठ करने का ही ग्रंथ नहीं है वरन् ऐसा विशाल समुद्र है जिसमें साधना के माध्यम से उतर कर अनेक रत्न प्राप्त किए जा सकते हैं जिनसे पूरा जीवन जगमगा जाए, **और ये रत्न होते हैं अनमोल मंत्रों के रूप में उनकी दुर्लभ साधना पद्धति के रूप में।**

१. विपत्ति नाश के लिए

नवरात्रि का पर्व प्रबल से प्रबल बाधा को भी समाप्त करने का एक उचित मुहूर्त है, और साधक को चाहिए कि वह एक **संहारिणी गुटिका** स्थापित कर **सफेद हकीक की माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करें।

शरणागतदीनार्तपरित्राण परायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते

२. आरोग्य व सौभाग्य प्राप्ति के लिए

इस मंत्र की साधना यदि **शुभदा यंत्र** को स्थापित कर सम्पन्न की जाए तो निश्चय ही आशातीत लाभ प्राप्त होता है। इस साधना हेतु **सफेद हकीक की माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करना चाहिए।

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।

३. सुलक्षणा पत्नी की प्राप्ति के लिए

जीवन में सुलक्षणा पत्नी प्राप्त हो यह भी एक सौभाग्य ही होता है। और इस हेतु **मनोहारी यंत्र** स्थापित कर निम्न मंत्र का एक माला मंत्र जप **शुद्ध स्फटिक माला** से करने से मनोवांछित लाभ प्राप्त होता है।

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्।।

४. बाधा शांति के लिए

कैसी भी प्रबल बाधा आ गई हो नवरात्रि का काल इसके निवारण का सिद्ध मुहूर्त है। **कराला यंत्र** स्थापित कर **हकीक माला** से निम्न मंत्र का एक माला मंत्र जप करना एक श्रेष्ठ विधान है।

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्।।

५. रोग नाश के लिए

रोग भी एक प्रकार की बाधा ही होते हैं, जो जीवन की प्रगति को रोक देते हैं। रोगनाश की प्रबल शक्ति चामुण्डा से सम्बन्धित **चामुण्डा यंत्र** स्थापित कर निम्न मंत्र का जप एक माला **हकीक माला** से करना लाभप्रद सिद्ध होता है।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा।
रुष्टातु कामान् सकलानभीष्टान्।।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां।
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।

६. भयनाश के लिए

व्यक्तित्व का दबा होना, व्यक्तित्व में हीनभावना होना, अकारण भय छाया रहना जैसी अनेक स्थितियों के निवारण के लिए **एक दुर्गाफल** स्थापित कर निम्न मंत्र का जप **सफेद हकीक की माला** से करें।

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।

७. विपत्ति नाश और सुख की प्राप्ति के लिए

विपत्ति का नाश एवं सुख की प्राप्ति- ये दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं, और इस कार्य हेतु मंगला दुर्गा की स्थापना **मंगलादुर्गा यंत्र** के रूप में करके **लाल हकीक माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करना पर्याप्त होता है।

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी।
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।

८. स्वप्न में उत्तर जानने के लिए

जीवन की अनेक समस्यायें होती हैं जिनका उत्तर व्यक्ति गोपनीय रूप से जानना चाहता है, ऐसी स्थिति में प्रस्तुत साधना एक श्रेष्ठ विधान है। साधक को चाहिए कि एक **स्वप्नेश्वरी गुटिका** प्राप्त कर **सफेद हकीक माला** से निम्न मंत्र जप एक माला करें—

दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सर्वकामार्थ साधिके।
सर्वं सिद्धिमसिद्धिं वा स्वप्ने सर्वं प्रदर्शय।।

९. विविध उपद्रवों से बचने के लिए

तांत्रिक प्रयोगों से, पूर्वजन्मकृत दोषों से या अन्य कारणों से कई व्यक्तियों के जीवन में निरन्तर एक न एक बाधा और उपद्रव बना ही रहता है। इसके निवारण के लिए साधक को चाहिए कि वह एक **चैतन्य मुद्रिका** (जो दुर्गा मंत्रों से सिद्ध हो) स्थापित कर **हकीक माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें तथा साधना के उपरान्त मुद्रिका को हाथ में सदैव धारण किये रहें।

रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा,
यत्रारयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये,
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्।।

१०. पुत्र लाभ प्राप्त करने के लिए

हर एक साधक की इच्छा होती है कि उसे जीवन में संतान सुख भी प्राप्त हो और जब ऐसा होने में बाधा आ रही हो तब मां भगवती दुर्गा की आराधना- साधना नवरात्रि के इन्हीं दिनों में कर लेनी चाहिए। साधक को चाहिए कि वह **पुत्रदा यंत्र** स्थापित कर **सफेद हकीक की माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें। इस साधना को यदि पति - पत्नी दोनों करें तो अधिक श्रेष्ठ माना गया है। दोनों एक ही सामग्री को उपयोग में ला सकते हैं। यह केवल एक दिवसीय साधना है।

सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो धनधान्य सुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।।

११. प्रसन्नता की प्राप्ति के लिए

हमारे मन में अनावश्यक तनाव न हो, बोझिलता और दुःख दैन्य न हो, इसके लिए भी दैवी बल की आवश्यकता होती है। इस हेतु मां भगवती दुर्गा के भी मनोहारी स्वरूप महागौरी से अधिक कौन श्रेष्ठ हो सकता है। साधक को चाहिए कि वह एक **महागौरी मुद्रिका** प्राप्त कर **स्फटिक माला** से निम्न मंत्र का एक माला मंत्र जप करें। साधना के उपरान्त मुद्रिका को किसी भी ऊंगली में धारण कर लें।

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलौक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव।।

१२. समस्त विद्याओं में प्रवीणता प्राप्त करने हेतु

बालक हो या वयस्क प्रत्येक की इच्छा रहती है कि वह अपने क्षेत्र में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करे, और ज्ञान ही व्यक्ति को आगे चलकर उसके जीवन को आध्यात्मिक लक्ष्यों तक पहुंचा देता है। इस उद्देश्य के लिए साधक को चाहिए कि वह ताम्रपत्र पर अंकित **भोगदा यंत्र** प्राप्त कर **शुद्ध स्फटिक माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें।

विद्याः समस्तास्तव देविभेदाः।
स्त्रियाः समस्ताः सकला जगत्सु।।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्।
का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः।।

१३. शक्ति प्राप्ति के लिए

शक्ति की आवश्यकता साधक के लिए सर्वाधिक होती है। मानसिक, शारीरिक एवं साधनात्मक तीनों प्रकार की शक्तियों की प्राप्ति के लिए साधक को चाहिए कि वह एक **बलप्रमथनी विग्रह** प्राप्त कर **हकीक माला** से निम्न मंत्र का एक माला मंत्र जप नवरात्रि के किसी भी एक दिन सम्पन्न करें।

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते।।

१४. भगवती दुर्गा के चरणों में निर्मल भक्ति प्राप्ति करने के लिए

जिसने भगवती दुर्गा के चरणों में ही भक्ति प्राप्त कर ली उसके लिए इस जगत में असम्भव रह ही क्या गया है? और इस प्रयोग को सम्पूर्णता से करने के लिए आवश्यक है कि साधक एक **तुष्टि चक्र** को स्थापित कर **स्फटिक माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें।

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।

१५. सर्व विधि अभ्युदय के लिए

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में निर्बाध गति से कार्य सम्पन्न हो सके, जीवन में कोई पक्ष न्यून न रह जाए इसके लिए साधनात्मक ग्रंथों में **कामिनी मुद्रिका** पर एक लघु प्रयोग वर्णित किया गया है। साधक को चाहिए कि वह इस मुद्रिका को प्राप्त कर, अपने समक्ष स्थापित कर, नवरात्रि के किसी भी दिन **मनोकामना माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें।

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां,
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा,
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना।।

१६. पाप नाश के लिए

साधक की वास्तविक उन्नति तो तब होती है जब वह अपने सभी पापों से मुक्त होकर निर्मल हो जाता है। मां भगवती दुर्गा इस रूप में भी सहायक होती है। इसके लिए नवरात्रि में एक विशेष प्रयोग वर्णित किया गया है, जहां साधक को **व्याघ्र मुखी** स्थापित कर **हकीक माला** से निम्न मंत्र का एक माला मंत्र जप करना होता है।

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव।।

१७. दारिद्र, दुख के नाश के लिए

शक्ति का वास्तविक तात्पर्य होता है पराक्रम युक्त, ऐश्वर्य और इसी की पूर्ति जिस प्रयोग से होती है उसमें **लोलाक्षी यंत्र** पर **हकीक माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप नवरात्रि के किसी भी दिन करना पर्याप्त माना गया है।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थै स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि
दारिद्र्य दुःख भय हारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता

१८. भोग व मोक्ष की प्राप्ति के लिए

भोग व मोक्ष जीवन के दो आवश्यक पक्ष हैं, और वास्तव में ये उन्हीं को मिलते हैं जिनके ऊपर देवी की कृपा होती है। भगवती दुर्गा की कृपा को इस रूप में प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि साधक **मनोन्मनी यंत्र** स्थापित कर **शुद्ध स्फटिक की माला**

से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें।

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।

१९. दुःसाध्य स्थिति समाप्त करने के लिए

जीवन की कई- कई परिस्थितियां रोग आदि इस प्रकार के होते हैं जिनका निवारण सहज ढंग से सम्भव नहीं हो पाता, तब एक लघु प्रयोग नवरात्रि में सम्पन्न कर लेना साधक के सारे जीवन के लिए आवश्यक हो जाता है। ऐसी स्थिति में साधक को चाहिए कि वह एक **नारसिंही फल** स्थापित कर **हकीक माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें। यह प्रयोग नवरात्रि के किसी भी दिन किया जा सकता है।

जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।।

२०. समस्त प्रकार से सुरक्षा चक्र प्राप्त करने के लिए

जीवन में किसी भी प्रकार के दैहिक, दैविक अथवा भौतिक कष्ट व्याप्त न हो, सदैव देवी की कृपा का सुरक्षा चक्र व्याप्त रहे, इसके लिए **वाराही गुटिका** पर एक दुर्लभ प्रयोग का वर्णन शास्त्रों में प्राप्त होता है। साधक को चाहिए कि वह यह गुटिका प्राप्त कर नवरात्रि के किसी भी दिन **सफेद हकीक माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें।

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टा स्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेन च।।

२१. स्वर्ग की प्राप्ति के लिए

प्रत्येक धर्म परायण व्यक्ति की यही कामना रहती है कि वह अपनी मृत्यु के उपरान्त अधोगति को न प्राप्त हो, वरन् इस जीवन के उपरान्त उसका जीवन श्रेष्ठ रूप से व्यतीत हो। इस सम्बन्ध में जिस साधना का विवरण शास्त्रों में मिलता है वह मुख्य रूप से विमला देवी की साधना है, और साधक को चाहिए कि वह **विमला यंत्र** स्थापित कर **स्फटिक माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप नवरात्रि के किसी भी दिन में करें।

सर्वभूता यदा देवि स्वर्ग मुक्ति प्रदायिनी।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः।।

२२. मोक्ष की प्राप्ति के लिए

मोक्ष की प्राप्ति के लिए भी आतुर रहना भारतीय जीवन चिन्तन का ही एक अंग है, और अनेक धर्म परायण व्यक्तियों की मनोकामना होती है कि वह इस जीवन के उपरान्त पुनः जन्म-मरण के चक्कर में न पड़ें। ऐसे सभी धर्म परायण व्यक्तियों को चाहिए कि वे **नारायणी यंत्र** पर **खड्ग माला** अथवा **स्फटिक माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें।

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या,
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्,
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति हेतुः।।

२३. सामूहिक कल्याण के लिए

जिस प्रकार कुछ व्यक्ति अपनी उन्नति से ऊपर उठकर अपने परिवार और अपने कुटुम्ब का भी हित चिन्तन करते हैं, उनके लिए यह साधना करते हैं, उसी प्रकार कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जो और आगे बढ़कर समाज व देश के हित का चिन्तन करते हैं, सामूहिक साधनाएं सम्पन्न करवाते हैं तथा तन, मन, धन से गुरु सेवा को ही जीवन मानते हैं। **ऐसे समस्त व्यक्तियों को चाहिए कि समूह कल्याण के लिए जगदम्बा यंत्र स्थापित कर, निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप स्फटिक माला से सम्पन्न करें।**

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या,
निश्शेषदेवगण शक्ति समूह मूर्त्या।
ताममम्बिकामखिलदेव महर्षि पूज्यां,
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः।।

यह प्रयोग एक ही यंत्र पर अनेक साधक सामूहिक रूप से भी सम्पन्न कर सकते हैं। मालाएं पृथक हों।

२४. भगवती दुर्गा के साक्षात् दर्शन प्राप्त करने के लिए

भगवती दुर्गा के साक्षात् दर्शन प्राप्त करने का अर्थ है कि फिर साधक के जीवन में किसी भी प्रकार की चिन्ता, तनाव, बाधा रह ही नहीं सकती, और इसके लिए भी नवरात्रि में एक लघु प्रयोग सम्पन्न करने का विवरण शास्त्रों में मिलता है। जिसके अनुसार **दुर्गा प्रत्यक्ष सिद्धि यंत्र** स्थापित कर साधक **स्फटिक माला** से निम्न मंत्र की एक माला जप करें।

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेश्वलक्ष्मीः,
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कृतजन प्रभवस्य लज्जा,
ता त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।

ये सभी प्रयोग अत्यधिक अचूक और नवरात्रि में निश्चित रूप से प्रयोग में लाए जाने योग्य हैं। इन सभी साधनाओं में पृथक- पृथक सामग्रियों का ही प्रयोग करना चाहिए अर्थात् एक प्रयोग की माला से दूसरे प्रयोग का मंत्र जप नहीं करना चाहिए। प्रत्येक साधना के उपरान्त सामग्री को विसर्जित करना आवश्यक है। प्रत्येक प्रयोग में वस्त्र, आसन आदि श्वेत ही रहेगा, दिशा पूर्व रहेगी।

मनोरंजन व ज्ञान का भरपूर खज़ाना

प्रथम सेट की अपूर्व सफलता के कारण छः पुस्तकों के स्थान पर आठ पुस्तकों की द्वितीय श्रृंखला . . .

सौन्दर्य

नयी परिभाषाएं, नयी व्याख्याएं, एक-एक शब्द सरसता में डूबा, मानों शब्दों से ही सौन्दर्य मूर्त रूप में खुद ब खुद ढल रहा हो प्रत्येक लेख अपूर्व मादकता में सराबोर।

तारा साधना

दरिद्रता के अंधकार से तारण देने वाली महाविद्या तारा की सिद्ध साधना पद्धति जिसके आधार पर साधकों ने नित्य प्रातः सिरहाने दो तोला सोना प्राप्त करना स्वयं अनुभव किया ही है।

तंत्र साधनाएं

युग के ही अनुरूप विभिन्न देवी-देवताओं की गोपनीय तांत्रोक्त साधनाओं को लघु कलेवर में पूर्णता से प्रकाशित करने का प्रथम व दुर्लभ अवसर।

जगदम्बा साधना

प्रत्येक शक्ति साधना, महाविद्या साधना अथवा किसी भी तांत्रोक्त साधना को सिद्ध कर लेने की, प्रथम बार में पूर्णता प्राप्त कर लेने की क्रिया, साथ ही मां भगवती जगदम्बा के जाज्वल्य रूप के दर्शन प्राप्त कर लेने का रहस्य भी तो!
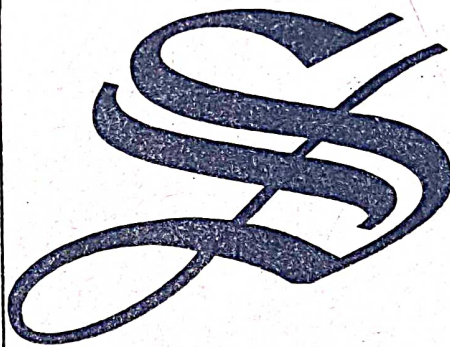
सीरिज के

ब . . . ढ़ . . . ते

क . . . द . . . म

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य ५/-

पूर्ण जानकारी के लिए

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर, (राज.) - ३४२००१

फोनः ०२९१-३२२०९

अथवा

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४

फोनः ०११-७१८२२४८

शिव साधना

सब कुछ किया किंतु इन औढरदानी देव का रहस्य न जाना, प्रसन्न करने की साधना पद्धति न प्राप्त की तो सब कुछ अधूरा ही रह जाता है क्योंकि जहां शिव है वहीं जीवन की पूर्णता, चैतन्यता, आनंद और निरोगता भी तो है।

उर्वशी साधना

प्रथम सेट में प्रकाशित *'अप्सरा साधना सिद्धि'* को विस्तार से प्रस्तुत करने के पाठकों के विशेष आग्रह के क्रम में एक सजीव पुस्तक। विवरण की अनोखी शैली, गोपनीय आबद्ध प्रयोग के साथ।

हिप्नोटिज्म

सम्मोहन के विशाल विषय को सरलता से लघु कलेवर में समेटने की क्रिया, जिससे साधक को अल्पकाल में ही सम्मोहन का महत्व और विशेष सूत्र मिल सके।

स्वर्ण सिद्धि

कीमियागीरी अर्थात् स्वर्ण निर्माण पद्धति भारत की ही सारे विश्व को देन रही है। इसी को सप्रमाण बताती हुई एक अनोखी पुस्तक।

अरविन्द प्रकाशन, जोधपुर की नवीन प्रस्तुतियां!

वास्तव में दीक्षा का रहस्य जितना अधिक गूढ़ और जटिल है, उसका तो एक अंश भी प्रकाश में नहीं आ सका है। क्योंकि यह तो साक्षात ईश्वर द्वारा गुरु रूप में उपस्थित होकर मनुष्य को पूर्णता प्रदान करने की क्रिया है। इसी से दीक्षा को सम्पूर्ण साधना कहा गया है जिसमें शिष्य को उपस्थित होने के अतिरिक्त कोई अन्य कर्त्तव्य शेष रह ही नहीं जाता।

हम सही अर्थों में न तो गुरु पद को समझ पाए हैं, न गुरुदेव के व्यक्तित्व को, न उनके क्रिया-कलापों के रहस्य को और यह क्रिया कदाचित् इतनी सरल है भी नहीं, फिर भी मन में एक बात स्पष्ट होनी चाहिए कि मैं गुरु के समक्ष क्यो उपस्थिति होने जा रहा हूं, और तब बिना किसी लाग-लपेट के अपने-आप में सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि मेरे जीवन के अमुक-अमुक लक्ष्य हैं, अमुक कामनाएं हैं और मुझे इनकी पूर्ति का मार्ग अपने गुरु के द्वारा ज्ञात कर लेना है। दोष इसमें नहीं है कि हमारे मन में सांसारिक इच्छाएं हैं अथवा अपने किसी हित चिन्तन की बात है। **सद्गुरु का तो आगमन ही होता है अपने शिष्य को सर्व प्रकारेण संतुष्ट, सम्पूर्ण करते हुए सर्वोच्च आध्यात्मिक लक्ष्य तक ले जाने के लिए।** शास्त्रों में इस विषय में स्पष्ट उल्लेख मिलता है—

पूर्णतः प्राप्यते दीक्षा, जाग्रतः प्राप्यते तथा।
चैतन्यताद् भवेद् दीक्षा, दीक्षा हि सिद्धि उच्यते।।

यद्यपि शास्त्रों में दीक्षा की व्याख्या आध्यात्मिक रूप में ही प्रमुखता से हुई है और दीक्षा को ऐसी क्रिया बताया गया है जिसके द्वारा जीव का उद्धार सम्भव होता है, और वह अपने मूल स्वरूप, ब्रह्म तक जाकर अखंडानंद में लीन हो जाता है। दीक्षा को ज्ञान देने की क्रिया तो कहा ही गया है, साथ ही उसे गुरु की तेजस्विता से मल के क्षय होने की घटना भी कहा गया है—

दीयते ज्ञान सद्भावःक्षीयते पशुभावना।
दानक्षपण संयुक्ता दीक्षा तेनेह कीर्त्तिता।।

अर्थात् जिस उपाय द्वारा साधक को वह ज्ञान प्राप्त होता है जिससे उसकी पशु वासना का क्षय हो, ऐसी ही संयुक्त प्रभाव रखने वाली क्रिया 'दीक्षा' है। सद्गुरु इस क्रिया को अनेक प्रकार से सम्पन्न करने की क्षमता रखते हैं और जैसा कि **योग वशिष्ठ** में वर्णित है, उसके अनुसार सद्गुरु दर्शन, स्पर्श, शब्द के द्वारा भी शिष्य के भीतर शिवभाव उत्पन्न करने में समर्थ होते हैं—

दर्शनात् स्पर्शनात् शब्दान् कृपया शिष्यदेहके।
जनयेत् यः समावेशं शाम्भवं स हि दैहिकः।।

शास्त्रों में, दीक्षाओं के १०८ प्रकार वर्णित किए गए हैं, और इससे ही सिद्ध होता है कि दीक्षा का क्षेत्र कितना अधिक व्यापक रहा है। निश्चित रूप से इतने व्यापक क्षेत्र में केवल आध्यात्मिक दीक्षाएं ही नहीं आती वरन् भौतिक जीवन से सम्बन्धित दीक्षाएं भी आती हैं, और सद्गुरु की क्रिया ही यही होती है कि वे भोगों की उपलब्धि दीक्षाओं के माध्यम से अपने शिष्य को कराकर उसे पूर्णत्व की ओर अग्रसर करते हैं, **क्योंकि जब तक भोग का क्षय नहीं होगा तब तक व्यक्ति मोक्ष अथवा पूर्णता प्राप्त कर ही नहीं सकेगा।** प्राचीन काल में इसी कारण वश ये सभी दीक्षाएं स्पष्ट थीं और उन्हें प्रदान करने में सक्षम व्यक्तित्व, सद्गुरु भी थे, किन्तु कालांतर में इनका दुरुपयोग न हो अथवा कुपात्र न ग्रहण कर सके, इस कारणवश अनेक दीक्षाएं गोपनीय कर दी गयीं। जीवन में भौतिक पक्ष एवं आध्यात्मिक पक्ष दोनों को ही संवारने के लिए किस प्रकार से दीक्षाओं की नितांत आवश्यकता पड़ती है इसके विषय में **आद्य शंकराचार्य** का स्पष्ट कथन है–

"दीक्षा का तात्पर्य यह नहीं है कि इधर आपको दीक्षा दी और उधर आप सिद्ध हो गये या सफल हो गये, दीक्षा तो गुरु द्वारा प्रदत्त ऊर्जा से सफलता के निकटतम पहुंचने की क्रिया है, इसके बाद पूर्णता, सफलता, सिद्धि तो आपके विश्वास, श्रद्धा और व्यक्तिगत रूप से मानसिक एकाग्रता से मंत्र जप के द्वारा ही सम्भव है।"

बिना दीक्षां भवेत् पूजा, ध्यानं ज्ञानं च सिद्धि वै।
न पूर्णं न च सिद्धि वैं, एषा दीक्षा प्रधानतः।।

आज के युग में तो यह क्रिया और भी अधिक आवश्यक व व्यवहार में लाए जाने योग्य हो गयी है, क्योंकि व्यक्ति के जीवन का विस्तार घटते-घटते ६०-७० वर्ष की औसत आयु पर आकर टिक गया है, जबकि प्राचीन काल में ऋषियों-मनीषियों की सामान्य आयु कई सौ वर्ष होती थी और वे साधनाओं के माध्यम से मनोवांछित सफलता प्राप्त कर लेते थे। साधना ग्रंथों में सर्वत्र उल्लेख मिलता है कि अमुक साधना को एक बार करने पर या इतनी संख्या में मंत्र-जप करने पर मनोवांछित सफलता मिलती है, अमुक देवी या देवता प्रकट होता है, किन्तु वहां यह नहीं लिखा होता है कि उसी साधना को सिद्ध करने के पूर्व ऋषिगण कितने वर्ष केवल उसी देवी या देवता का चिन्तन कर स्वयं देवतामय बनने की क्रिया सम्पन्न करते थे, और यह भी एक सत्यता है कि साधना में जब तक साधक स्वयं देवतामय नहीं बनता तब तक वह पूर्णता या सफलता प्राप्त कर ही नहीं सकता। **आज इसी क्रिया को पूर्णता दी जा सकती है तो दीक्षा के माध्यम से, दीक्षा के द्वारा सद्गुरु का जो शक्ति प्रवाह होता है उसे रोम-रोम में समाकर के। दीक्षा तो वास्तव में शक्ति का द्वार खोलने की क्रिया है जिससे साधक अपने जीवन को निश्चित अर्थ दे सकता है–**

धनं अर्थ च कामं च मौक्षाद् पूर्णदः मुच्यते।
एकमेव भवद् दीक्षा सद्गुरुत्वं हि दीयते।।

केवल इतना ही नहीं सद्गुरु की भूमिका तो इससे भी कही अधिक विस्तृत व व्यापक होती है और वे ही एक ऐसे चैतन्य माध्यम होते हैं, जो साधक व देवी-देवता के मध्य की जीवित कड़ी होते हैं। साधक देवता को नहीं जानता और देवता साधक को नहीं जानते, जब कि देवता का साधक से परिचय होने पर ही उसे जीवन में मनोवांछित स्थिति या प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त हो सकता है। जैसा कि **तैतरियोपनिषद** में कहा गया है कि देवता, गुरु एवं साधक इन्हीं तीनों के पूर्ण समन्वय से सिद्धि को मूर्ति रूप प्राप्त होता है, उसमें कोई भी अतिश्योक्ति नहीं है–

दीक्षाद् भवति सिद्धिर्वै दीक्षाद् साफल्य मेव च।
दीक्षात् पूर्णतः दिच्यन्ते दीक्षात् सिद्धिर्न संशयः।।

यहां देवता अथवा देवी का तात्पर्य केवल आध्यात्मिक जीवन से ही नहीं वरन् प्रत्येक सिद्धि से है, और प्रत्येक सिद्धि देवता स्वरूप ही होती है चाहे वह अप्सरा साधना का क्षेत्र हो, मनोकामना पूर्ति की बात हो अथवा रोग-शोक का निवारण कर शरीर को सौन्दर्य युक्त बनाने के लिए कामदेव साधना की बात हो।

कोई भी साधना हो, दीक्षा प्राप्ति के उपरांत उसमें शिष्य के लिए करने को अधिक शेष नहीं रह जाता है, क्योंकि सद्गुरु अपनी ऊर्जा के प्रवाह द्वारा शिष्य के शरीर में वह शक्ति जाग्रत कर देते हैं जिससे मनोवांछित सफलता प्राप्त हो, और एक प्रकार से ९० प्रतिशत से भी अधिक सफलता तो साधक को यों ही एक झटके में मिल जाती है, जो शेष दस प्रतिशत रह जाता है उसमें साधक मंत्र-जप एवं साधना के द्वारा गुरु प्रदत्त ऊर्जा को संग्रहित करते हुए सफलता को हस्तगत कर ही लेता है। इसके अतिरिक्त यह

भी शास्त्रीय विधान है कि जब तक साधक किसी साधना से सम्बन्धित दीक्षा विशेष को नहीं प्राप्त कर लेता तब तक वह सफलता प्राप्त कर ही नहीं सकता।

अतः यह धारणा रखना कि गुरु दीक्षा प्राप्ति के बाद अन्य दीक्षाएं लेने की क्या आवश्यकता है, अपूर्ण है। साधक को प्रत्येक स्थिति एवं प्रत्येक नयी साधना के पूर्व सम्बन्धित दीक्षा प्राप्त करनी ही चाहिए। जो साधक दीक्षा प्राप्त कर चुके हों उन्हें प्रार्थना करके प्रयास पूर्वक शक्तिपात की याचना करनी चाहिए क्योंकि हमारे नित्य व्यवहार में जो दोष व्याप्त होते रहते हैं उनका शमन इन्हीं प्रकारों से सम्भव होता है—

भौतिकः दैविकश्चैव दैहिकः पूर्णतः परं।
एकमेव प्रयत्नेन ''दीक्षा'' हि सफलं नर।।

यदि दो टूक शब्दों में पूछा जाय कि — जीवन की सफलता किसमें है? इस अल्पकाल में ही व्यक्ति समस्त भौतिक सुखों को भोगता हुआ अपने आध्यात्मिक लक्ष्य को कैसे प्राप्त कर सकता है? तो निश्चय ही यही उत्तर दिया जाएगा कि कुण्डलिनी जागरण के द्वारा ही व्यक्ति अपने जीवन को सम्पूर्ण रूप से सफल, सुखी और सम्पन्न बना सकता है, क्योंकि कुण्डलिनी जागरण क्रिया का अर्थ है कि इसी शरीर में स्थित शक्ति को जागृत कर लेना जो सुप्तावस्था में व्यर्थ चली जाती है। मूलाधार में सुप्त इस शक्ति का जागरण केवल गुरु के स्पर्श से ही सम्भव हो सकता है। कुण्डलिनी जागरण की अन्य प्रामाणिक विधि है ही नहीं, उच्च कोटि के योगी भी अपने प्रयासों से जीवन भर मूलाधार के आगे नहीं बढ़ पाते जबकि मूलाधार में सुप्त शक्ति को **शक्तिपात दीक्षा** के माध्यम से षट्चक्र भेदन के द्वारा अन्त में **सहस्रार दीक्षा** के माध्यम से पूर्णता प्रदान की जाती है। **गुरु गौड़पाद** ने इस विषय में अपना मत इस प्रकार प्रकट किया है—

शक्ति कुंण्डलिनी चैव, पूर्ण जाग्रत्व प्राण वै।
गुरोःप्रदातव्य दीक्षा वै, स सिद्धः नात्र संशयः।।

वास्तव में समर्थ गुरु की उपस्थिति और उनका कृपा स्पर्श प्रत्येक युग की घटना नहीं हुआ करती। कुण्डलिनी का विवेचन करने वाले, कुण्डलिनी का स्वरूप बताने वाले तो बहुत से गुरु होते हैं, लेकिन अपने ही तप के प्रभाव से, अपनी ही दीक्षा पद्धति के माध्यम से अपने शिष्य की कुण्डलिनी जाग्रत कर, उसे अत्यन्त सीमित समय में जीवन की पूर्णता दिला देना सद्गुरु का कार्य होता है, और आज ऐसे अनेक शिष्य हैं जो कुछ माह पूर्व **षट्चक्र भेदन दीक्षा** अथवा **शक्तिपात से कुण्डलिनी जागरण दीक्षा** लेने के बाद अपने आन्तरिक और वाह्य जीवन में आए परिवर्तनों को अनुभव कर रहे हैं।

इसी कारणवश प्रारम्भ में कहा कि दीक्षा ही इस युग की साधना है, क्योंकि आज का युग जिस प्रकार से छल-कपट, व्याभिचार, असत्य आदि से बोझिल हो गया है उसमें न तो प्राचीन परम्पराओं के लिए कोई स्थान बचा है, न ही साधनाओं आदि के लिए कोई सम्मान, ऐसे में भी यदि कोई साधक समस्त दूषित परिवेश से लड़ता हुआ, बुद्धि के जाल से बाहर निकल कर सद्गुरु के द्वार तक उपस्थित हो जाता है, दीक्षा के लिए याचना करता है तो वही साधक है। समाज के तर्क-कुतर्क में भी निरन्तर अप्रभावित रहना, यह भी साधना ही है, और साधक ऐसी ही साधना कर दीपक से सूर्य बनने की ओर अग्रसर होते हैं— **सद्गुरु के कृपा स्पर्श 'दीक्षा' के द्वारा।**

और ऐसी ही दीक्षाओं का सार सिमट आया है इन्हीं २१ दीक्षाओं में—

१. **षोडश कला दीक्षा**
२. **जीवन मार्ग दीक्षा**
३. **गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा**
४. **अष्ट लक्ष्मी दीक्षा**
५. **कुबेर सिद्धि दीक्षा**
६. **राज योग दीक्षा**
७. **क्रिया योग दीक्षा**
८. **सम्मोहन दीक्षा**
६. **सिद्धाश्रम प्रवेश दीक्षा**
१०. **अनंग दीक्षा**
११. **महालक्ष्मी दीक्षा**
१२. **मनोवांछित कार्य दीक्षा**
१३. **गृहस्थ सुख - समृद्धि दीक्षा**
१४. **कुण्डलिनी जागरण दीक्षा**
१५. **पूर्ण पौरुष प्राप्ति दीक्षा**
१६. **सहस्रार जागरण दीक्षा**
१७. **अप्सरा दीक्षा**
१८. **गुरु प्रत्यक्ष सिद्धि दीक्षा**
१६. **राज्याभिषेक दीक्षा**
२०. **सर्व साधना सिद्धि दीक्षा**
२१. **धन्वन्तरी दीक्षा**

श्राद्ध विधान

मृत पूर्वजों के प्रति सम्मान व्यक्त करना हमारा धर्म है।

अपने परिवार के मृत व्यक्तियों का सम्मान करना केवल मानव जाति की विशेषता रही है। सनातन धर्म में इसे भावनात्मक रूप से तो अपनाया ही गया, आगे बढ़कर वैज्ञानिक आधार पर भी जांचा-परखा गया। इस बात के सूक्ष्म भेद प्राप्त करते हुए कि मृत्योपरांत व्यक्ति का क्या हश्र होता है, उसे विविध प्रकार से सन्तुष्ट व परितुष्ट करने के विधान रचे गए। श्राद्ध इसी का नाम है और यह क्रिया वास्तव में केवल इस आश्विन माह की कृष्ण प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक ही नहीं की जाती, वरन् मूल रूप से तो सनातन धर्मी व्यक्ति प्रत्येक माह की अमावस्या को ही अपने पूर्वजों का श्राद्ध कर उनको सन्तुष्ट करने का प्रयास करता रहा है।

शास्त्रों में श्राद्ध के १२ प्रकार वर्णित किए गए हैं, और उससे स्पष्ट होता है कि श्राद्ध कर्म तो एक ऐसी प्रक्रिया है जिसे प्रत्येक शुभ व मंगल अवसर पर किया जाता है। विवाह, सीमन्तोन्नयन, पुंसवन आदि संस्कारों के समय भी श्राद्ध की क्रिया सम्पन्न करने का विधान है, जिसका तात्पर्य यही है कि हमारे जीवन की प्रत्येक घटना- चाहे वह कितनी भी छोटी क्यों न हो, पितरों की सूक्ष्म उपस्थिति में ही घटित हो, हमें उनका आशीर्वाद प्राप्त हो तथा सबसे बड़ी बात उनके द्वारा सदैव सुरक्षा चक्र प्राप्त हो।

"युग के परिवर्तन के साथ-साथ यद्यपि प्राचीन परम्पराओं का पालन समाप्त हो गया है, किन्तु उनकी महत्ता और जीवन में आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता।

श्राद्ध विधान एक ऐसी पद्धति है, जो शनैः - शनैः अप्रचलित होने के साथ-साथ अव्यवहारिक भी मान ली गई है किन्तु इसका वास्तविक उद्देश्य क्या रहा है?"

वर्तमान में श्राद्ध का, पितृ पक्ष का अर्थ मात्र इतना ही लगा लिया गया है कि ये वर्ष के कुछ ऐसे दिन होते हैं जबकि कोई मंगल कार्य सम्पन्न नहीं किया जा सकता है, और मृत आत्मायें इस धरा पर उतर आती हैं, जो इसका बहुत ही सीमित अर्थ है। यह इतनी सामान्य घटना नहीं है वरन् इसका रहस्य तो ज्योतिष के ग्रंथों से मिलता है। पितृ पक्ष के काल में सूर्य इस प्रकार स्थित होता है जिससे इन क्षणों में किए गए श्राद्धकर्म द्वारा पितृ वर्ग को पूरे वर्ष भर के लिए तृप्ति मिल जाती है, और फिर एक सद्गृहस्थ को पूरे वर्ष नित्य श्राद्ध के विधान की पालन करने की आवश्यकता शेष नहीं रहती, यद्यपि ऐसा कोई बन्धन

नहीं है कि साधक केवल इन्हीं दिनों में अर्थात् आश्विन माह में ही अपने पितृवर्ग का श्राद्ध करें। सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण भी इसके लिए अत्यन्त शुभ मुहूर्त माने गए हैं।

उचित ज्ञान के अभाव के साथ-साथ वर्तमान में भावनात्मक रूप से भी इतनी कमी आ गई है, जिससे व्यक्ति अपने पितरों के प्रति कर्त्तव्य का निर्वाह करने में अपने-आप को असमर्थ पाता है। यह भावनात्मक कमी तो स्वयं उसके भौतिक जीवन में भी इस प्रकार समा चुकी है कि वह एक ही छत के नीचे रहते हुए भी अपने परिवार के जीवित सदस्यों से ही तालमेल नहीं बिठा पाता तो यदि मृत सदस्यों के प्रति भावनात्मक लगाव नहीं रह जाता तो आश्चर्य ही कैसा? किन्तु यह भी एक सत्यता है कि जिस घर में आध्यात्मिकता, परम्पराओं का पालन, गुरु अथवा पितृ वर्ग के प्रति असम्मान का भाव होता है वहां मनोमालिन्य, दीनता और आपस में कलह जैसी बातें बनी रहती हैं, भले ही आज के युग में कोई इस तथ्य को स्वीकार करे अथवा न स्वीकार करे।

श्राद्ध की मूल भावना तो कभी की समाप्त हो चुकी है और इस विषय में इतनी अधिक उलझाव भरी बातें व्याप्त हो चुकी हैं कि सामान्य रूप से कोई व्यक्ति पितृवर्ग का अर्थ केवल अपने परिवार के मृत सदस्य से ही लगाता है, **जबकि पितृ वर्ग तो सर्वथा एक अलग वर्ग है, जो अत्यधिक पवित्र और उच्चकोटि का वर्ग है, जिस प्रकार देव वर्ग, ऋषि वर्ग, किन्नर वर्ग आदि उच्चकोटि की योनियां हैं**। पितृवर्ग की तुलना साक्षात् भगवान ब्रह्मा से की गई है और यह वर्णित किया गया है कि भगवान ब्रह्मा भी इनकी सन्तुष्टि का प्रयास करने में तत्पर रहते हैं। पितृ-वर्ग नौ प्रकार के होते हैं तथा इनमें से **सोमप** नामक पितृ वर्ग से ही सम्पूर्ण प्रजासृष्टि का जन्म हुआ है।

उसके उपरान्त भी एक सामान्य सी शंका प्रत्येक व्यक्ति के मन में आती है कि हमारे परिवार के मृत सदस्य तो दूसरे स्थान पर जन्म ले चुके होंगे फिर वे हमारे द्वारा किए गए श्राद्ध को कैसे ग्रहण कर पायेंगे? और यह प्रश्न तर्क संगत है। उसका उत्तर यही पितृवर्ग है, जो नौ वर्गों में विभाजित है और सम्पूर्ण रूप से दिव्य पितृवर्ग कहलाता है। किसी परिवार के मृत सदस्य मर्त्य पितृवर्ग के सदस्य कहलाते हैं, जिसको यह दिव्य पितृवर्ग ही श्राद्ध की सूक्ष्म भावना या अंश पहुंचाने में समर्थ होता है एवं किसी परिवार के मृत पूर्वज का जहां जन्म हो चुका होता है वहां तक उसे निःस्वार्थ भाव से ले जाने का कार्य करता है।

आज व्यक्ति अपने परिवार के जीवित सदस्यों से ही तालमेल नहीं बिठा पा रहा फिर मृत सदस्यों की उपेक्षा में आश्चर्य भी कैसा?

किन्तु जहां पितृ वर्ग की उपेक्षा है वहां अभाव, पीड़ा, कष्ट भी स्वाभाविक ही है।

पितृ पक्ष का समय इसी अभाव की पूर्ति करने का उपयुक्त काल है।

यह सृष्टि व्यक्ति के आंखों के समक्ष जितनी दिखाई पड़ती है, अपने अस्तित्व में केवल उतनी ही नहीं है। सूक्ष्मजगत में अनेकानेक भेद छुपे हैं, जिन्हें तर्क और बुद्धि से नहीं अपितु चेतना, साधना और प्रज्ञा से ही अनुभव किया जा सकता है, और पितृवर्ग का सम्पूर्ण क्रिया-कलाप इसी प्रकार की घटना है। यदि जन्म के ताने-बाने इतने सूक्ष्म न होते, व्यक्ति मृत्यु के उपरान्त भी अपने पूर्व जन्म और परिवार से न जुड़ा रह जाता तो ऐसा क्यों होता है कि कोई व्यक्ति सामान्य से घर में भी जन्म लेकर सन्तुष्ट रहता है तथा उन्नति का जीवन प्राप्त कर लेता है, और वहीं दूसरी ओर एक सम्पन्न वर्ग में जन्म लिया व्यक्ति पूरे-पूरे जीवन भर हताश एवं निराश सा उलझा-उलझा जीवन ही जीता रहता है। **इन सभी जटिल बातों के पीछे ऐसी ही अनेक बातें छिपी हैं, जहां कि कहीं पर किसी व्यक्ति की जीवात्मा का पोषण उसके वंशजों द्वारा होता है और कहीं नहीं।** यदि इस बात को आज अनुभव किया जा सके, पुनः एक स्वस्थ परम्परा को जीवित किया जा सके, तो ऐसा बहुत कुछ घटित हो सकता है जो प्रकट अथवा भौतिक रूप से दिखाई न पड़े किन्तु उसका अस्तित्व तो होगा ही, दूसरी ओर यह भी सत्यता है कि जो क्रिया, श्रद्धा, सम्मान आज हम अपने पूर्वजों के प्रति अर्पित करें कल को वही क्रिया हमारे वंशज भी हमारे साथ करेंगे, और जीवन-मृत्यु के इस अविराम चक्र में ऐसी परम्पराओं के द्वारा ही उस सूक्ष्मतत्व को पुष्ट किया जा सकता है, जिसे हम जीवात्मा कहते हैं।

श्राद्ध का अर्थ केवल ब्राह्मण को भोजन कराना मात्र ही नहीं होता है, यह तो श्रद्धा व्यक्त करने का सबसे स्थूल रूप है और जिस प्रकार शास्त्रों में श्राद्ध कर्म करने के योग्य ब्राह्मणों के वर्णन मिलते हैं, उसे जिन लक्षणों से युक्त होने की आज्ञा मिलती है उसके आधार पर तो खेद पूर्वक यही कहना पड़ेगा कि हम श्राद्ध नहीं करते भोज कराते हैं। भोज की तुष्टि से पितरों का कल्याण नहीं हो सकता, उल्टे दोष ही लगता है।

यद्यपि परिवार के मृत सदस्य प्रत्येक अमावस्या को ही सन्तुष्टि प्राप्त करने के लिए उपस्थित होते हैं, किन्तु पितृपक्ष में तो वे पूरे पन्द्रह दिन तक वायु

रूप में अपने वंशजों के द्वार पर खड़े ही रहते हैं। यदि उस काल में भी उन्हें अपने वंशजों से तर्पण आदि नहीं प्राप्त होता तो वे पितृपक्ष बीत जाने के बाद भी प्रतीक्षा करते रहते हैं, और जब तक सूर्य का संक्रमण वृश्चिक राशि में नहीं हो जाता तब तक वे घोर पीड़ा के साथ प्रतीक्षारत रहते हैं तथा अंत में हताश-निराश वापस लौट जाते हैं, जिसका प्रभाव परिवार पर अच्छा नहीं पड़ता है।

यहां एक बात और भी उल्लेखनीय है कि यह सदैव आवश्यक नहीं कि परिवार के मृत सदस्य प्रेत योनि में ही हों, वे प्रेत योनि में न जाते हुए भी जन्म और मरण के बीच एक विचित्र सी अतृप्तावस्था में रह जाते हैं। जो प्रेत योनि में चले जाते हैं, वे परिवार के सदस्यों द्वारा उनकी मुक्ति के उपाय न करने पर भयंकर उत्पात मचाकर रख देते हैं।

शास्त्रों में ऐसी अनेक स्थितियों के लिए पृथक-पृथक विधान रचे गए हैं, सपिंडीकरण जैसी विधियां बनाई गई हैं, मृत सदस्य को पितृवर्ग में सम्मिलित किए जाने के उपाय वर्णित गए हैं, प्रेत योनि से मुक्ति दिलाने के उपाय कहे गए हैं, किन्तु शास्त्रों के ज्ञाता और पूर्णरूप से विधि-विधान पूर्वक उन विधियों को सम्पादित कराने वाले विद्वान अब रह ही कितने गए हैं? यह भी एक विडम्बना है कि जहां कोई श्रद्धालु व्यक्ति अपने पूर्वजों की तृप्ति हेतु शास्त्रोक्त क्रियाएं सम्पन्न कराना चाहता है, वहां उसे केवल भोजन ग्रहण करने वाले ब्राह्मण ही मिलते हैं, जो हड़बड़ी में कुछ खाकर, कुछ बांधकर अगले घर की राह देखते हैं! **जबकि शास्त्रों में वर्णन है कि श्राद्ध हेतु जो ब्राह्मण भोजन ग्रहण करें वह एक दिन एक ही स्थान पर भोजन ग्रहण करें।** इसके अतिरिक्त महानगरों में अब ऐसा सुलभ नहीं रह गया है कि साधक ऐसे ब्राह्मण वर्ग की खोज करने निकले और वह उसे प्राप्त हो जाए। अतः ऐसी परिस्थिति में उचित यही रह गया है कि साधक स्वयं ही अपने पुरुषार्थ द्वारा अपने पितृवर्ग को सन्तुष्टि प्रदान करें और ऋण से मुक्त हो सकें। जिस कार्य को कर्मकांड के रूप में किया जा सकता है उसी कार्य को साधना के रूप में भी किया जा सकता है। साधना और कर्मकांड में कोई बहुत बड़ा अंतर नहीं होता। कर्मकांड के ज्ञाता विशिष्ट होते हैं जबकि साधना की पद्धति सरल और सबके लिए होती है। ऐसी ही साधनाओं में एक प्रमुख साधना है जो श्राद्ध पद्धति के स्थान पर आश्विन माह की अमावस्या को सम्पन्न की जाती है। यह **पितृ विसर्जन अमावस्या** के नाम से भी जानी जाती है और इस दिन कोई भी साधक अपने पूर्वजों (पिता, पितामह, प्रपितामह) के प्रति सम्मान व्यक्त कर सकता है। बहुधा व्यक्ति को इस बात की जानकारी नहीं होती कि उसके परिवार में कोई सदस्य भारतीय पञ्चांग की दृष्टि से किस तिथि में मृत्यु को प्राप्त हुआ और **ऐसी स्थिति में उचित रहता है कि साधक पितृ विसर्जन अमावस्या को ही यह साधना सम्पन्न करें।**
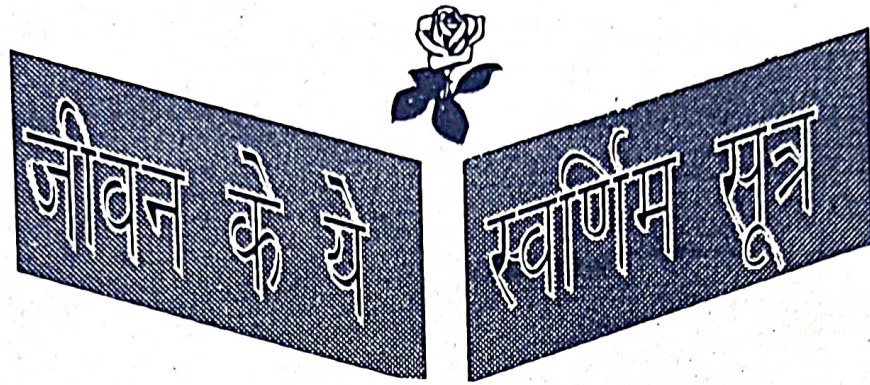
पितृ पक्ष का अर्थ यही है कि व्यक्ति इन दिनों में अपना शास्त्रोचित कर्त्तव्य पूर्ण कर शेष वर्ष भर के लिए मुक्त रहे।

सम्पूर्ण पितृ पक्ष में ही नहीं, जब तक सूर्य वृश्चिक राशि में नहीं चला जाता, तब तक पितृ वर्ग अपनी तुष्टि का उपाय ढूंढता ही रहता है।

इसके लिए आवश्य है कि साधक के पास **सोमप यंत्र** हो जो एक ताम्रपत्र पर अंकित हो और दिव्य पितृ मंत्रों से चैतन्य किया गया हो। ऐसे यंत्र पर अपने परिवार की पिछली तीन पीढ़ियों तक का तर्पण भली भांति किया जा सकता है। पितृ विसर्जन अमावस्या अर्थात् **दिनांक ५/१०/९४** की प्रातः शुद्ध श्वेत वस्त्र पहन पूर्वाभिमुख होकर बैठें। यदि सम्भव हो तो घर के बीचों-बीच खुले स्थान पर बैठें, और सामने श्वेत वस्त्र पर इस यंत्र को स्थापित कर दें। यंत्र के समक्ष अपने जिन-जिन पूर्वजों के प्रति सम्मान व्यक्त करना हो उनकी उपस्थिति के प्रतीक के रूप में उतने ही **लघु नारियल** स्थापित करें, सुगन्धित अगरबत्ती लगाएं व यंत्र पर चंदन का टीका लगाएं। इसके उपरान्त **पितृरेश्वर माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करें —

मंत्र

ॐ पितृेश्वर मुक्तये नमः

मंत्र-जप के उपरान्त समस्त सामग्री को आसन व वस्त्र सहित किसी सद्ब्राह्मण को दक्षिणा के साथ दान में दे दें। यदि ऐसा करने में कोई बाधा हो तो सम्पूर्ण सामग्री को किसी वटवृक्ष के नीचे रख दें। **ऐसा करने से साधक को सम्पूर्ण श्राद्ध कर्म करने से भी अधिक पुण्य प्राप्त होता है, और निश्चय ही पितृवर्ग की तृप्ति द्वारा उसके जीवन में सुख-संतोष का आगमन होता है।**

- आप मौत को याद रखोगे, तो मौत भी आपको याद रखेगी।
- अपने लाड़ले बेटे के मुंह में सोने का निवाला दीजिये, पर उस पर आंख शेर की तरह रखिये।
- आप जब किसी भी क्षेत्र में सर्वोच्च स्तर पर हों, तब उस क्षेत्र से हट जांय और नया रास्ता अपना लें।
- प्रेमिका सब कुछ दे देना चाहती है और पत्नी सब कुछ ले लेना चाहती है, यही दोनों में मूलभूत अन्तर है।
- जीवन का सार स्वास्थ्य है और सब कुछ बेमानी है।
- ''अनासक्त'' भाव से अगर जीवित रहते हैं, तो निश्चय ही आप सौ साल से ज्यादा जीवित रह सकते हैं।
- प्रेम दबे पांव आता है और भड़भड़ाकर जीवन से जाता है।
- प्रेमिका रोमांस की पूर्णतः जानकार होती है और पत्नी व्यवहारिकता की।
- अगर प्रेम में लुका- छिपी और रोमांच नहीं है, तो उस प्रेम में आनन्द भी नहीं है।
- विवाह, रोमांच और साहस का दमन कर अपनी कब्र खुद ही खोदता है।
- जीवन केवल भोजन, वेतन और बीमे से ही नहीं चलता, उसमें प्यार की 'थ्रिल' और थिरकन भी होनी चाहिए।
- जोखिम का दूसरा नाम ही प्यार है, जहां जोखिम नहीं, वहां प्यार हो ही नहीं सकता।
- साधना में सफलता का मूल मंत्र है – ''शरीरं नाशयति वा प्राप्यति''।
- यौवन, मुस्कराहट और संगीत भाग्यशाली व्यक्तियों के जीवन में ही स्थायी रूप से होता है।

प्रत्यक्ष

जगदम्बा महालक्ष्मी साधना शिविर

१२-१३ सितम्बर १९९४

बैतूल

(श्री नन्दकिशोर जी श्रीमाली जी के सान्निध्य में)

एक अद्‌भुत अनिवर्चनीय सिद्धिदात्री शिविर

भगवती सिद्धिदात्री महालक्ष्मी का चारों वेदों से युक्त गोपनीय

साधना जिसके माध्यम से धन, यश, मान, ऐश्वर्य प्राप्त होगा ही।

एक दुर्लभ शिविर, एक गोपनीय रहस्यों से युक्त शिविर, एक सिद्धिदायक शिविर . . .

ऋण, कष्ट, दुःख, दारिद्र्य, गरीबी एवं पारिवारिक परेशानियों से मुक्ति पाने का सफल शिविर

स्थानीय सम्पर्क

शिविर शुल्क - ३३०/-

श्री वरूण जैतली, अमित सक्सेना, निखिल वाणी टीम, भोपाल

श्री आई. एस. पदाम, पो० - खण्डारा, बैतूल

श्री महेन्द्र सोनी (एडवोकेट), थाना - कोठी बाजार, बैतूल, (म. प्र.), फोन : (कोड-०७१४१) ३००३८

श्री राजू मिश्रा, पवन एस. टी. डी., बैतूल गंज, बैतूल (म. प्र.)

श्री आई० डी० कुमरे (एवं श्री गोकुल प्रसाद बचले), कोलार कॉलोनी, जी/७, होशंगाबाद, (म. प्र.)

श्री जनक लाल मवासे, पो०- झल्लार, बैतूल, (म. प्र.)

श्री धुर्वे, विदिशा (म. प्र.)

आयोजन स्थल : बैतूल रेलवे स्टेशन के निकट

नोट : दिल्ली, हरियाणा, पंजाब आदि से पहुंचने के लिए दिल्ली से जी. टी. एक्सप्रेस एवं महामाया सदन ट्रेन जाती है। वायुयान से भोपाल या नागपुर पहुंच कर ट्रेन से या टेक्सी से पहुंचा जा सकता है।

सौन्दर्य का खजाना आयुर्वेद

डॉ० विभा
भिलाई (म.प्र.)

शरीर के स्वास्थ्य की ही नहीं बल्कि सौन्दर्य की रक्षा करना जरूरी भी होता है और कठिन भी। सुन्दर दिखना कौन नहीं चाहता, विशेषकर स्त्री वर्ग में अपने-आप को सुन्दर और आकर्षक बनाए रखने की लालसा जन्मजात ही रहती है। वैसे तो सुन्दर और कुरूप शरीर की रचना ईश्वर की होती है परन्तु यह भी सत्य है कि ईश्वर के दिए हुए रंग-रूप को ईश्वर द्वारा प्रदत्त वनस्पतियों, जड़ी-बूटियों से और भी अधिक निखारा जा सकता है, क्योंकि इन जड़ी-बूटियों ने यह प्रमाणित कर दिया है कि इनसे लाभ ही लाभ हैं, कहीं कोई हानि नहीं है।

सौन्दर्य वह है जो बेदाग और कोमलता की मिसाल हो, जिसे देखने वाले टकटकी लगाकर देखते रह जाए। आजकल प्रचलित बाजारू कृत्रिम सौन्दर्य प्रसाधन हानिकारक और त्वचा को मलिन करने वाले हैं।

सभी पति-पत्नी चाहते हैं कि उनकी होने वाली संतान बहुत ही गोरी और सुन्दर हो और वे स्वयं भी सदा युवाओं जैसे आकर्षक व तेजस्वी दिखें। वृद्धावस्था में भी झुर्रियों के स्थान पर त्वचा चिकनी व चेहरा दमकता हुआ प्रतीत हो। हमारे यहां आयुर्वेद के कुछ ऐसे अचूक नुस्खे तैयार किए गए हैं, जिनके प्रयोग से शरीर में नवजीवन और शक्ति का संचार होता है, रक्त शुद्ध होता है व सुन्दरता में चार चांद लग जाते हैं।

यहां कुछ परीक्षित और प्रामाणिक दवाओं के असरकारक नुस्खे प्रस्तुत हैं, जिन्हें आजमाकर प्रत्येक व्यक्ति अपने अंदर स्वभाविक सम्मोहित कर देने वाला आकर्षण पैदा कर सकते हैं।

काली दाग युक्त त्वचा

ऐसे व्यक्तियों को मौसम भर एक पाव टमाटर प्रतिदिन खाना चाहिए और प्रतिदिन दो ग्रेन **नाग केसर** दूध में मिलाकर पीना चाहिए, शर्त यह है कि नाग केसर शुद्ध हो। **चन्द्रमुखी** उबटन से प्रतिदिन स्नान करें। सौन्दर्यवर्द्धक गौरांग तेल को रात्रि में पूरे शरीर पर या चेहरे, गला व बांहों में लगाकर सोयें, प्रातः बिना साबुन के मुख धो लें। एक ही माह में रंग निखर जाएगा, त्वचा गोरी, चमकीली, दाग, रहित चिकनी दिखेगी।

चेचक के दाग

चेचक के दाग, निशान खूबसूरत मुखड़े का आकर्षण ही खत्म कर देते हैं। इन्हें मिटाने के लिए पन्द्रह दिनों तक लगातार चेचक दाग नाशक फेस पैक लगाना चाहिए और दिन में एक बार ब्यूटी क्रीम लगाकर मालिश करनी चाहिए, देखते ही देखते सारे निशान व दाग नष्ट होने लगेंगे।

आंखों के नीचे कालापन

कुछ युवक-युवतियों की आंखों के नीचे बहुत से काले, स्याह, गड्ढेनुमा दाग पड़ जाया करते हैं। यह कालापन मानसिक तनाव, अत्यधिक चिन्ता, खून की कमी, खून की खराबी और शुष्क सूखी त्वचा होने के कारण अक्सर होते देखा गया है। इसे निम्न उपचारों द्वारा जड़-मूल से विदा कर सकते हैं। एक माह तक **शुद्ध अश्वगंध नागोरी बूटी** के चूर्ण को दूध में उबालकर पियें और पन्द्रह दिनों तक तीन ग्रा० **बच** एक पाव गाय के दूध में सेवन करें।

कालापन बहुत पुराना या अधिक हो, तो **नयानामृत लेप** को रात में सोते समय लगाएं और **कान्तिवर्द्धक ऑयल** की मालिश करें। पन्द्रह दिनों में ही चमत्कारी असर देखने में आने लगेगा। आंखों के नीचे-ऊपर का पूरा कालापन त्वचा के रंग का हो जाएगा।

रूप निखारने व गोरेपन के लिए

मुखड़े पर तेज, ओज व चमक लाने के लिए लाल चंदन में हल्दी, मलाई, नींबू व गुलाब जल मिलाकर चेहरे पर दस मिनट तक मलिये और बिना साबुन के मुख धोकर **प्रियदर्शिनी क्रीम** लगाइए। शतावर, शुद्ध मुलहठी के चूर्ण को सुबह व शाम शहद में छः ग्रा० की मात्रा में लीजिए। स्नान के समय स्वरूप **गौरांग उबटन** एक माह तक इस्तेमाल कीजिए।

पन्द्रह दिनों में ही सौन्दर्य का खजाना आपके पास नजर आने लगेगा।

गोरी संतान प्राप्ति के लिए

स्वस्थ और गौरवर्ण की संतान कौन नहीं चाहता। गर्भ स्थापना के शुरू के दो-तीन माह से लेकर प्रसव काल तक के दिनों में बिना नागा खाली पेट यदि गर्भवती महिला **गर्भ सौन्दर्यपाल चूर्ण** तीन ग्रा० मक्खन से लेती है, तो उसकी संतान बहुत ही गौरवर्ण की स्वस्थ और सुन्दर उत्पन्न होती है।

कील- मुंहासे व मुंहासों के दाग

किशोरावस्था की शुरुआत होते ही तैलीय त्वचा वाले व्यक्तियों को प्रायः कील, मुंहासे होना प्रारम्भ हो जाते हैं। खून की खराबी और पेट की गड़बड़ी भी मुंहासे होने का प्रमुख कारण रही है। मुंहासे ठीक हो जाने के बाद उनके दाग व गड्ढेनुमा बदरंग निशान चेहरे की खूबसूरती को बिगाड़ देते हैं, ऐसे में **'नरकचूर'** को पानी में पीसकर लेप करने से फायदा होता है। छुआरे की गुठली सिरके में घिसकर लगाने से भी मुंहासे ठीक होते हैं। नागकेसर को कूट-पीसकर सात ग्रा० पानी से लेने पर रक्त शुद्ध होकर मुंहासे ठीक होते हैं, यदि मुंहासे व उसके दाग बहुत दिनों के हैं, तो मुंहासे नाशक **अनुपम लेप** और मुंहासे नाशक **अनुपम क्रीम** को पन्द्रह दिनों तक आजमायें, नियमित रूप से दिन में दो बार लगाएं। एक हफ्ते में मुंहासे जड़ से निकल जाएंगे और फिर कभी मुंहासे नहीं होंगे। इसके लिए **रक्तशोधक चूर्ण** एक माह तक दिन में एक बार खाना बहुत ही लाभदायक होगा, इससे मुंहासों के दाग तक नजर नहीं आएंगे।

मुखमण्डल के मस्से व झाइयां

मस्सों के लिए मोर की वीठ को सिरके में घिसकर लगाइये। मस्से नाशक **सज्जी ऑक्साइड लोशन** को मात्र दो बार मस्से पर लगाइए, मस्सा जड़ से बिना तकलीफ के निकल जाएगा।

पेट की खराबी, खून की खराबी, रूखी-शुष्क त्वचा का होना, मानसिक तनाव, प्रदर का होना, गंधक और पोटैशियम तत्व की कमी के कारण झाइयां अक्सर चेहरे पर व कहीं-कहीं पूरे शरीर पर भी हो जाया करती हैं। यदि आपके सुन्दर मुखड़े पर झाइयां हैं, तो रीठे की छाल घिसकर व तुलसी पत्तों का रस पानी-मिलाकर लीजिये, बहुत लाभ होगा। झाइयों को जड़ से मिटाने के लिए **रूप निखार लेप** को पन्द्रह दिन लगाइये और आप देखेंगे कि झाइयों का नामोनिशान नहीं रहेगा।

बालों का झड़ना, भूरा या सफेद होना या गंजापन

हमारे शरीर में फास्फोरस, सिलिकन और सल्फर की कमी से बालों की जड़ें सड़ने लगती हैं और बाल झड़ने लगते हैं। कई बार तो सिर के बाल झड़ने का रोग बहुतों में इस हद तक देखा जाता है कि बाल गिरते-गिरते गंजापन ही आ जाता है। इसके लिए **लहसुनादि तेल** लगाना चाहिए। आठ-दस जड़ी-बूटियों से युक्त केशवर्द्धक ब्राह्मी हेयर आयोडिन चूर्ण एक माह तक रात्रि में लगाने से गंजापन नजर ही नहीं आता। नए बाल निकलने शुरू हो जाएंगे, बस शर्त यह है कि उम्र से पहले का गंजापन हो। बालों की जड़ें मजबूत होंगी, बालों का झड़ना बंद हो जाएगा। बालों का झड़ना रोकने के लिए, लंबे व घने बालों के लिए अमरखेल बूटी, ब्राह्मी, भृंगराज की पत्तियों व जड़ के चूर्ण से सिर धोकर **केशनिखार सिलिकन गंधक तेल** लगाएं। एक ही माह में बाल घने, लम्बे व चमकदार दिखने लगेंगे। असमय में पक रहे बालों को काला स्थायी रूप से करने के लिए भृंगराज लेप लगाकर एक माह तक सिर धोयें। कायाकल्प चूर्ण युक्त त्रिफला एक माह तक खाली पेट छः ग्राम शहद से खाएं। बालों में खुजली व रूसी है, तो नींबू लगाकर त्रिफला से सिर धोयें, यदि रूसी बार-बार होती हो, तो रूसी नाशक तेल लगाएं। एक हफ्ते में रूसी साफ होकर बाल चमकदार हो जाएंगे। जुंएं भी मिट जाएंगी।

मोटापा दूर करने के लिए

मोटापा दूर करने के लिएं प्रतिदिन खाली पेट प्रातः एक गिलास गर्म पानी में एक नींबू और दो चम्मच शहद फेंटकर पीना चाहिए, और आयुर्वेदीय **मोटापा रिपु चूर्ण** को शहद में दोनों समय एक माह तक खाने से और मोटापा नाशक (लिक्वेड) रस एक माह तक पीने से शरीर छरहरा, सौन्दर्यशाली हो जाता है।

मोटापा बढ़ाने वाली दवा

प्रतिदिन सुबह-शाम एक पाव ठण्डे दूध में दो-तीन चम्मच शहद डालकर पियें और **मोटापावर्द्धक आनन्द चूर्ण** एक माह तक खाएं, और फिर अपना वजन नाप कर देख लीजिए आश्चर्यजनक सुधार होगा।

भारतीय जीवन परम्परा अपने साथ शक्ति की अभिन्नता को निरंतर अनुभव करती ही रही है, और इसी का प्रमाण है वर्ष के दो संक्रमण कालों में पड़ने वाली दो नवरात्रियां — चैत्र नवरात्रि एवं आश्विन नवरात्रि। शक्ति को लेकर आज तथाकथित सभ्य समाज चाहे जो भी धारणा बनाए, इसे दूषित अथवा व्यभिचारिता समझे किन्तु उसी के पूर्वजों ने शक्ति की न तो कभी उपेक्षा की, न असम्मान, वरन् उन्होंने शक्ति की लौकिक जीवन में आवश्यकता को समझने के साथ-साथ यह भी घोषित किया कि शक्ति-प्राप्ति के द्वारा ही व्यक्ति अपने जीवन का परमार्थ प्राप्त कर सकता है। **दुर्बल के लिए तो ईश्वर-प्राप्ति भी सहज नहीं है। दीनता और शरणागत होने की भावभूमि तो बाद के चिन्तन हैं, मूल चिन्तन तो यही है कि मैं समर्थ हूं और जो भी उचित है उसे प्राप्त करूंगा ही।**

यद्यपि यह व्याख्या विशद है किन्तु हमारा मूल उद्देश्य इस चर्चा से परे, इस बात पर केंद्रित है कि कैसे इस काल का सम्पूर्ण लाभ प्राप्त किया जा सके, कैसे इन शक्तिमय दिनों को सार्थक बनाया जा सके तथा एक-एक पल का उपयोग किया जा सके, क्योंकि यह तो एक पड़ाव है अगली चैत्र नवरात्रि तक का; जब कि साधक केवल रात्रि जागरण करके या भजन गाकर अपना समय नहीं व्यतीत करता, वरन् उचित साधनाओं के माध्यम से अपने-आप को सशक्त व क्षमतावान बनाता हुआ जीवन को निर्द्वन्द्व करने की क्रिया करता है।

शक्ति-प्राप्ति का तात्पर्य बल से नहीं लगाया जा सकता यद्यपि व्यवहार में शक्ति का प्रयोग इसी रूप में व्यवहृत किया जाता है, किन्तु शास्त्रीय व्याख्या के अनुसार **''शक्ति'' शब्द में ''श'' ऐश्वर्य सूचक तथा ''क्ति'' पराक्रम सूचक है। शक्ति का ही अन्य पर्यायवाची शब्द प्रकृति भी है तथा प्रकृति शब्द का ''प्र''- सत्व गुण सूचक ''कृ'' रजोगुण सूचक एवं ''ति'' तमोगुण सूचक घोषित किया गया है।** इस का स्पष्ट अर्थ यही है कि प्रकृति अर्थात् पराशक्ति त्रिगुणात्मिका स्वरूप को अपने में समाहित किए हुए है, जिसकी उपासना हम महासरस्वती, महाकाली एवं महालक्ष्मी के रूप में करते हैं।

नवरात्रि की मूल भावना इन्हीं तीनों शक्तियों की आराधना, साधना एवं इससे भी अधिक उनके वरदायक प्रभाव की प्राप्ति की कामना ही है। **इसे दूसरे शब्दों में इस प्रकार भी कह सकते हैं कि प्रत्येक पुरुष के अंदर जो त्रिगुणात्मिका प्रकृति सुप्त रूप में है, उसे जाग्रत करने का उचित अवसर ही नवरात्रि है।** वस्तुतः प्रकृति, पुरुष से अभिन्न ही होती है, साधना केवल उसके जागरण और प्रस्फुटन की ही क्रिया करती है। साधना के द्वारा बाहर से लाकर कुछ भी नहीं स्थापित किया जाता, वरन् जो कुछ साधक के शरीर में छिपा होता है उसे ही जाग्रत किया जाता है, जैसा कि प्रारम्भ में वर्णित किया। इस सम्पूर्ण क्रिया में कहीं भी विरोधाभास है ही नहीं, ऐसा कहीं वर्णित है ही नहीं कि अमुक साधना को करने के लिए साधक को वीतरागी बनना पड़ता हो अथवा दीनता धारण करनी पड़ती हो। प्रत्येक साधक

> **शक्ति का जीवन में क्या तात्पर्य है इसी का स्मरण कराने हेतु चार नवरात्रियां वर्ष भर में निर्धारित की गयीं — दो प्रकट एवं दो गुप्त।**
>
> **प्रकट नवरात्रियों में से आश्विन नवरात्रि ही सही अर्थों में शक्ति पर्व है . . .**

प्रत्येक साधना कर सकता है और हमारी जीवन परम्परा, साधना पद्धति व सनातन धर्म में जिस प्रकार जीवन के प्रत्येक अंग को महत्व दिया गया है, नवरात्रि पूजन इसी का स्पष्ट प्रमाण है, जिसमें जहां एक ओर शत्रु - नाश, रोग- नाश, भय-बाधा नाश जैसी स्थितियों के लिए **महाकाली की साधना** का विधान रखा गया है, वहीं ऐश्वर्य-प्राप्ति, धन सुख, आयु-सुख, परिवार-सुख आदि की प्राप्ति के लिए **महालक्ष्मी पूजन** को भी वर्णित किया गया। इनके साथ ही साथ जीवन को उन्नति की ओर ले जाने वाली, पवित्रता, शांति, विद्या, कला, सम्मान आदि प्राप्त कराने वाली देवी के रूप में **महासरस्वती** को भी वंदनीय माना गया। इनमें से किसी भी पक्ष की उपेक्षा करके सम्पूर्णता नहीं प्राप्त कर सकते हैं, और जब तक सम्पूर्णता नहीं प्राप्त होती तब तक जीवन अधूरा व व्यर्थ सा ही होता है। नवरात्रि के पर्व की यही भावना है कि कोई भी अपने जीवन में अधूरा अथवा पीड़ित न रहे, और कदाचित् इसी बात का स्मरण कराने के लिए वर्ष में दो बार **शक्ति पर्व** के द्वारा व्यक्ति को चैतन्यता प्रदान करने का विधान रखा गया।

आगे हम इस पर्व की मूल चेतना-क्रियाशीलता का आधार लेते हुए कुछ ऐसे दुर्लभ प्रयोग दे रहे हैं, जिनको साधक सम्पूर्ण नवरात्रि में कभी भी सम्पन्न कर अपने जीवन को एक नया मोड़ दे सकता है। साधक तो उसी को कहा जा सकता है, जो परिस्थितियों से भिड़ना जानता है तथा कोई भी अवसर चूके बिना अपने जीवन को संवारने के लिए निरंतर गतिशील बना रहता है। वस्तुतः "शक्ति" की प्राप्ति गतिशील साधक को ही होती है, भाग्य का रोना-रोने वाले, दीन-हीन बनकर गिड़गिड़ाने वाले व्यक्ति को नहीं।

इस वर्ष यह पर्व ६ अक्टूबर से १२ अक्टूबर तक पड़ रहा है, किन्तु साधकों को चाहिए कि वे अपनी साधना ७ अक्टूबर से ही प्रारम्भ करें, क्योंकि प्रतिपदा, द्वितीया के विद्ध होने से दूषित हो गई है।

१. तीव्र बाधा निवारक दुर्गा प्रयोग

दुर्गा का यह स्वरूप विशेष प्रबल तथा ज्वलन शील दाहक प्रयोग माना गया है, जो साधक राज्य बाधा, शत्रु बाधा, मुकदमें आदि से विशेष दुःखी हो, चिन्ताओं का भार बढ़ता ही जा रहा हो, तो उसे इस स्वरूप की साधना अवश्य करनी चाहिए।

देवी दुर्गा कल्याणी स्वरूप है, जिसके तीव्र प्रभाव से दुष्टात्माओं का नाश हो जाता है और प्रबल से प्रबल शत्रु भी वश में होकर दास स्वरूप बन जाता है।

यह प्रयोग एक तांत्रिक प्रयोग है और इसके लिए कुछ विशेष सामग्री तथा विशेष अनुष्ठान की आवश्यकता रहती है, सामग्री सहित सभी व्यवस्था पहले से ही कर लेनी चाहिए। एक बार साधना प्रारम्भ करने के पश्चात बीच में उठने का विधान वर्जित है।

रात्रि साधना स्वरूप -

सायंकाल के पश्चात स्नान कर शुद्ध लाल वस्त्र धारण कर, अपने पूजा स्थान में अथवा एकांत कमरे में यह प्रयोग सम्पन्न कर सकते हैं। आसन ऊनी कम्बल अथवा मृग छाल हो सकता है, अपने सामने **देवी का विकराल स्वरूप का चित्र** स्थापित कर सिन्दूर से चित्र पर तिलक कर स्वयं भी तिलक लगाएं और आसन ग्रहण करें।

अपने सामने **"चण्डी यन्त्र"** शुद्ध रूप से धोकर, घी लगाकर पोंछकर, काले तिलों की ढेरी पर स्थापित करें एक ओर एक कलश स्थापित कर उस पर नारियल रखें, सर्वप्रथम कलश पूजन सम्पन्न कर, भैरव का ध्यान कर, मौली बांध कर एक **भैरव गुटिका** स्थापित करें। अब एक ओर धूप तथा दूसरी ओर दीपक जलाकर एक कटोरे में देवी के सामने खीर का प्रसाद रखें, अब इस साधना में साधक वीर मुद्रा में बैठकर पूजन कार्य प्रारम्भ करें। साधक का मुंह दक्षिण दिशा की ओर होना चाहिए। सर्वप्रथम देवी से प्रार्थना कर पूजन की आज्ञा प्राप्त कर ध्यान करें।

ध्यान मंत्र -

ॐ हः ॐ सौं ॐ ह्रौं ॐ श्रीं क्लीं श्रीर्जय जय चण्डिका चामुण्डे चण्डिके मम सकल मनोरथं देहि सर्वोपद्रवं निवारय नमो नमः

अपने सामने यंत्र के चारों ओर **"२१ तांत्रोक्त फल"** एक वृत्त में स्थापित करें। ऊपर लिखे ध्यान मंत्र को बोलते हुए काले तिल और सरसों, सिन्दूर मिलाकर प्रत्येक बार ध्यान मंत्र का जप कर, एक तांत्रोक्त फल पर चढ़ाएं। इस प्रकार २१ तांत्रोक्त फलों पर यह प्रयोग सम्पन्न करना है। ये २१ तांत्रोक्त फल जीवन की २१ बाधाओं के स्वरूप हैं। जब यह प्रयोग पूर्ण हो जाए तो चण्डिका महामंत्र का जप **चण्डी माला** से प्रारम्भ करें।

चण्डी महामंत्र --

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं फट्

इस प्रकार ११ माला जप कर पूजन कार्य सम्पन्न करें तथा यह मंत्र जप मौन रूप से नहीं अपितु जोर - जोर से बोलकर सम्पन्न करना चाहिए। इस मंत्र जप के मध्य में ही देवी के चण्डी स्वरूप के दर्शन होते हैं। साधक उसी मुद्रा में जप कार्य सम्पन्न करता रहे।

जब साधना पूर्ण हो जाए तो नमस्कार इत्यादि सम्पन्न कर, आरती उतार कर, सामने रखे हुए खीर के प्रसाद को ग्रहण करना चाहिए। तांत्रोक्त फल, सरसों तथा तिल को दूसरे दिन किसी एकान्त स्थान पर जाकर गाड़ देना चाहिए। यह सर्व दुःख नाशक चण्डी सिद्धि प्रयोग सम्पन्न करने से भय, बाधा का पूर्ण रूप से नाश हो जाता है।

२. वाक्शक्ति एवं राज्य सम्मान प्राप्ति हेतु

वाक्शक्ति मनुष्य की मूलभूत शक्तियों में एक ऐसी शक्ति है, जिसके अभाव में उसका व्यक्तित्व कभी निखर ही नहीं सकता। आपने भी कई ऐसे व्यक्तियों को देखा होगा, जो देखने में सुदर्शन व्यक्तित्व के स्वामी होते हैं, ज्ञान की भी उनके पास कोई कमी नहीं होती है, किन्तु वे किसी को प्रभावित नहीं कर पाते हैं। इसके मूल में यही बात छिपी है। वाक्शक्ति ही व्यक्तित्व का आधार है। दूसरी ओर वाक्शक्ति की साधना का अर्थ है साक्षात् ज्ञान की ही साधना, साक्षात् वाग्देवी की ही साधना, और ऐसी साधना के लिए नवरात्रि से उपयुक्त पर्व कौन सा हो सकता है? वसंत पंचमी के उपरांत आश्विन नवरात्रि ही एक ऐसा पर्व होता है, जबकि सरस्वती का पूजन और उनका स्थापन अपने घर व व्यक्तित्व में किया जा सकता है।

सरस्वती की साधना द्वारा ही व्यक्ति अपने जीवन में राज्यपद, राज्य सम्मान प्राप्त करने का भी अधिकारी होता है, अतः सरस्वती पूजन का तात्पर्य यही नहीं लगाया जाना चाहिए कि यह केवल बालकों के लिए विद्या-प्राप्ति की साधना है, अपितु राज्य की सेवा प्राप्ति के इच्छुक, राज्य पक्ष से सम्मान प्राप्त करने के इच्छुक साधकों को भी अपने जीवन में सरस्वती साधना को महत्वपूर्ण स्थान देना चाहिए। इस वर्ष नवरात्रि में **दिनांक १०/१०/९४** एवं **११/१०/९४** इस दृष्टि से सर्वाधिक अनुकूल मुहूर्त हैं।

इस साधना को साधक दो प्रकार से कर सकते हैं। प्रथम प्रकार वह है जहां इस साधना को विद्या-प्राप्ति के लिए किया जाना अभीष्ट हो, वहां साधक को मंत्र-सिद्ध एवं प्राण-प्रतिष्ठित **सरस्वती यंत्र (तावीज रूप में)** प्राप्त कर उपरोक्त तिथियों में से किसी एक तिथि को प्रातः अपने समक्ष श्वेत वस्त्र पर उस यंत्र को स्थापित कर, स्वयं श्वेत वस्त्र धारण कर पूर्वाभिमुख होकर बैठ जाना चाहिए तथा **सरस्वती देवी का प्राण-प्रतिष्ठित चित्र** स्थापित कर, यंत्र व चित्र का केसर, श्वेत पुष्प, दूध के बने नैवेद्य, घी के दीपक एवं सुगन्धित अगरबत्ती से पूजन कर **शुद्ध स्फटिक माला** से निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र-जप करना चाहिए।

मंत्र

ॐ श्रीं श्रूं श्रियै फट्

मंत्र-जप के उपरान्त वह स्फटिक माला भगवती सरस्वती के चित्र पर पहिना देनी चाहिए तथा भविष्य में उसका उपयोग किसी भी अन्य साधना में नहीं करना चाहिए। यंत्र को गले अथवा बांह में धारण कर लेना चाहिए। यह साधना माता-पिता अपनी संतान की उन्नति की कामना हेतु, उसके नाम का संकल्प लेकर भी कर सकते हैं। साधना के उपरांत उन्हें उपरोक्त यंत्र अपनी संतान के गले में धारण करा देना चाहिए।

दूसरे रूप में जहां कोई साधक रोजगार की प्राप्ति का इच्छुक हो अथवा राज्य पक्ष से सम्मान आदि की कामना रखता हो, उसे यही साधना थोड़े से अंतर के साथ करनी होती है। ऐसी कामना रखने वाले साधक को सरस्वती के ही विशिष्ट स्वरूप **पारिजात सरस्वती** की आराधना- साधना करनी चाहिए। उपरोक्त दिवसों में ही साधक प्रातः साधनारत हो। पूजन-विधि और वस्त्र आदि में कोई भेद नहीं है। अंतर केवल यंत्र और प्रयुक्त किए जाने वाले मंत्र का है। साधक अपने समक्ष ताम्रपत्र पर अंकित **पारिजात सरस्वती यंत्र** स्थापित कर, उसका पूजन केसर आदि से कर, अपनी मनोकामनाओं को स्पष्ट बोलकर निम्न प्रकार से ध्यान करे –

हंसारूढा-हसित-हारेन्दु-कुन्दावदाता।
वाणी-मन्द-स्मित-तर-मुखी मौलिबद्धेन्दु-लेखा।।
विद्या-वीणा मृत-मय-घटाक्ष-स्रजादीप्त हस्ता।
श्वेताब्जस्था भवदभिमत-प्राप्तये भारती स्यात्।।

इस प्रकार ध्यान करने के उपरांत **शुद्ध स्फटिक मणि माला** से निम्न मंत्र-की पांच माला मंत्र जप करें।

मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं सरस्वत्यै नमः

यह केवल एक दिवसीय साधना है। साधक मंत्र-जप के उपरांत माला एवं यंत्र भगवती सरस्वती के चित्र के समक्ष भेंट में चढ़ा दें, तथा इनका पुनः किसी साधना में प्रयोग न करें। आगे चलकर एक वर्ष सम्पूर्ण होने पर अर्थात् अगली आश्विन नवरात्रि में यंत्र एवं माला को विसर्जित कर दें।

३. निश्चित अर्थ प्रदायक पद्मावती साधना

यों तो नवरात्रि का सम्पूर्ण पर्व शक्ति प्राप्ति का ही पर्व है, और साधक अपने रोम-रोम को इस प्रकार से चैतन्य करने की क्रिया करता है, जिससे वह स्वस्थ व निरोगी रह कर अपने जीवन के भौतिक-आध्यात्मिक लक्ष्य प्राप्त कर सके, किन्तु जैसा कि प्रारम्भ में कहा कि शक्ति

का अर्थ केवल बल ही नहीं अपितु ऐश्वर्य भी होता है, उसके अनुसार इसी पर्व पर महालक्ष्मी से सम्बन्धित कुछ दुर्लभ साधनाएं भी सम्पन्न की जा सकती हैं। विशेषकर महालक्ष्मी के ही तीव्र तांत्रोक्त स्वरूप पद्मावती की साधनाओं का तो ऐसा अचूक फल मिलता है, जिससे साधक के जीवन में निश्चय ही अनुकूल मोड़ आता है।

यदि आम जीवन में अनुभव किया जाए, तो व्यक्ति की धन से सम्बन्धित सबसे बड़ी समस्या यही होती है कि उसे अर्थ का निश्चित स्रोत नहीं प्राप्त हो पाता है। अर्थ के निश्चित स्रोत से तात्पर्य यह नहीं लगा लेना चाहिए कि प्रतिमाह कहीं से बंधी-बंधाई रकम मिलती रहे, जैसा कि नौकरी में होता है, अपितु इस रूप में लेना चाहिए कि वह कौन-सा उपाय हो, जिससे प्रतिमाह धन को लेकर खींच-तान न बनी रहे, कैसे घर के खर्चों का निपटारा होने के बाद, आकस्मिक परिस्थितियों एवं अपनी योजनाओं की पूर्ति के लिए कुछ धनराशि जमा-पूंजी के रूप में भी बचती रहे, और ऐसी सभी बातों का समाधान पद्मावती साधना के रूप में प्राप्त किया जा सकता है। इस वर्ष की आश्विन नवरात्रि में इस साधना का सर्वाधिक उचित मुहूर्त **दिनांक ९/१०/९४** को पड़ रहा है, जो सौभाग्य से पद्मावती साधना का अनुकूल दिवस रविवार भी है। साधकों को चाहिए कि वे ऐसे दुर्लभ संयोग का उपयोग अपने जीवन को गति देने में अवश्य करें। यह दिवस ललिता पंचमी का भी पर्व होने के कारण असाधारण रूप से शक्ति युक्त हो गया है, और पंचमी तो महालक्ष्मी का प्रिय दिवस है ही।

इस साधना हेतु आवश्यक है कि साधक के पास **प्राण-प्रतिष्ठित एवं विशेष रूप से निश्चित अर्थ प्रदायक मंत्रों से चैतन्य पद्मावती यंत्र** हो, जो ताम्रपत्र पर अंकित हो। ताम्रपत्र पर अंकित यंत्र के ऊपर की गई साधना का ही विशेष महत्व है। यह साधना रात्रि के दस बजे के बाद की जाने वाली साधना है, तथा आसन आदि सभी प्रयोज्य वस्त्रों का रंग लाल होना अनिवार्य है। साधक दक्षिण- मुख होकर बैठे तथा एक आचमनी जल लेकर निम्न मंत्र बोलते हुए उस यंत्र पर चढ़ा दे, यह पद्मावती-प्रतिष्ठा मंत्र है, जिससे यंत्र की तेजस्विता का सम्बन्ध साधक के प्राणों से हो जाता है।

प्राण-प्रतिष्टा मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं श्रीं पद्मावती देव्यै अत्र अवतर अवतर तिष्ठ तिष्ठ सर्व जीवानां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

इस प्राण-प्रतिष्ठा के उपरान्त साधक तेल का एक बड़ा दीपक जलाकर **पद्मावती माला** से निम्न मंत्र की ग्यारह माला मंत्र-जप निष्कम्प भाव से करे। मंत्र अधिक
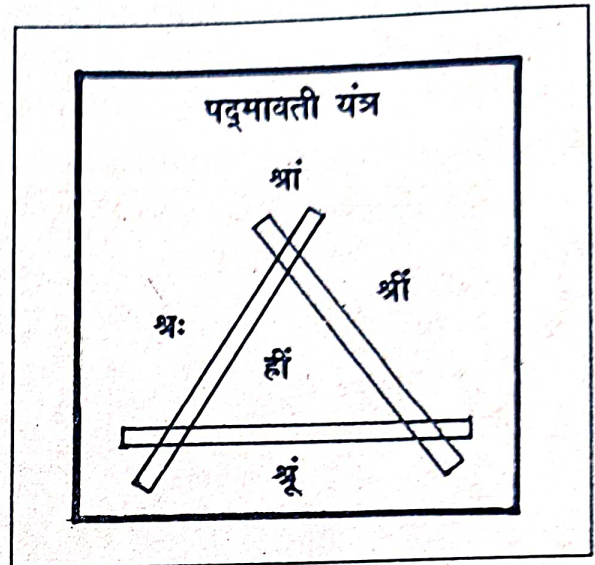
बड़ा न होने के कारण प्रत्येक साधक इसका जप अधिक से अधिक दो घंटे में सम्पूर्ण कर ही सकता है।

मंत्र

ॐ ह्रीं पद्मे श्रां श्रीं श्रूं श्रः नमः

पांच बीज मंत्रों से युक्त यह मंत्र अपने-आप में अत्यधिक तेजस्वी माना गया है और इसके प्रभाव भी शीघ्र स्पष्ट होने प्रारम्भ हो जाते हैं। मंत्र-जप के उपरान्त यंत्र एवं माला को संभालकर रख लेना चाहिए तथा विजयादशमी की प्रातः चुपचाप किसी वटवृक्ष के नीचे रख आना चाहिए।

इस वर्ष की दूसरी प्रमुख नवरात्रि के पूजन हेतु हमने देवी के त्रिगुणात्मक स्वरूप को ध्यान में रखकर उसके प्रत्येक स्वरूप से सम्बन्धित साधना प्रस्तुत की है, जबकि नवरात्रि का पर्व तो काल का एक ऐसा विशाल खंड होता है, जिसके प्रत्येक पल का उपयोग किया जाना चाहिए। **साधक को मूल प्रयोग करते हुए अपनी अन्य समस्याओं के समाधान के लिए भी छोटे-छोटे प्रयोग इसी काल में सम्पन्न कर लेने चाहिए, क्योंकि ये शक्ति युक्त दिन होते हैं, और साधक को अन्य दिनों की अपेक्षा इस काल में दसवां भाग ही श्रम करना पड़ता है।** अनेक साधक इसी काल में अपनी मनोवांछित महाविद्या साधना को भी पूर्णता देने का प्रयास करते हैं।

जून १९९३ को प्रयाग स्टेशन पर अपनी मामी की अस्थि विसर्जन कर घर लौटने के लिए रेल का इन्तजार कर रहा था, सोचा समय पास हो जाएगा अतः बुक स्टॉल पर **पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी** की कृति **मंत्र रहस्य** खरीदी तथा **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** पत्रिका भी खरीदी। रास्ते में दोनों का अध्ययन किया। घर आकर तो मन में इतनी बेचैनी बढ़ गई कि जोधपुर पत्र लिखा तथा दीक्षा हेतु प्रार्थना की। लगातार ६ महीने तक पत्र व्यवहार करता रहा तब जाकर ३० अक्टूबर १९९३ को गुरुधाम देहली में पूज्य गुरुदेव से कुण्डलिनी जागरण दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा प्राप्त करने के बाद सारे शरीर में, मन में एक विशेष प्रकार का आनंद व अन्तर अनुभव हो आया तथा मेरा ३० वर्ष पुराना पित्त की पथरी का रोग जिसका तीन बार मैं ऑपरेशन टाल चुका था वह दूर हो गया। **तब से आज तक रोग का कोई निशान बाकी नहीं। बड़े-बड़े डॉ० जिसे ठीक नहीं कर सके गुरुदेव ने पल भर में ही उसे दूर कर दिया।**

इसी प्रकार मेरी पुत्री के लड़कों को मई में मेनिनजाइटिस रोग ने पीड़ित कर दिया। रात का समय था तथा बच्चा शहर से दूर गांव में था। सुबह चार बजे तक बच्चें की हालत मरणासन्न हो गई। मैं फौरन डॉ० का प्रबन्ध करने चला गया था तथा पत्नी को कह गया कि वह बच्चे को पूज्य गुरुदेव के चित्र के आगे लिटा दे और यह विश्वास रखे कि उसका कुछ भी नहीं बिगड़ेगा। आखिर में मैं उसे शहर लेकर आ गया तथा अस्पताल में भर्ती करवाया, सात दिन के इलाज के बाद बच्चा स्वस्थ हो गया लेकिन मुझे पूर्ण विश्वास है कि बच्चा पूज्य गुरुदेव की कृपा से ही ठीक हुआ है। यह हमारा सौभाग्य है कि हम दो-दो लोगों की जान पूज्य गुरुदेव जी ने बचा ली।

डॉ० मधुसूदन शर्मा
काशी मुहल्ला, ग्वालियर

प्रभु मेरा रोम-रोम आपका आभारी है कि आपने मेरे जीवन की रक्षा करके, मुझे एक दूसरा नया जीवन दिया। प्रभु मैं हिन्द मोटर्स में एक कनवई ड्राइवर हूं। जिसे आपने दीपावली में सम्पूर्ण महालक्ष्मी दीक्षा प्रदान की एवं दिसम्बर में गुरुधाम दिल्ली में पूर्ण सफलता सिद्धि दीक्षा प्राप्त कर चुका हूं आपसे। प्रभु मंगलवार (१-२-९४) के दिन मैं करीब १०.३० बजे अपनी ड्यूटी पर अम्बेसडर कार लेकर सेलम जा रहा था, जो कि (मद्रास) में पड़ता है। हिन्द मोटर्स फैक्ट्री से निकल कर करीब ७-८ किलोमीटर ही गया था कि बिल्ली रास्ता काट गई, मैं थोड़ा रुका, जब एक गाड़ी पास हो गई तब मैं आगे बढ़कर बाली रोड (NH7) पर आ गया जहां पर हमें हवा चेक करानी थी, मैं गाड़ी साइड करके हवा चेक करवा रहा था और मैं गाड़ी ही में बैठा था, प्रभु!

आपका चित्र जो कि स्टेरिंग के सामने डेश बोर्ड में मैंने सजा रखा था, मन ही मन में आपका ध्यान करके गुरु मंत्र का जप कर रहा था कि मेरी बाईं आंख फड़कने लगी। प्रभु! आपके द्वारा मन में ऐसी भावना आई कि गाड़ी से उतर कर पीछे देखूं कि कोई अनहोनी घटना तो होने वाली नहीं है। मौसम में हल्की-हल्की कुछ पानी की बूंदें गिर रही थीं। मैं गाड़ी के पीछे डिग्गी के पास खड़ा हुआ पीछे की तरफ देखता हूं, टाटा का एस- मॉडल ट्रक थोड़ा सड़क से हट कर मेरी ही तरफ आ रहा है। ब्रेक करने से बरसात होने के कारण ट्रक स्लिप कर उसका स्टेयरिंग सामने का चक्का मेरी ही तरफ कट गया, **जीवन और मृत्यु में कुछ ही सेकेण्ड का फासला था। मैं सोचने लगा कि शायद अब मेरा बचना मुश्किल है।** मैं मन ही मन गुरुदेव का स्मरण करता हुआ गुरु मंत्र का जप कर रहा था, प्रभु! मेरी रक्षा करना, प्रभु! आपके द्वारा मन में ऐसी प्रेरणा मिली कि मैं फौरन एक सेकेण्ड की देर किए बिना ही दूसरी तरफ अपनी कार छोड़ कर भाग जाऊं, मृत्यु साक्षात् सामने थी। प्रभु! पैरों में पंख लगा दिए हों आपने, जैसे ही मैं भाग कर दूसरी तरफ गया और पीछे मुड़ कर देखता हूं कि उसी एक क्षण में ट्रक मेरी कार से जिस जगह मैं खड़ा था पीछे की तरफ से आकर जोर से टकरा गया। ट्रक न० आसाम का था (ASC 3213)। मेरी कार पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई और मेरी कार के आगे कई कारें थीं, उनमें से तीन कारें और क्षति ग्रस्त हो गईं। प्रभु! आप प्रेरणा नहीं देते तो निश्चय ही आज मैं इस संसार में नहीं होता। आपकी कृपा और दया दृष्टि मुझ पर ऐसी रही कि **मेरे शरीर पर एक खरोंच भी नहीं आई।** कार में इतनी बड़ी दुर्घटना होने के बाद भी, प्रभु आपका चित्र जिसको मैं हमेशा सफर में अपने साथ रखता हूं स्टेयरिंग के सामने डेश बोर्ड में लगा रखा था।

डी० आर० यादव
सी० डी० यू०
हिन्द मोटर्स प्रा० लि०,
हुगली,
पश्चिम बंगाल

विशेष
तंत्र रक्षा
कवच
जब जीवन में विष घुल जाता है और
समस्याओं के हल सही नहीं सूझते
यदि
किसी के द्वारा तंत्र प्रयोग
करवा दिया जाए तो. . .
विशेष तंत्र रक्षा कवच
संस्थान के योग्यतम विद्वानों के निर्देशन में कर्मकाण्ड के श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा मंत्र सिद्ध रक्षा कवच के रूप में उपलब्ध कराने का लोकहितार्थ प्रयास
(न्यौछावर - ११०००/- मात्र)
जो वास्तव में अनुष्ठान का व्यय मात्र ही है।
कर्जे से पीछा छूट ही न रहा हो
शत्रु संकट, प्राण संकट घेरे ही रहते हों
पत्नी के साथ गर्भपात की स्थिति बनना
विवाह में बात बन - बनकर बिगड़ जाए
घर या किसी निर्माण कार्य में बात न बन पाना
ऐसा रोग जो डॉक्टरों की समझ में भी न आ रहा हो
निरन्तर बीमार बने रहना और शरीर सूखता जाना
बार - बार ट्रांसफर की कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा हो या अधिकारी अनायास विपरीत बने रहते हों
रोजमर्रा
की समस्याओं
का
विश्वसनीय
निवारण
गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव,
पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४,
फोन: ०११-७१८२२४८, फेक्स-०११-७१८६७००
मंत्र शक्ति केन्द्र,
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर (राज.), फोन-०२९१-३२२०६
या फिर झगड़े झंझटों में बार- बार फंस जाना, मुकदमें बाजी, जैसी बातों के पीछे गम्भीर तांत्रिक प्रयोग छुपे होते हैं।
तंत्र की सैकड़ों पद्धतियां हैं. . .
उनमें से किस तरीके से प्रयोग कराया गया है,
उसे समाप्त कर सही उपाय देने का ही कार्य करता है
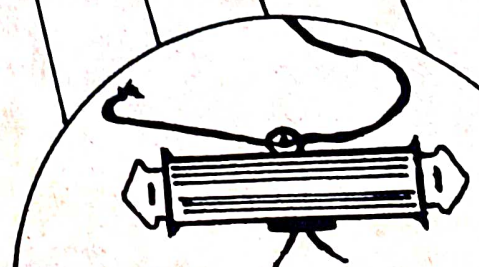
भारतीय साधनाशास्त्रों में जितना अधिक उल्लेख पारद का हुआ है, उतना सम्भवतः किसी अन्य धातु का नहीं, केवल स्पर्श अथवा दर्शन से ही नहीं वरन् पारद के स्मरण तक से मनुष्य को पुण्य लाभ होने की चर्चा शास्त्रों में की गई है। इसका पूर्ण प्रभाव मनुष्य अपने जीवन में कैसे ग्रहण कर सके, इसी को स्पष्ट करता एक सारगर्भित लेख . . .

पारद से ही पूर्णता

भारतीय शास्त्रों में पारद की दूसरी संज्ञा **"रस"** भी कही गयी है और इसका कारण इस प्रकार वर्णित किया गई है।

रसनात्सर्वधातूनां रस इत्यभिधीयते
जरारुंगमृत्युनाशाय रम्यते वा रसो मतः।।

अर्थात् जो समस्त धातुओं को अपने में समाहित कर लेता है और जो बुढ़ापा, रोग व मृत्यु की समाप्ति के लिए ग्रहण किया जाता है, वही रसपूर्वक लेने के कारण "रस" की संज्ञा से विभूषित हुआ। वस्तुतः प्राचीनकाल से ही भारतीय ऋषियों-मुनियों ने इसकी आवश्यकता पर जोर दिया और **उन्हीं के प्रयासों के फलस्वरूप पारद के इतने अधिक उपयोग सम्भव हुए हैं, जिसके वर्णन किए जाएं तो पृथक एक ग्रंथ केवल इसके उपयोग का ही तैयार हो सकता है।** केवल औषधि के रूप में ही नहीं अथवा कायाकल्प के रूप में ही नहीं, पारद का उपयोग विशिष्ट विद्याओं की प्राप्ति एवं समाधि अवस्था प्राप्त करने तक में प्रमुखता से वर्णित किया गया है, और यहां तक कहा गया है कि बिना रस सिद्ध हुए अर्थात् पारद सिद्ध हुए बिना, व्यक्ति किस आधार पर मुक्त होने की कल्पना करता है?

दूसरी ओर साधनाओं के जगत में पारद का उपयोग वायुगमन सिद्धि, शून्य सिद्धि, अदृश्य सिद्धि, देह लुप्त क्रिया आदि के लिए तो होता ही रहा है, साथ ही पारद के माध्यम से जिस प्रकार भारतीय रसायनज्ञों ने स्वर्ण निर्माण तक सम्भव कर दिया, उससे वे विश्वविख्यात होने के साथ ही साथ पूरे विश्व में भारतीय रसायन विद्या को एक सम्मानजनक स्थान भी दिला गए। **ऐसे रसायनज्ञों में नागार्जुन, व्याडि, नागबोधी जैसे नाम विश्वविख्यात हैं, और यह भी एक सत्यता है कि इन्हीं रसायनज्ञों के कारण भारतीय रसायन विद्या चीन आदि सुदूर देशों तक पहुंच सकी,** जिसे कीमियागीरी का नाम दिया गया।

पारद की महत्ता इतनी अधिक व्यापक रही है कि लगभग सभी सम्प्रदाय के साधकों ने इसके क्षेत्र में प्रवेश किया और अपने-अपने ढंग से प्रयोग कर इस के क्षेत्र में वृद्धि की। जैन सम्प्रदाय, नाथ सम्प्रदाय, भैरव सम्प्रदाय , कापालिक सम्प्रदाय, श्री शैल पर्वत के चौरासी सिद्धों इत्यादि ने पारद को विविध प्रकार से मनुष्य के उपयोग में लाने योग्य बनाने में अपने-अपने ढंग से सहयोग किया।

यद्यपि इन सभी की मूल रुचि तो स्वर्ण निर्माण में थी, किन्तु इन्होंने यह भी अनुभव किया कि कुछ विशेष क्रियाओं के द्वारा यदि पारद का भक्षण कर लिया जाए तो सारे शरीर में एकाएक नवीनता का ऐसा संचार हो जाता है जिसे सामान्य रूप से कायाकल्प की क्रिया कहते हैं, और फिर उन्होंने उत्साहित होकर पारद का विवचेन औषधि रूप में भी किया। **मूलरूप में तो पारद एक अत्यन्त विषैला पदार्थ है, जिसकी अल्पमात्रा भी यदि शरीर में चली जाए तो वह सारे शरीर की शिराओं को फाड़कर बाहर निकल आती है जिससे तुरंत मृत्यु हो जाती है,** किन्तु इन सिद्धों ने जिस प्रकार से प्रयोग द्वारा इसकी शुद्धि की, उन प्रयोगों को 'संस्कार' का नाम दिया तथा अनुभव किया कि आठ संस्कारों से युक्त पारद, विशेष विधियों द्वारा, यदि पारद विज्ञान-ज्ञाता की देख-रेख में एक उचित मात्रा में ग्रहण किया जाए तो सारे शरीर

का कायाकल्प हो जाता है और यह क्रिया इतनी अधिक तीव्र होती है जिसमें वर्षों या माह का समय नहीं वरन् कुछ एक सप्ताह का समय ही पर्याप्त होता है। किन्तु यह कार्य व्यवहारिक रूप में अत्यधिक कठिन भी पाया गया, क्योंकि यदि इसमें कोई त्रुटि रह गयी अथवा जो व्यक्ति इसका प्रयोग कर रहा है उसकी आंतरिक क्षमता का निर्णय करने में कोई दोष रह गया तो यही पारद वीर्य नाश, कोढ़, मूर्च्छा अथवा पागलपन जैसी स्थिति उत्पन्न कर सकता है। इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में इतनी उच्चकोटि के रससिद्ध साधक रह भी नहीं गए हैं जो पारद के संस्कारों को पूर्णता के साथ सम्पन्न कर सकें। यों तो एक ग्रंथ में पारद के तीसरे संस्कारों के बाद ही भक्षण का निर्देश मिलता है किन्तु अत्यंत कुशल एवं रससिद्ध वैद्य की देखरेख में।

इस व्यवहारिक कठिनाई को अनुभव कर योगियों ने आगे शोध सम्पन्न की और वह उपाय ढूंढना चाहा जिसके माध्यम से पारद को मानव जाति के लिए उपयोगी बनाया जा सके। उन्होंने अपने प्रयोगों से ज्ञात किया कि जिस प्रकार पारद का भक्षण मनुष्य के शरीर की वृद्धि एवं पुष्टि करने में तीव्र फलदायक सिद्ध होता है ठीक वही प्रभाव पारद की एक निश्चित स्तर तक शुद्धि अर्थात् संस्कार कर दिए जाने पर भी प्राप्त होने लगता है, और वे इस प्रभाव को देख कर आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने अनुभव से पाया कि पांच संस्कारों से युक्त पारद ही पुरुष की नपुंसकता जैसे रोग समाप्त करने में सहायक होने लगता है, किन्तु उन्होंने अपने प्रयासों को रोका नहीं वरन् पारद को और भी अधिक शोधित करने के प्रयास में जुटे रहे। साथ ही उनका दूसरा विषय पारद को बद्ध करना भी था। यों तो पारद तीसरे संस्कार 'मूर्च्छन' के बाद से ही बद्ध होने की अवस्था में आने लगता है, किन्तु ऐसा पारद पूर्ण रूप से शरीर के स्पर्श में आने योग्य भी होता है, ऐसा निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इसके उपरान्त भी ऐसे पारद में रांगे, शीशे जैसी अशुद्धियां, जड़ता एवं नपुंसकता का दोष शेष रह जाता है जो आठवें संस्कार **दीपन** के पश्चात् समाप्त होता है और ऐसा ही पारद शरीर से स्पर्श कराने योग्य, बलदाता व सक्षम होता है।

साधकगण ऐसे ही पारद को पारद गुटिका, पारद मुद्रिका अथवा पारद माला बनाने के लिए प्रयोग में लाते हैं, जो अपने औषधीय गुणों के साथ कई ऐसे लाभ देने में समर्थ होता है जिसकी चर्चा की जाए तो व्यापक रूप ले सकती है, किन्तु **हम यहां ऐसे पारद अथवा पारद मुद्रिका का वर्णन मात्र यौवन प्रदाता के रूप में कर रहे हैं।** पारद मुद्रिका जिस किसी के हाथ में भी आ जाती है, उसकी अशक्तता, जड़ता एवं हीनता की भावना इसे धारण करने के दिन से ही समाप्त होने लगती है तथा निरन्तर धारण किए रहने पर सारे शरीर में ऐसी विद्युत तरंगों का आवागमन या चक्र सा बन जाता है जो पूर्ण कायाकल्प करने की क्रिया में समर्थ होता है। ऐसी मुद्रिका केवल पुरुषों के लिए ही नहीं वरन् स्त्रियों के लिए भी समान रूप में उपयोगी होती है, क्योंकि यह पारद का गुण है कि वह स्त्रियों में स्त्रियोचित् तथा पुरुषों में पुरुषोचित् गुणों की वृद्धि करता है।

कई बार प्रसव अथवा किसी अन्य स्त्री रोग के कारण स्त्रियों का शरीर बेडोल हो जाता है, पेट पर लकीरें खिंच जाती हैं अथवा पेडू प्रदेश शिथिल पड़ जाता है, और दूसरी ओर पुरुषों में एक प्रकार की मानसिक निराशा, जीवन के प्रति उत्साह हीनता आदि की भावनाएं घर करती चली जाती हैं, **ऐसी सभी स्थितियों में उनके शरीर से पारद का स्पर्श निश्चय ही सुखदायक होता है।** पारद मुद्रिका का इस यौवन प्रदाता स्वरूप में व्यक्ति के ऊपर एक अन्य ढंग से भी प्रभाव पड़ता है और वह यह कि जब व्यक्ति निरन्तर इस प्रकार के अष्ट संस्कारों से युक्त पारद के सम्पर्क में रहते हुए अपनी मानसिक एवं शारीरिक व्याधियों से छुटकारा पाने की क्रिया में संलग्न हो जाता है तब स्वतः ही उसके चेहरे पर एक अलग सी आभा और यौवन की लालिमा उतर आती है जो उसके सम्मोहनकारी व्यक्तित्व का आधार बन जाती है। यों तो पारद का वशीकरण सम्बन्धी क्रियाओं में एक प्रमुख स्थान है और **अत्यन्त उच्चकोटि की वशीकरण साधनाएं पारद की गुटिका को वशीकरण गुटिका के रूप में परिवर्तित करके ही सम्पन्न की जाती हैं।**

वर्तमान में तो पारद के अठारह या बीस संस्कार तक ही प्रचलित एवं ज्ञात रह गए हैं, और इसके सभी १०८ संस्कारों के ज्ञाता तो अत्यंत कम बचे हैं। **पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली जी** ने अपने लघु ग्रंथ **"स्वर्ण तंत्रम्"** में इस के संस्कारों का वर्णन प्रामाणिकता से किया है। **अष्ट संस्कार युक्त पारद प्राप्त हो जाना भी कम सौभाग्य की बात नहीं होती क्योंकि ऐसा पारद बुभुक्षित अवस्था में आकर अन्य धातुओं को पचाने की क्रिया आरम्भ कर देता है जो स्वर्ण निर्माण का आधार होती है।** रससिद्ध साधक आठवें संस्कार से युक्त पारद देने में भी अत्यन्त हिचकिचाहट का अनुभव करते हैं, क्योंकि एक-एक संस्कार को लेकर उन्हें अथक प्रयास जो करना पड़ता है, किन्तु हमारा यह सौभाग्य है कि **पूज्य गुरुदेव के कुछ रससिद्ध शिष्यों ने न केवल पारद का आठवां संस्कार ही किया है वरन् उन्हें आकर्षक रूप में अंगूठी में ढालकर सर्वधारण के लिए उपलब्ध भी कराया है।** ऐसी पारद मुद्रिका को धारण करने में किसी भी प्रकार के नियम अथवा बंधन की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि पारद साक्षात् भगवान शिव से उत्पन्न होने के कारण समस्त नियमों से परे ही माना गया है। हमें उन अनेक ज्ञात व अज्ञात योगियों, संन्यासियों का कृतज्ञ होना चाहिए जिन्होंने अपने पूरे-पूरे जीवन को लगाकर न केवल पारद जैसी तरल धातु को बद्ध करने के उपाय ही ढूंढे वरन् विभिन्न संस्कारों द्वारा उसे इस योग्य भी बनाया जिससे वह निरापद ढंग से किसी के भी जीवन को सुखी बनाने में सफल हो सके।

र्य धीरे-धीरे अपने दिन भर का यज्ञ पूरा कर पश्चिम दिशा की ओर बढ़ चला और दिन भर के इस कार्य की पूर्णता के प्रतीक में शेष रह गई थी आसमान की वह लालिमा जो शांत होते हुए यज्ञ की लपटों जैसी मंद ऊष्मा से युक्त थी। यत्र-तत्र बिखरते काले बादल साक्षी बन गए थे धूम्र खंडों की तरह, कि हां! आज भी कोई पुण्य कार्य हुआ है, इस दिवस को किसी ने अपनी आहुतियों से और भी अधिक दिव्य बनाया है।

और ऐसा नित्य पग-पग पर दिखाई पड़ता रहता है, गढ़वाल की देवभूमि पर-जहां सारी प्रकृति ही अपने क्रिया-कलाप से ईश्वर की वंदना में निरन्तर संलग्न है, इतनी विविधता से भरी है कि जिस भूभाग को देखें मन उसी में रम जाता है। जहां मंदाकिनी का प्रवाह है, वहां ऐसा लगता है मानो इस प्रकृति का कण-कण यूं ही गतिशीलता, उन्मुक्तता और वेग से भरा है, जहां घने वन प्रान्तर हैं वहां ऐसा प्रतीत होने लगता है कि यह विस्तार असीम है, और ये बूढ़े, प्रौढ़ और युवा वृक्ष पूरी पृथ्वी को इसी प्रकार चिरशांति के घेरे में लेकर फैले हुए हैं, जहां शुभ्र श्वेत हिमालय की चोटियां हैं वहां लगता है कि छल, कपट, व्यभिचार मानों इस धरा पर कभी रहा ही नहीं। पग-पग पर प्रकृति का स्वरूप कुछ और कहता लगता है और जिस पग पर उसकी बात सुनने के लिए थोड़ा सा रुक जाएं, वही अपने मौन में व्यक्ति को समेट लेती है। जो साधक होता है वह सही अर्थों में पहली बार प्राण-ऊर्जा का अनुभव करता है। मस्तिष्क शांत हो जाता है, श्वांस शीतल तो होती ही है पहली बार जाकर अपने ही अन्दर नाभि का स्पर्श करती है, उस नाभि का जो अमृत कुंड है। छल, प्रपंच, माया, मोह से कटकर देवत्व का साक्षात्कार होने लगता है। कुछ दबा-भिंचा, घुटा-घुटा सा जो मन पर छाया होता है वह बोझ उतर जाता है और हम सही अर्थों में प्रकृति-पुत्र बन जाते हैं।

अब मन उड़ि अनत न जाहि

विसंगतियां तो प्रत्येक स्थान पर होती हैं फिर भी देवत्व की जो धारणा है वह गढ़वाल की भूमि पर आकर साकार उतरती दिखती है, विशेष रूप से ऐसे स्थानों पर जो अभी भी जन-सामान्य के स्पर्श से बचे हुए हैं, जहां नागिन सी रेंगती कोलतार की सड़कें नहीं पहुंच सकी हैं और जहां भौतिकता के क्रूर पंजे अभी नहीं गड़ सके हैं। ऐसा ही एक स्थान है गढ़वाल के जिले चमोली में गुप्तकाशी के समीप कालीघाटी, बाह्य जगत के लिए एक प्रायः अपरिचित स्थान, किन्तु उत्तराखंड में अत्यन्त सम्मान प्राप्त महत्वपूर्ण तीर्थ स्थान!

गुप्तकाशी, केदारनाथ के मार्ग में पड़ने वाला एक स्थान है और महत्वपूर्ण होने के कारण भौतिकता के स्पर्श से बच भी न सका है, किन्तु उससे कुछ ही पहले एक सामान्य सा मार्ग नीचे मंदाकिनी की घाटी में उतर जाता है और मार्ग क्या उतरता है मानों भौतिकता से विदा लेकर यह जीवन विलीन हो जाता है आध्यात्मिकता की ओर। कुछ दूर चलने के बाद शनैःशनैः मानव रचित उपादानों के स्थान पर प्रकृति रचित उपादान, चट्टानों के बिखरे हुए ढेर, घने वृक्षों की छांव, व्यक्ति के हृदय में कौतूहल भरने लग जाती है।

आज हमारी आंखें भौतिकता देखने में इतनी अधिक रच-पच गई हैं कि वे कल्पना भी नहीं कर पातीं कि इस धरा पर कोई ऐसा शांत, एकांत स्थान भी बचा होगा और कभी जब दैववश ऐसा स्थान दिख जाता है तो चित्त स्तब्ध होकर रह जाता है, कि क्या इस धरा पर अभी भी ऐसे स्थान हैं, जहां चिरमौन है, निस्सीम शांति है और वायु के झोकों में गूंजती युगों-युगों से उच्चरित ऋषियों की मौन वाणी है। तब वहां व्यक्ति का, विशेषकर साधक का चित्त स्वतः ही उस दिव्य अनुभूति को प्राप्त करने लगता है, जिसे प्राप्त करने के लिए अन्यथा उसे घंटों-घंटे आंख मूंदकर बैठना पड़ता है, मन को भटकने से रोकना होता है और स्पष्ट शब्दों में कहें तो अपने-आप को सन्तुलित करने से भी अधिक उन घृणित तरंगों से लड़ना पड़ता है जो इस वातावरण में व्याप्त हैं। कामुकता, क्रोध, छल, घृणा, ईर्ष्या, हिंसा, द्वंद्व के अतिरिक्त है ही क्या इस समाज के वातावरण में?

किन्तु तब कुछ और घटित हो जाता है, तब चारों ओर वृक्ष ही देवदूत लगने लग जाते हैं, और हिमालय की चोटियां अपने शिखरों पर श्वेत केश का मृदु आवरण डाले ऋषियों और कुल गुरुओं की साकार मूर्ति बनकर आशीर्वाद देती लगने लग जाती हैं। कलकल करके बहती नदी, झरने प्रकृति के मातृत्व की लोरियां बन जाते हैं और आंखें एकटक खुली रहती हुई खो जाती है। चित्त में एक शून्य उतर आता है, मन जिसकी पवित्रता में भीगता ही चला जाता है... भीगता ही चला जाता है। उस शून्य को सुनते हुए प्रथम बार अनहद का अनुभव करने लग जाता है, जो

अनहद बस पुस्तकों में पढ़ा होता है।

मुझे ऐसा ही लगा और मैंने भी अपने नेत्रों को विस्फारित करके सारी प्रकृति को अपने प्राणों में भर लेना चाहा। पहली बार ऐसा विलक्षण सुख पाया कि चित्त में कुछ भी शेष नहीं रह गया- न तम, न रज और न ही सत्। मन पता नहीं किन अज्ञात मनीषियों की निःसृत वाणी को सुनने लगा, प्राण पता नहीं किस युग में खो गए, जब इन्हीं स्थानों पर साक्षात् देवतुल्य ऋषियों-महर्षियों ने अपनी उपस्थिति से पग-पग को पवित्र व चैतन्य किया होगा।

कालीमठ तक यद्यपि फिर भी जन बहुलता है, किन्तु काली मठ के पश्चात् तो सर्वथा काली का ही अर्थात् प्रकृति का ही शासन है और फिर वहां जो कोई है भी तो वह उसी प्रकृति का ही अंश है, सामान्य स्त्री-पुरुषों से कुछ अलग हटकर है। कालीमठ ही वह स्थान है जहां से कुछ और आगे जाने पर प्रसिद्ध राक्षसों शुम्भ-निशुम्भ का वध स्वयं देवी ने अवतार लेकर किया था, और आज भी वहां के निवासी एक-एक पत्थर से स्मृतियां जोड़कर अत्यन्त भाव - भीने स्वर में विस्तार पूर्वक बताते हैं कि कहां पर मां भगवती जगदम्बा उग्र रूप में उपस्थित हुई थीं, किस स्थान पर उन्होंने हुंकार भरा था, किस स्थान पर उनके सिंह ने छलांग लगाई थी और किस शिला पर उन्होंने दैत्यों का वध किया था। प्रमाण स्वरूप वे उस शिला पर पड़े हुए एक बहुत बड़े लाल रंग के धब्बे को भी दिखाते हैं। काली मठ वह स्थान है जहां देवताओं की प्रार्थना पर देवी शांत हुई। अपने उग्र काली स्वरूप को त्याग कर पृथ्वी में समा गई और शांत स्वरूपों महालक्ष्मी, एवं महासरस्वती के रूप में स्थापित हुईं। इसके उपरांत भी वहां देवी के काली स्वरूप की ही महत्ता अधिक है। सम्पूर्ण वातावरण ही मानो कालीमय हो गया है— चाहे वह काली नदी का मंदाकिनी से मिलन स्थल हो अथवा उस घाटी का वातावरण। पग-पग पर ऐसी तीव्रता भरी शांति समाई हुई है मानो देवी पृथ्वी में समाकर प्रकृति के माध्यम से ही वहां प्रकट हो गई हैं।

पर्यटन की दृष्टि से तो ऐसे स्थानों का महत्व मैं नहीं आंक सकता, किन्तु साधना की दृष्टि से ऐसे स्थानों का जो महत्व है, जो चैतन्यता है उसका हल्का-सा अनुभव अवश्य कर सकता हूं। यदि कभी अपने ही आप को स्पर्श करने की इच्छा हो, यदि कभी अपने-आप से परिचय करने की भावना हो तो प्रयास कर प्रकृति के इन निर्जन स्थानों में भी अवश्य जाना चाहिए। भौतिकता में रहते-रहते, सांसारिक वार्तालाप करते-करते हम अपने-आप से ही वार्तालाप करना भूल चुके हैं। अपने-आप से वार्तालाप करना भूलने के कारण ही उन सूक्ष्म संदेशों को समझ ही नहीं पाते जो प्रकृति से हमें प्रतिक्षण प्राप्त होते हैं। साधना एकांगी वस्तु नहीं है, साधना एक क्रिया नहीं है, साधना इसी प्रकार अनेक तथ्यों से मिलकर निर्मित होती है। कभी ऐसा होना चाहिए कि हम इस वातावरण से निकल सकें, उन्मुक्त होकर दो क्षण लीन हो सकें और तब समझ सकेंगे जीवन की शांति क्या है, आह्लाद क्या है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि हम साधना के द्वारा जिस प्रकृति को वशीभूत करने की चेष्टा में प्रयासरत रहते हैं वही प्रकृति स्वयं हमें अपनी गोद में बैठाकर रहस्यों को बता देती है, और प्रकृति के ऐसे सुरम्य स्थलों पर जाकर इस बात को स्पष्टता से अनुभव किया जा सकता है। यह भी साधना में सफलता का एक सूत्र ही है। केवल कोलाहल, भीड़ और छद्म से घिरे तीर्थ स्थानों की यात्रा ही नहीं, कभी-कभी ऐसे भी स्थलों का भी अवलोकन कर लेना चाहिए, यद्यपि यहां न तो अच्छे होटल हैं, न संचार व्यवस्था, न राग-रंग, लेकिन इनके न होने से ही वह सब कुछ है जो शीतलतादायक है।

आगे इसी मार्ग पर चलकर पंचकेदार में से एक श्रीमद्महेश्वर का मंदिर है, जो अत्यन्त दुर्गम एवं वर्ष के अधिकांश महीनों में बर्फ से आच्छादित रहने वाला स्थान है, साथ ही हिंसक पशुओं और अत्यन्त भयावह सफेद भालुओं से भरा क्षेत्र भी, किन्तु इसके उपरान्त भी श्रद्धालु और विशेष रूप से प्रकृति-प्रेमी, जीवन के रोमांच का आनन्द उठाने वाले इन स्थानों पर जाने का अपना लोभ संवरण नहीं कर पाते हैं। साधकों के लिए तो इन स्थानों के महत्व का क्या कहना, केवल प्रकृति ही नहीं यहां के निवासी भी अभी तक जिस प्रकार से छल कपट से बहुत दूर हैं, जिस प्रकार इस क्षेत्र की एक छोटी बालिका से लेकर वृद्धा तक में एक अलौकिक सौन्दर्य और साक्षात् मां भगवती जगदम्बा का तेज समाया है उससे लगने लगता है, कि निश्चय ही मां भगवती जगदम्बा का अवतरण इसी घाटी में ही हुआ होगा। और केवल इतना ही नहीं कालीमठ की ख्याति एक अन्य कारण से भी है, प्रख्यात कवि कालीदास ने इसी कालीमठ में मां काली की उपासना कर वाक्शक्ति और कवित्व की प्राप्ति की थी। कुछ लोगों का मत है कि उनका जन्म भी इसी घाटी में हुआ था। यद्यपि यह शोधकर्ताओं का विषय है किन्तु यह तपः स्थली है, इसमें तो कोई भी शंका नहीं।

निश्चय ही यहां पर बहुत कुछ ऐसा है जिससे मन ठिठक जाता है, कुछ क्षण रुकने को करने लगता है। जैसी यहां की प्रकृति निश्छल है वैसे ही यहां के निवासी भी, जिनसे बात करते समय चौकन्नापन नहीं अपनाना पड़ता, जिनकी बातों में कूटोक्तियां और व्यंग नहीं भरा होता, जिनसे मिलने के बाद यह भय नहीं रहता कि कि ये मुझे कोई हानि न पहुंचा दें, जो आज नगरों और महानगरों का एक स्थाई भाव हो गया है।

. . .तब मन खुलकर फैलता है, आकाश-सा विस्तृत होता है, प्राण— गुनगुनाकर कहने लगता है- **अब मन उड़ि अनत न जाहि. . .** वहीं बस जाने के भाव में सघन जो होने लगता है।

क्या घर भी अभिशप्त होते हैं?

जब कि घर ही व्यक्ति का आश्रय स्थल, उन्नति का मूल और विश्राम का स्थान होता है।

विजयादशमी के अवसर पर गृहस्थ जीवन के सबसे महत्वपूर्ण पक्ष 'गृह' से सम्बन्धित एक आवश्यक विवरण व सम्बन्धित साधना।

यद्यपि शीर्षक थोड़ा अटपटा लग सकता है क्योंकि किसी स्त्री या पुरुष के इतर योनि द्वारा ग्रस्त होने की समस्या तो सुनने में आती है, लेकिन घर भी ग्रसित हो सकता है या अभिशप्त हो सकता है, इसका आभास बहुत कम लोगों को ही हो पाता है। किन्तु ऐसा होता है अवश्य, और इसका ज्ञान सामान्य रूप से नहीं हो पाता है क्योंकि जिन प्रभावों के कारण गृह दूषित हो जाता है या दूषित करवा दिया जाता है वही प्रवृत्तियां या दुष्ट आत्माएं गृह में रहने वाले व्यक्तियों की मानसिकता को इस प्रकार परिवर्तित कर देती हैं कि मूल कारण का पता कभी चल ही नहीं पाता।

यदि विश्व साहित्य के पन्ने पलटें तो इस सम्बन्ध में एक से एक अद्भुत घटनाएं भरी पड़ी हैं, जहां कोई मकान या विशाल भवन इस प्रकार से दूषित हुआ, जिसके कारण अनेक लोग अपने प्राण तक गंवा बैठे। ऐसे अभिशप्त मकानों की सूची बहुत बड़ी है, और सामान्य घर ही नहीं विश्व प्रसिद्ध महल और भवन भी इस श्रेणी में आते हैं। **इंग्लैंड का विन्सडर पैलेस या अमेरिका का व्हाइट हाउस ऐसे स्थान हैं,** जहां इसमें रहे अनेक व्यक्तियों की आत्माएं आज भी विचरण करती हुई देखी गई हैं और जिसके गवाह इन महलों में समय-समय पर रुकने वाले विदेशी व्यक्तित्व भी रहे हैं। इंग्लैंड का ही वोसवर्थ हाउस, टॉवर आफ लन्दन भी इसी प्रकार अजीबो - गरीब घटनाओं के कारण विश्वविख्यात हो चुके हैं, जहां कभी कोई आत्मा आती है और पहरेदार के शरीर के आर-पार निकल जाती है या घोड़े पर बैठा हुआ कोई प्राचीन राजकुमार दिखाई पड़ने लगता है, कभी अचानक घंटियां बजने लगती हैं या ऐसी ही अनगिनत घटनाएं।

किन्तु जहां सामान्य जीवन की बात आती है वहां इस तरह की बातों की कौतूहल पूर्ण अथवा रोमाञ्चक घटना समझ कर चर्चा नहीं की जा सकती। क्योंकि ऐसी स्थिति में सारे परिवार का भविष्य, उसकी सुरक्षा, अस्तित्व और उन्नति का मार्ग संकट में पड़ जाता है। **मैंने अपने जीवन में इस प्रकार के अनेक घरों को देखा है, जो किसी न किसी कारणवश अभिशप्त हो गए और** उनमें रहने वाले व्यक्ति विचित्र दशाओं से गुजरने को बाध्य हुए। आश्चर्य तो यह है कि उन्हें फिर भी नहीं लगा कि वे ऐसा सब कुछ अपने घर की दूषितता या जिस भूमि पर वह मकान बना है उसकी अपवित्रता के कारण भोगने को विवश हुए हैं।

मैं बहुत पहले एक घर में किरायेदार के रूप में रहा और उस घर में आने के एक सप्ताह के भीतर ही भीतर

अनुभव करने लगा कि न जाने क्यों मेरा चित्त उचाट रहता है, न साधना में मन लगता है न सामान्य जीवन में, और प्रत्यक्षतः इसका कोई भी कारण समझ में नहीं आ रहा था। मैंने स्थान परिवर्तन से उत्पन्न हुआ प्रभाव समझ कर विशेष ध्यान नहीं दिया, लेकिन कुछ दिन बाद अनुभव करने लगा कि मेरी यथास्थान रखी वस्तुएं कभी गुम हो जाती हैं, तो कभी कहीं और रखी मिलती हैं, जबकि ऐसा होने के पीछे कोई भी तर्कसंगत कारण नहीं था। स्थिति यहीं तक रहती शायद तब भी मैं शंकित न हो पाता किन्तु धीरे-धीरे मैंने अनुभव करना प्रारम्भ किया कि **जिस समय मैं साधना में बैठता हूं, तो उस समय मेरे चारों ओर काली परछाइयां डोलने लगती हैं,** घर की निचली मंजिल में होने के कारण मैंने प्राकृतिक रोशनी का अभाव समझ कर ट्यूबलाइट भी लगवा ली, लेकिन स्थिति ज्यों कि त्यों रहीं। परिवर्तन होना तो दूर उल्टे मानसिक व्यग्रता और विरोधी व अत्यन्त अश्लील विचारों की प्रबलता दिन पर दिन बढ़ने लगी। मैंने दबे स्वर से मकान मालिक एवं उनकी पत्नी से घर के बारे में और जिस भूमि पर वह बना था घुमा-फिराकर कोई सूत्र पाना चाहा लेकिन वे चुप्पी साधे रहे।
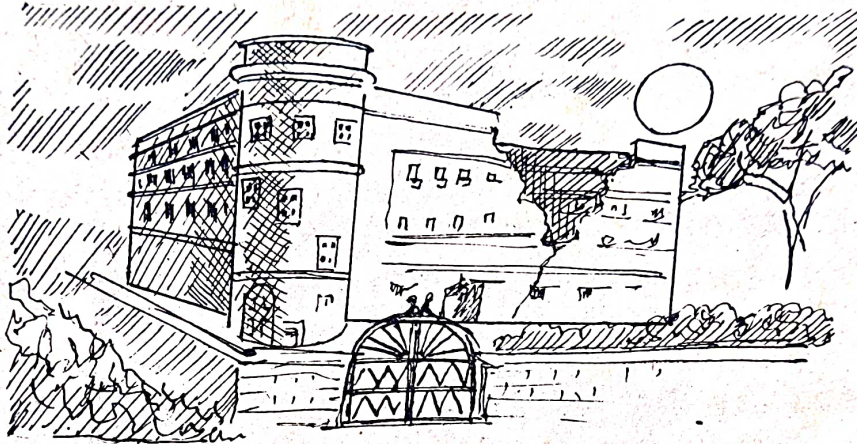
जहां मैं यह भी उल्लेख करना चाहूंगा कि मेरे मकान मालिक महोदय निःसंतान थे तथा पूर्ण स्वस्थ होते हुए भी अचानक पक्षाघात से पीड़ित होकर वर्षों से बिस्तर पर पड़े थे। एक दिन अचानक मुझे अपने दूध देने वाले ग्वाले से बातों-बातों में पता चला कि जिस स्थान पर वह घर बना, वह कभी कब्रिस्तान था, जिस कमरे में मेरा साधना कक्ष था, ठीक उसी स्थान पर खुदाई करते समय एक कब्र भी निकली थी, किन्तु मकान मालिक महोदय ने लालचवश वहां भी कमरा बनवा दिया। बाद में उत्पात व प्रकोप बढ़ जाने पर उन्होंने एक मुसलमान फकीर के कहने पर उस कमरे में एक आला बनवा दिया था। उस ग्वाले की बातों में तर्कसंगतता थी क्योंकि वास्तव में मेरे साधना कक्ष में आला बना हुआ था, जिसकी वहां कोई आवश्यकता भी नहीं थी और **जहां वह घर बना था, उससे थोड़ी ही दूरी पर आज भी कब्रिस्तान है ही।**

हो सकता है कभी जमीन को किसी ने गलत ढंग से बताकर बेचा हो या मकान मालिक महोदय ने कौड़ियों के भाव मिलने के कारण खरीद लिया हो।

धन, सम्पत्ति, घर से अत्यधिक मोह, लगाव और उससे कभी भी अलग न होने की कल्पना व्यक्ति को मृत्यु के उपरान्त भी उसी स्थान पर रहने के लिए विवश कर देती है **और तब उसकी उपस्थिति का आभास हल्की पदचाप, वस्त्रों की सरसराहट, हल्के खांसने की आवाज या जैसे कोई पीछे-पीछे चल रहा है आदि से होता है।**

मैं एक ऐसे घर में रहा, जिसके मृत मकान मालिक को बार-बार स्नान करने की आदत थी और रात्रि में या कई-कई बार दिन में भी मकान के बाथरूम में स्पष्ट रूप से लोटे की खड़खड़ाहट, पानी की धार के गिरने की आवाज, पानी का नाली से बहना स्पष्ट दिखाई पड़ता था, जबकि पूरा परिवार सो रहा होता था। एक बार तो मकान मालिक का पूरा परिवार दो महीने तक बाहर रहा लेकिन इस क्रम में कोई भी अन्तर नहीं पड़ा।

कई बार ऐसी आत्माएं पूरी तरह से निरापद और शांति प्रिय भी होती हैं, वे केवल मकान से अपने मोहवश मृत्यु के बाद भी सूक्ष्म रूप से वहां उपस्थित तो रहती हैं, लेकिन किसी को हानि पहुंचाने का प्रयास नहीं करतीं, जबकि अधिकांश स्थितियों में आत्माएं उग्र व क्रोधी हो जाती हैं, और अपनी गाढ़ी कमाई के मकान में किसी अन्य को रहते हुए नहीं देख सकतीं। यद्यपि मृत आत्मा चाहे वह शांत हो या उग्र उसकी सामान्य गतिविधि भी जीवित मनुष्य के होशो- हवास उड़ा देने के लिए काफी होती हैं।

इसी प्रकार की एक अन्य घटना है, जब मेरा एक अभिशप्त मकान से पुनः सामना पड़ा। मकान में आए लगभग एक माह हुआ था कि एक दिन रात में साढ़े ग्यारह-बारह के आस-पास धड़ाम से आवाज आई, मैंने दौड़कर देखा तो मेरा छोटा भाई अचेत पड़ा है। होश में आने पर उसने बताया कि वह सोते से उठकर लघुशंका करने जा ही रहा था कि उसने अपने सामने एक मझोले कद की आकृति को खड़े देखा, जिसने ब्रिटिश काल के फैशन वाला सूट व हैट पहिन रखा था तथा कुछ झुक कर अपनी जेब से जेबघड़ी निकाल कर चांदनी में देखने की कोशिश कर रहा था। मैंने छोटे भाई को दिलासा दी कि शायद नींद में एकाएक उठकर लघुशंका के लिए जाते समय कोई भ्रम अनुभव कर गए हो। यद्यपि उसके बाद वह मेरे साथ ही सोने लगा और उसने रात में उठना भी छोड़ दिया, किन्तु उसके हाव-भाव से लगता था कि उसने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया है।

इस घटना के लगभग पन्द्रह दिन बाद की ही बात है कि उस मकान के मालिक अपने पैतृक घर की देखभाल करने आए और बातों-बातों में उनके परिवार के इतिहास की बातें चल पड़ी। वे अपना एल्बम उठा लाए और हम दोनों भाइयों को दिखाने के लिए बैठ गए। **पहले ही पृष्ठ पर वह आकृति विराजमान थी, जिसका परिचय कभी मेरे भाई ने मुझे दिया था और अब जिसका परिचय मकान मालिक अपने स्वर्गवासी पिता के रूप में दे रहे थे।** मेरी व मेरे छोटे भाई की स्थिति जैसी हो गई थी, उसे शब्दों में नहीं बता सकता और कहना न होगा कि दो दिन के भीतर ही भीतर हम लोगों ने उस मकान से विदा लेने में अपनी भलाई समझी।

स्वयं अनुभूत घटनाओं के अतिरिक्त भी ऐसी कई बातें होती हैं, जहां व्यक्ति के विवरणों से पता लग जाता है कि वह एक अभिशप्त स्थान पर रह रहा है। घर में खटपट की ध्वनि, पदचाप होते रहना, घर के किसी विशेष भाग में जाते समय भय लगना, पीछे-पीछे किसी के चलने का आभास होना, घर में सदैव अंधेरा व मनहूसियत बनी रहना, मन का उदास रहना, किसी न किसी सदस्य का सदैव बीमार बने रहना अथवा परिवार के सदस्यों में रोज ही कलह होना, जैसे सामान्य लक्षण इस बात को प्रगट करते हैं। कभी-कभी यह स्थिति अत्यन्त उग्र व भयानक भी हो जाती है तथा उसमें निवास करने वाले व्यक्ति के प्राणों पर भी संकट बन आता है।

घर कोई ऐसा स्थान नहीं होता जिसे व्यक्ति बाजार से जब चाहे तब खरीद ले और जब चाहे तब बेच दे। मध्यम वर्ग हो या उच्च-वर्ग व्यक्ति पूरे-पूरे जीवन भर प्रयास करके ही अपने लिए रहने को स्थान निर्मित कर पाता है और यदि वह भूमि दोष, इतरयोनि दोष या अन्य किसी कारण से अभिशप्त हो जाए तो सिवाय इसके कि वह उसे सहते हुए जीवन जीता रहे, कोई अन्य मार्ग नहीं होता। किन्तु अभिशप्त घर में रहना भी किसी दुर्भाग्य से कम नहीं होता, स्वयं के लिए भी और अपनी संतानों के लिए भी, बुद्धिमत्ता तो इसी में होती है कि समय रहते निवारक प्रयोग सम्पन्न कर लिए जाए, उचित साधना का अवलम्बन ले लिया जाए।

साधना दिवसों में विजयादशमी का पर्व एक अत्यन्त तीव्र और सिद्ध दिवस माना गया है। इस दिवस से सम्बन्धित जो साधनाएं हैं, वे मूलतः निवारक साधनाएं ही हैं तथा इसी दिवस से सम्बन्धित गृह रक्षा एवं गृह बाधा निवारण की जो साधना है मैं उसे यहां प्रस्तुत कर रहा हूं। कोई आवश्यक नहीं कि घर में जब दूषित प्रभाव दृष्टिगोचर हो तभी ऐसी साधना को सम्पन्न किया जाए। विजयादशमी तो एक ऐसा अवसर है जबकि इस साधना को विजय पूर्वक, उल्लास पूर्वक सम्पन्न करना चाहिए।

जहां तक गृह की रक्षा का सम्बन्ध है, गृह की रक्षा करने, घर का वातावरण मंगलमय बनाने, उसमें निवास करने वाले व्यक्तियों के शरीर का रक्षण करने एवं उसे भूत-प्रेतादि बाधाओं से मुक्ति दिलाने हेतु भगवान श्री हनुमान से श्रेष्ठ अन्य कोई साधना है ही नहीं। उन्हीं के इष्ट भगवान श्रीराम के विजय का पर्व विजयादशमी उनसे सम्बन्धित साधना करने का सर्वश्रेष्ठ अवसर माना गया है। यह एक अत्यन्त गूढ़ रहस्य है कि भगवान श्री राम से सम्बन्धित साधनाएं उन दिवसों पर और तीव्रता से सफलतादायक बन जाती हैं जो उनके इष्ट भगवान श्रीराम से सम्बन्धित दिवस है।

यों भी भगवान श्री हनुमान रुद्र स्वरूप होने के कारण अत्यन्त सरल एवं शीघ्र प्रसन्न होने वाले देव हैं, साथ ही भूत-प्रेत आदि के स्वामी भी हैं। जिस घर में भी एक बार भगवान श्री हनुमान का प्रवेश हो जाता है और नियमित साधना के द्वारा उनकी सूक्ष्म उपस्थिति को स्थायी रखा जाता है वहां भविष्य में भी कोई भूत-प्रेतादि प्रकोप व्याप्त रह ही नहीं सकता। साधकों को चाहिए कि वे ऐसे श्रेष्ठतम मुहूर्त का लाभ भगवान श्री हनुमान की एक विशिष्ट साधना कर अपने जीवन को सौभाग्य प्रदान करें।

इस साधना के लिए अपने परम्परागत पूजन में कोई विशेष परिवर्तन नहीं करना है। विजयादशमी की रात्रि में ११ से २ बजे के मध्य इस साधना को प्रारम्भ किया जा सकता है। वस्त्र आदि का रंग लाल हो और दिशा दक्षिण हो। अपने समक्ष ताम्रपत्र पर अंकित **तांत्रोक्त हनुमान यंत्र** स्थापित करें और आपके घर में जितने भी द्वार हों (मुख्य द्वार सहित) उतने **तांत्रोक्त नारियल** प्राप्त कर उन्हें भी यंत्र के समक्ष रख दें। भगवान श्री हनुमान का वीर मुद्रा में अथवा पर्वत उठाए हुए **प्राण-प्रतिष्ठित चित्र** भी मढ़वा कर स्थापित कर लें।

यंत्र का पूजन सिंदूर एवं लाल पुष्प से करें तथा शुद्ध घी मिश्रित गुड़ का भोग लगाएं, ध्यान रखें की इस साधना में सुगन्धित द्रव्य आदि का प्रयोग नहीं करना है। अगरबत्ती के स्थान पर लोबान की धूप देना अधिक उचित माना गया है। उपरोक्त ढंग से संक्षिप्त पूजन कर प्रत्येक तांत्रोक्त नारियल पर एक सिंदूर का टीका लगाएं तथा तेल का बड़ा दीपक जला कर **मूंगा माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें —

(शेष पृष्ठ १५ पर)

परम पूज्य परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी

संन्यास - दिवस - पर्व

सही अर्थों में

सिद्धाश्रम सिद्धि दिवस समारोह

१५-१६-१७-१८ नवम्बर १९९४

भोपाल (म. प्र.)

❋ जो सही अर्थों में गुरुदेव के शिष्य हैं, उन्हें तो इस शिविर में पहुंचना ही है।

❋ पिछले बीस वर्षों में पहली बार गृहस्थ साधक, शिष्य परम पूज्य गुरुदेव **स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी** का संन्यास दिवस समारोह मनायेंगे।

❋ और यही दिन **''सिद्धाश्रम सिद्धि दिवस''** है, जिस दिन समस्त सिद्धियां, साधकों के सामने हाथ बांधे खड़ी रहेंगी।

❋ एक ऐसा शिविर, जिसमें उच्च कोटि के योगी, संन्यासी और गृहस्थ साधक एक साथ, एक स्थान पर भाग ले सकेंगे, मिल सकेंगे, ज्ञान का आदान - प्रदान कर सकेंगे।

❋ गुरु - पूर्णिमा और गुरु जन्म दिवस से भी उच्च कोटि का महोत्सव, उच्च कोटि का पर्व, उच्च कोटि का शिविर . . . .

❋ और फिर **परम पूज्य निखिलेश्वरानन्द जी का विराट स्वरूप दर्शन, ब्रह्माण्ड स्वरूप दर्शन, सिद्धाश्रम स्वरूप दर्शन।**

जीवन का जगमगाता पर्व

♦ संन्यास दिवस साधना शिविर

(सिद्धाश्रम सिद्धि दिवस समारोह)

और हम हृदय खोल कर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के साधकों और शिष्यों का स्वागत करने को प्रस्तुत है -

(सम्पूर्ण मध्य प्रदेश के गुरुभाई - बहिन)

सम्पर्क

- डॉ० साधना, साधना होम्यो क्लीनिक, शॉप नं० २५, छठा बस स्टॉप, सुभाष मार्केट, शिवाजी नगर, भोपाल, फोन : ०७५५-५५४९२५
- श्री अमित सक्सेना एवं निखिल वाणी टीम, भोपाल
- श्री जी. एस. चौहान, मकान नं.-६५३, सेक्टर - बी., पिपलानी, भोपाल
- श्री अरविन्द सिंह, नसीस काम्प्लेक्स, शॉप नं.-३, प्लाट नं. - २१०, जोन - १, एम. पी. नगर, भोपाल
- श्री टी. सुब्बाराव, ४/१, सी. पी. आर. आई. कॉलोनी, भोपाल, फोन : ०७५५-५८९२८२

- विस्तृत आयोजन समिति एवं आयोजन स्थल का विस्तृत विवरण अगले अंक में -

शरद पूर्णिमा एक चिरप्रतीक्षित साधना पर्व है

चन्द्रमा ने अपनी सारी पूर्णिमाएं तो दे दी हैं अलग-अलग पर्वों को, लेकिन बस एक पूर्णिमा चुराकर रख ली है खुद के लिए। खुद को और भी अधिक नशीला बनाकर कुछ बिखरने के लिए, कुछ बचाने के लिए नहीं, कुछ संजोने के लिए नहीं, बस बिखेरने के लिए ही और चांद से ज्यादा बिखरा भी कौन है? चांदनी से ज्यादा छलका भी कौन है? उसके साथ में तारों से भी ज्यादा कौन गुनगुनाया है? इसका तो कोई लेखा-जोखा ही नहीं। यूं तो चांद को लेकर शिकवों की भी कमी नहीं, उसकी चांदनी की चुभन में जलने वालों की भी कमी नहीं। **लेकिन एक चांदनी ऐसी भी है जिसको लेकर चांदनी में जलने वालों को भी कोई शिकवा-शिकायत नहीं रह जाती और यह है शरद की पूर्णिमा यानी कि आश्विन माह की पूर्णिमा** जब बारिशें थम गई होती हैं और एक अलग सा अमृत छलक पड़ता है सारे वातावरण में।

तभी तो शरद पूर्णिमा का नाम लिया नहीं, ओंठों पर मुस्कराहट तैर गई। एक अनोखी रात, कोई विलक्षण क्षण, जबकि बहुत कुछ घटने लगता है धरती से आसमान के बीच, और यही तो माना गया है कि इस रात में जो भी इसकी प्रकाश किरणों में भीगा वह साक्षात् अमृत तुल्य हो गया। इसी से कोई किसी प्रकार से, तो कोई अपने ढंग से इस रात का विलक्षण प्रभाव समेट ही लेना चाहता है।

शरद पूर्णिमा की रात वास्तव में एक ही रात नहीं होती, यह तो अमृत घट जैसी बात होती है और इस रात में छलके अमृत कणों को बस यूं ही नहीं प्राप्त किया जा सकता, इसके लिए तो कोई और युक्ति लगानी पड़ती है, और लगानी ही चाहिए क्योंकि यह जिस चैतन्यता से भरी रात होती है वही तो कायाकल्प साधना की भी रात होती है। कायाकल्प साधना के इच्छुक साधकों के चिरप्रतीक्षित क्षण होते हैं।

काया का कल्प अर्थात् शरीर का ही नहीं, मन का भी सम्पूर्ण रूप से परिवर्तन, सारे के सारे जीवन का परिवर्तन और इस परिवर्तन को अपने जीवन में लाने के लिए जो उपाय है, वह है भी कितना सरल!

परम्परागत ढंग में तो इस रात को हर कोई चांद की किरणों के सामने दूध की बनी खीर रखता ही है। लेकिन इसी खीर को यदि एक विशेष विधि से मंत्रसिक्त भी कर दें, तो प्रभाव निश्चित रूप से कई गुना बढ़ ही जाता है और यही क्रिया करते हैं हिमाचल प्रदेश में शिमला के पास के एक छोटे से गांव के निवासी। पिछली कई पीढ़ियों से वे इसी रात में अपने सामने खीर या दूध के बने किसी अन्य मिष्ठान को पात्र में रखकर विशिष्ट **चंद्रमणि माल्य** से एक विशेष मंत्र का सतत् जप एक निश्चित काल में करते हैं और तब उस खीर को शेष रात्रि के लिए चांद की किरणों के सामने पुनः छोड़ कर दूसरे दिन प्रातः सूर्योदय से पूर्व ही ग्रहण कर लेते हैं, फिर प्राप्त कर लेते हैं एक ऐसा प्रभाव, जो उनके स्नायु-मंडल को तरोताजा कर देता है। वे जिस मंत्र का जप करते हैं वह मंत्र है–

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रियै नमः

कहते हैं इस साधना का रहस्य मूलरूप से तिब्बती साधना पद्धति से मिलता है और चन्द्रमणि माल्य– इसको तो वे आजीवन अपने हृदय से लगा कर रखते हैं। दुर्लभ सफेद चन्द्रमणि के टुकड़ों से बनी यह माला जिसके भी शरीर का स्पर्श करती है उसे सदैव शीतलता और ताजगी अनुभव होती ही रहती है। यह ऐसी विशेष माला है जो पीढ़ी दर पीढ़ी भी प्रयोग में लाई जा सकती है और इसके प्रभाव में कोई भी न्यूनता नहीं आती। **इस साधना में सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है वह काल, जो मूल साधना का अंग होता है, और जो प्रतिवर्ष बदलता ही रहता है। इसका उल्लेख किसी पंचांग से नहीं वरन् एक गुह्य पद्धति द्वारा जाना जाता है।** इस वर्ष यह काल **रात्रि ११.१४ से १.३६** के मध्य घटित होगा और इसी काल में इस साधना को सम्पन्न करने से इसके प्रभाव को प्राप्त किया जा सकता है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि परिवार का मुख्य सदस्य अकेले ही इस साधना को परिवार के सभी सदस्यों के लिए सम्पन्न कर सकता है, यद्यपि उसे प्रत्येक सदस्य के लिए अलग-अलग चन्द्रमणि माल्य प्राप्त करना आवश्यक होता है।

सुखद जीवन का अहसास इस जीवन का सौभाग्य एवं गौरव

सदस्य बनने के दो माह के भीतर ही भीतर चैतन्य महालक्ष्मी दीक्षा सर्वथा मुफ्त

पूरे समय पत्रिका सर्वथा निःशुल्क आपके घर डाक द्वारा

अद्वितीय और अद्भुत भाग्योदय में सहायक, उंगली में जड़वाकर पहिनने योग्य आकर्षक सूर्यकान्त उपरत्न निःशुल्क

समस्त क्रियाओं में सहायक तेजस्वी पारद शिवलिंग उपहार स्वरूप

प्रथम, साधना शिविर में, अत्यधिक उपयोगी शिविर सिद्धि पैकेट (धोती, माला, पंचपात्र, गुरु चित्र तथा सिंहासन सर्वथा निःशुल्क)

एक बड़ा प्राण ऊर्जा से चैतन्य घर में स्थापित करने योग्य पूज्यपाद गुरुदेव का आकर्षक चित्र आशीर्वाद स्वरूप

प्राण-प्रतिष्ठित व पूज्यपाद गुरुदेव की प्राणश्चेतना से युक्त गुरु यंत्र आशीर्वाद स्वरूप

सिद्धाश्रम कैसेट, ऑडियो कैसेट जो आपके घर को मधुर व पवित्र वाणी से शुद्ध, चैतन्य कर देगा। सर्वथा मुफ्त

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की आजीवन सदस्यता सुखद जीवन का आधार है

केवल एक श्रेष्ठ हिन्दी पत्रिका की सदस्यता ही नहीं, एक रचनात्मक आन्दोलन व ऋषियों द्वारा संस्पर्शित आध्यात्मिक संस्था की गतिविधियों में आगे बढ़कर भाग लेना भी। जो पूज्यपाद गुरुदेव के समक्ष अपनी सजगता और अपनी शिष्यता को स्पष्ट करने की क्रिया भी है, आजीवन सदस्यता वास्तव में परिवार की आजीवन सदस्यता है और समस्त आजीवन सदस्यों को पूज्यपाद गुरुदेव से भेंट करने के विशेष अवसर भी उपलब्ध होते रहेंगे। केवल **६६६६/- रुपये** (आजीवन सदस्यता शुल्क के रूप में) यदि एक मुश्त में सम्भव न हो तो तीन किस्तों में जमा करने की सुविधा भी।

नोट - बिना उपरोक्त उपहारों के भी केवल २,४००/- रुपये द्वारा आजीवन सदस्यता उपलब्ध है ही।

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः०२९१-३२२०९

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४, फोनः०११-७१८२२४८, फेक्सः०११-७१८६७००

कोई राह सी मिलती है

सख्त काफिर था जिसने पहले 'मीर'
मजहबे इश्क इख्तियार किया

एक मजहब इश्क का भी होता है, एक रस्म मुहब्बत की भी होती है, एक राह अपनेपन की भी होती है। सैकड़ों राहों, तौर-तरीकों और बंदिशों के बीच, यही मजहबे इश्क है। हकीकत भी यही है कि जिसने इस मजहब को शुरू करने की बात सोची होगी उससे बड़ा काफिर (नास्तिक) कोई हुआ भी नहीं। सारी पथरीली मूर्तियों को तोड़कर उसी ने तो जीती-जागती, धड़कती मूर्ति बनाई, उसे पूजने से भी ज्यादा उसे अपनाने का तौर-तरीका सिखाया। उससे ज्यादा अपमान, वेदना और तिरस्कार भी किसी को नहीं मिला होगा और उसकी बनाई राह पर जितने लोग चले होंगे, उतने किसी भी मजहब के तंग दायरों में सिमटे, सिकुड़े, तंग दिल लोग भी नहीं चले होंगे।

आज भी मजहबों के जंगल में यही मजहबे इश्क की पगडंडी है, जिस पर कोई चलकर अपनी जिंदगी को सुकून दे सकता है। क्योंकि यह एक जीने का ढला-ढलाया तरीका नहीं है। यह तो विद्रोह है, सरासर उठकर, तनकर खड़े हो जाने की बात है कि नहीं! अब सड़ी-गली, बासी परम्पराओं में और नहीं जीना, उन्हीं रोजमर्रा के तौर-तरीकों में सिमट कर अपने-आप को दफन नहीं कर देना। जब ऐसा होता है तभी मन के घने जंगल के बीच की पगडंडी फूटती है। तभी आंखों में नूर उतरता है और ऐसी नूर से भरी आंखों को जरा सा खोलकर देखने पर ही सारा संसार अपना दिखने लग जाता है।

कितना ही कुछ क्यों न कह लें, इस शब्द को लेकर फिर भी कुछ अनजाना जैसा रह जाता है, कोई प्यास बच जाती है, कोई तडफ रह जाती है, यूं तो. . .

कोई हद ही नहीं शायद मुहब्बत के फसाने की
सुनाता जा रहा है जिसको जितना याद होता है

लेकिन जब तक इसकी तह तक न पहुंच जाएं, इसके कतरे-कतरे को न समझ लें, रग-रग में इसको न उतार लें, तब तक इसका सलीका कहां जाना? और यही सोच कर हम पूज्य गुरुदेव से रूबरू हो बैठे, क्योंकि उन्होंने भी जिस बात पर जोर दिया है, जिस बात का परिचय दिया है, जिसे एक तरह से नई जिंदगी दी है वह प्रेम ही तो है।

कृष्णा ने पूछा. . .

प्रभु! आपके प्रवचनों में प्रेम शब्द का ही उल्लेख सबसे अधिक क्यों रहता है?

गुरुदेवः क्योंकि बात वहीं से शुरू हो सकती है जहां पर खत्म हुई हो,और मेरी बात प्रेम पर ही खत्म होने के कारण अगली बार प्रेम से ही शुरू होती है। प्रेम यानि की पवित्रता, मुहब्बत, पाकीजगी, दोशीजगी और ये सारे शब्द मिलकर भी प्रेम का अर्थ बता पाने में अपना अस्तित्व खोते चले जाते हैं, फिर भी कुछ नहीं बता पाते हैं।

लेकिन यह समाप्ति नहीं है। बात कोई भी क्यों न हो जब वह शब्द खो देती है या शब्दों के जाल से छटपटा कर बाहर आ जाती है, खो जाती है एक सुगन्ध की तरह, तो उसी खो जाने के साथ-साथ एक खामोशी भी आती है, इसी खामोशी, निर्जनता और शून्य से एक शब्द पंख सा तिर जाता है, जो हवाओं के साथ डोलता-तिरता, उड़ता-फिरता रहता है, यही प्रेम है। मैं इसी प्रेम को कहता हूं।

तुम्हीं ने नहीं मेरे कई शिष्यों, परिचितों और आलोचकों ने भी मुझसे पूछा है कि मैं प्रेम पर ही सबसे अधिक क्यों बोला हूं, तो कृष्णा मेरा यही कहना है कि शायद इस शब्द पर अभी कुछ भी नहीं कह पाया हूं, अभी तो एक परिचय हुआ है इस शब्द से, आपस में एक-दूसरे को कुछ जानने-समझने जैसी बातें हुई हैं, जब ये बातें खत्म हो जाएंगी, एक खामोशी उतर आएगी, मन शांत होगा, भीगा होगा, तभी तो उसमें एक अंकुर फूटेगा और मैं जो इस शब्द पर सबसे अधिक बोल रहा हूं वह अंकुर ही जमा रहा हूं तुम सभी के मन में, क्योंकि यही तो नहीं रह गया है, इसी की तो कमी है, इसी छांव की ही तो कमी है और प्रेम की इस छांव के न होने से भी तुम्हारा और सभी का मन झुलस रहा है।

पर यह मत समझना यह एक शब्द भर ही है, जिस पर मैं प्रवचन दे रहा हूं, मैं तो बोल रहा हूं उस प्रेम पर जो चिनगारी है, जो आग है और जिसमें टकराहटें हैं। कभी तुमने देखा है कि

एक कारीगर किस तरह डूब कर मंदिर में स्थापित की जाने वाली मूर्ति को अपने जीवन के सैकड़ों घंटे खर्च कर छेनी की हल्की-हल्की टुक्-टुक् कर बिना ऊबे और बिना थके गढ़ता रहता है, मैं भी ऐसी ही मूरत गढ़ रहा हूं तुम सभी के मन के मंदिर में बिठाने के लिए, तुमको बार-बार अपने पास बुलाना, तुमको समझाना, तुमको डांटना, तुमको स्नेह देना, यह ही तो मेरी वह हथौड़ी की चोट है जिससे मैं तुम्हारे और अपने सभी शिष्यों के मन में मूरतें गढ़ रहा हूं, जीती-जागती, स्पन्दनशील और पूजा करने योग्य।

इस पर जया बोल उठी. . .

पर व्यक्ति आपके द्वारा प्रेम शब्द सुनकर चौंक क्यों जाता है?

गुरुदेव : क्योंकि उसकी परिभाषा और मेरी परिभाषा अलग-अलग जो है। मैंने पहले ही कहा कि यह शब्द नहीं आग है, टकराहट है, चिनगारी है और लोगों के पांव इस शब्द से झुलस जाते हैं, तो कोई आश्चर्य कैसा? पर उनका चौंक जाना तुम्हारी दृष्टि में कैसे आ गया? तुम तो अपने ही पथ पर चल रही हो, तुम्हारी आंखों में तो कोई जाला नहीं है, तुम्हारे मन में कोई दुर्गन्ध नहीं है, तुम्हारी दृष्टि तो स्वच्छ है उसमें इन बातों के लिए स्थान ही कहां? समाज तो यूं ही प्रेम शब्द सुनकर अभी बहुत समय तक सहमा, सिकुड़ा और अपने-आप को दबोचा हुआ सा जीवन जीता ही रहेगा, तुम इनसे अलग हो।

और जब मैं इस शब्द को बोलता हूं तो मेरा अर्थ होता है सुगन्ध व संगीत। मनुष्य के हृदय की सतरंगी भावनाओं का इन्द्रधनुष,जबकि सामान्य व्यक्ति का अर्थ होता है दैहिक सम्बन्ध, जो इसका एक प्रकार मात्र है, पूर्णता का परिचायक नहीं।

तुषार की जिज्ञासा थी. . .

फिर प्रेम की परिभाषा करते समय, प्रेम को व्यक्त करते समय, प्रेम का वर्णन करते समय स्त्री और पुरुष का रूपक ही क्यों लिया जाता है?

गुरुदेवः क्योंकि स्त्री व पुरुष के माध्यम से दो भावनाओं का प्रतिनिधित्व सबसे सुन्दर ढंग से जो होता है। स्त्री और पुरुष ही तो इस प्रकृति की सर्वाधिक मुखरित और जीवित इकाइयां हैं। पुरुष का आग्रह और स्त्री की समर्पणशीलता यही तो प्रेम का मूल है, प्रेम में इतना ही तो होता है, एक आग्रह और खो जाना। प्रकृति से प्रेम में भी तो यही क्रिया होती है। वृक्ष हिलते हैं, अपने पास बुलाते हैं, आग्रह दिखाते हैं और तुम उसमें खो जाते हो। गुरु और इष्ट से मिलन में भी तो ऐसा ही घटित होता है। इसी से यदि प्रेम को स्त्री-पुरुष के रूपक के माध्यम से व्यक्त करते हैं तो उसमें घटियापन कैसा? घटियापन तो वहां है जहां लक्ष्य मन न हो कर देह होता है, वासनापूर्ति होती है, और लक्ष्य का दूषित होना तो प्रत्येक प्रेम को दूषित कर देता है, केवल स्त्री-पुरुष के प्रेम को ही नहीं।

जब तुम गुरु के पास आते हो और तुम्हारी दृष्टि कहीं और टिकी होती है तो वह भी वासना ही है, वासना केवल शारीरिक ही नहीं होती। यह पद की आकांक्षा, धन की लालसा, अपने गुरु से रूप, यौवन की चाह, प्रसिद्धि की कामना, संस्था के आधार पर अपने व्यक्तित्व को प्रदर्शित करने का भोंडा प्रयास करना, अपने गुरु का नाम लेकर खुद को स्थापित करने की चेष्टा करना क्या ये सब वासनाएं नहीं हैं? तुषार अपनी दृष्टि को उदार करो, चेतनावान बनो और वास्तविक अर्थ को समझने की चेष्टा करो।

अमृत के मन की कचोट यूं सामने आई. . .

गुरुदेव! प्रेम से मन तो भीगा पर यह भीगने और भिगोने की बात सबको क्यों न छू सकी?

गुरुदेवः अमृत, तुम अपनी बात ठीक से कह नहीं पा रहे हो लेकिन मैं तुम्हारा भाव बखूबी समझ रहा हूं, मैं तुम्हें कुछ पंक्तियां सुना रहा हूं उन्हीं में तुम्हारे मन की बात छिपी है गौर से सुन . . .

दोनों के बीच ये अजब फासिला रहा
वो मेरे पास होके भी मुझसे जुदा रहा,
उसकी जुदाई ऐसी मेरे दिल पे जा लगी
मैं बरसों अपने-आप से खफा रहा

तुमने जो सारी धरा के भीगने की बात कही है उसके मूल में तुम्हारे खुद ही अधूरे रह जाने की कसक छिपी है, तुम दरअसल मेरे ही रंग में रंगना चाहते हो, मेरे साथ भीगना चाहते हो और इसमें जो क़मी रह गई है वही तुम्हें अतृप्त और अधूरा बनाए है। जिस दिन तुम खुद भीग जाओगे, तो पाओगे की सारी धरा भी भीगी ही हुई है। अभी तुम चाह कर भी ऐसा नहीं देख सकते।

. . .वो मेरे पास होके भी मुझसे जुदा रहा, यह तुम्हारा मन तुम से कह रहा है और यह अपूर्णता नहीं, यह तो संकेत है कि तुम इस पथ के यात्री हो, इस पथ के रंगों के कुशल चितेरे हो, इस पथ के लोभी भंवरे हो, तुम्हारी यही अतृप्ति, बेचैनी, छटपटाहट और उदासी ही तुम्हें एक दिन सभी ओर से काट कर मुझ तक ले आएगी, जहां तुम मेरे अन्दर वास्तविक मधु का पान कर उन्मत्त हो जाओगे, अपने जीवन का मर्म, रहस्य और उत्स पा जाओगे।

तुम्हारी तरह अन्य सभी के मन में भी ऐसा ही भाव जल्दी से जल्दी फूटे यही मेरी कामना और आशीर्वाद है।

नवरात्रि विशेषांक : दीक्षा व सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका- पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधना में संबंधित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्री को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है, तथा साधना से संबंधित दीक्षा की विशेष व्यवस्था भी की जाती है।

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
भगवती दुर्गा का प्राण प्रतिष्ठित चित्र	११	२०/-
नव दुर्गा यंत्र	११	२४०/-
खड्ग माला	११	४००/-
नौ तांत्रोक्त फल	११	१०१/-
आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र	१२	२४०/-
सर्व कार्य सिद्धि यंत्र	१२	२४०/-
सफेद हकीक माला	१२	१५०/-
लक्ष्मी जगदम्बा सिद्धि यंत्र	१२	२४०/-
पारदेश्वरी दुर्गा	१२	३६०/-
सिद्ध कवच	१७	३००/-
ह्रीं यंत्र	१८	२४०/-
स्फटिक माला	१८	३००/-
पद्मावती यंत्र	१८	२४०/-
पद्मावती माला	१८	२१०/-
अक्षय माला	१९	१५०/-
चित्रांगदा मणि	१९	१००/-
जाम्ब	१९	१००/-
वागीश्वरी यंत्र	१९	१५०/-
कात्यायनी यंत्र (ताबीज)	१९	१००/-
लघु दुर्गा यंत्र	१९	१५०/-
रक्त मणि	१९	१००/-
लघु भुवनेश्वरी यंत्र	१९	१५०/-
छिन्नमस्ता पाश	२०	१५०/-
दुर्गा फल	२०	२१/-
भूतभृर्त यंत्र	२०	२४०/-
काली फल	२०	६०/-
लघु शनि यंत्र	२०	१५०/-
आकर्षण मुद्रिका	२०	३००/-
पञ्चांगुली देवी का चित्र	२०	११/-
चण्डिका यंत्र	२०	३००/-
निहली	२०	६०/-
वेणु (६)	२०	२१/-
शुक्र माला	२०	२१०/-
सुन्दर	२०	१००/-
रौद्रा	२०	६०/-
विध्वंसिनी	२०	१००/-
सिद्ध रत्न	२०	१५१/-
गुणदा	२०	२००/-
सत्रहिया यंत्र	२३	२४०/-

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
सिद्ध रक्षा चक्र	२३	१००/-
भैरव गुटिका	२३	१००/-
काले हकीक की माला	२३	१५०/-
मंजूघोष माला	२६	२१०/-
उच्छिष्ट गणपति यंत्र	२६	२४०/-
धनदा देवी यंत्र	२७	२४०/-
कनक कौस्तुभ (३२४ नग)	२७	२१०/-
तारा वज्र	२७	१००/-
तारा मुद्रा	२७	१००/-
तारा चक्र	२७	१००/-
जोखड़ा (६)	२७	६०/-
अघोर माला	२७	२४०/-
सुमुखी काली यंत्र	३९	२४०/-
हरित हकीक सम्पत्ति माला	३९	१५०/-
क्षेत्रपाल यंत्र	४३	२४०/-
रुधिरा माला	४३	१५०/-
संहारिणी गुटिका	४६	६०/-
शुभदा यंत्र	४७	१५०/-
मनोहारी यंत्र	४७	१५०/-
कराला यंत्र	४७	२००/-
चामुण्डा यंत्र	४७	२००/-
दुर्गा फल	४७	२१/-
मंगला दुर्गा यंत्र	४७	२४०/-
लाल हकीक माला	४७	१५०/-
स्वप्नेश्वरी गुटिका	४७	१००/-
चैतन्य मुद्रिका	४७	१५०/-
पुत्रदा यंत्र	४७	३००/-
महागौरी मुद्रिका	४८	१५०/-
भोगदा यंत्र	४८	२१०/-
बलप्रमथनी विग्रह	४८	१००/-
तुष्टि चक्र	४८	६०/-
कामिनी मुद्रिका	४८	१५०/-
मनोकामना माला	४८	२४०/-
व्याघ्र मुखी	४८	६०/-
लोलाक्षी यंत्र	४८	१५०/-
मनोन्मनी यंत्र	४८	१५०/-
नारसिंही फल	४९	२१/-
वाराही गुटिका	४९	१००/-
विमला यंत्र	४९	१५०/-

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
नारायणी यंत्र	४६	१५०/-
जगदम्बा यंत्र	४६	२४०/-
दुर्गा प्रत्यक्ष सिद्धि यंत्र	४६	२४०/-
सोमप यंत्र	५६	२४०/-
एक लघु नारियल	५६	२५/-
पितृरेश्वर माला	५६	२१०/-
दुर्गा देवी का चित्र	६२	२०/-
चण्डी यंत्र (ताबीज)	६२	१५०/-
चण्डी माला	६२	२१०/-
सरस्वती यंत्र (ताबीज)	६३	३००/-
सरस्वती देवी का चित्र	६३	२०/-
स्फटिक माला	६३	३००/-
परिजात सरस्वती यंत्र	६३	२४०/-
स्फटिक मणि माला	६३	२४०/-
पारद मुद्रिका	६८	१५०/-
पारद माला	६८	८००/-
तांत्रोक्त हनुमान यंत्र	७३	२४०/-
एक तांत्रोक्त नारियल	७३	१५०/-
हनुमान जी का चित्र	७३	२०/-
मूंगा माला	७३	१५०/-
चन्द्रमणि माल्य	७५	२४०/-

दीक्षा	न्यौछावर
षोडश कला दीक्षा	५१००/-
जीवन मार्ग दीक्षा	६००/-
गुरु हृदय धारण दीक्षा	२१००/-
अष्ट लक्ष्मी दीक्षा	५१००/-
कुबेर सिद्धि दीक्षा	३५००/-
राजयोग दीक्षा	६०००/-
क्रिया योग दीक्षा	६०००/-
सम्मोहन दीक्षा	३०००/-
सिद्धाश्रम प्रवेश दीक्षा	३५००/-
अनंग दीक्षा	५१००/-
महालक्ष्मी दीक्षा	२१००/-
मनोवांछित कार्य दीक्षा	३६००/-
गृहस्थ सुख- समृद्धि दीक्षा	२१००/-
कुण्डलिनी जागरण दीक्षा	२१००/-
पूर्ण पौरुष प्राप्ति दीक्षा	३०००/-
सहस्रार जागरण दीक्षा	६०००/-
अप्सरा दीक्षा	२१००/-
गुरु प्रत्यक्ष सिद्धि दीक्षा	३६००/-
राज्याभिषेक दीक्षा	११०००/-
सर्व साधना सिद्धि दीक्षा	३१००/-
धन्वन्तरी दीक्षा	६००/-
दस महाविद्या दीक्षा	१५००/-
भगवती जगदम्बा प्रत्यक्ष सिद्धि दीक्षा	२४००/-
रोग शोक निवारणी कात्यायनी दीक्षा	२१००/-
तंत्र साफल्य दीक्षा	१५००/-
लक्ष्मी कल्पवृक्ष दीक्षा	१५००/-
परम गुरुदेव सच्चिदानन्द हृदयस्थ धारण दीक्षा	६०००/-
ज्ञान दीक्षा	६००/-
शक्तिपात से कुण्डलिनी जागरण दीक्षा	२१००/-
रतिकाम सौन्दर्य दीक्षा	१५००/-
ब्रह्माण्ड दीक्षा	२१००/-
पूर्ण पौरुष प्रदायक कामदेव दीक्षा	१५००/-
अप्सरा प्राप्ति दीक्षा	१५००/-
चैतन्य लामा दीक्षा	११००/-
साबर सिद्धि दीक्षा	११००/-

नोट : साधना सामग्री आप हमारे दिल्ली कार्यालय अथवा जोधपुर कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं किन्तु डाक द्वारा मंगाने की स्थिति में केवल हमारे जोधपुर केन्द्र से ही सम्पर्क करें, ऐसी स्थिति में डाक खर्च भी देय होगा सम्पूर्ण धन राशि पर मनीआर्डर कमीशन के रूप में यथोचित अतिरिक्त धन राशि पोस्ट ऑफिस द्वारा ली जाती है जिसका संस्था से कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

चेक स्वीकार्य नहीं होंगे। ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो, वह **"मंत्र शक्ति केन्द्र"** के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनिऑर्डर या ड्राफ्ट भेजने का पता

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,जोधपुर-३४२००१(राज.),टेलीफोन : ०२९१-३२२०६

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आएं

३०६,कोहाट इन्क्लेव,नई दिल्ली, टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, C. १३ , न्यू रोशनपुरा, नजफगढ दिल्ली से मुद्रित तथा गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली से प्रकाशित।

जीवन का सौभाग्यदायक

प्रत्यक्ष भगवती जगदम्बा साधना शिविर
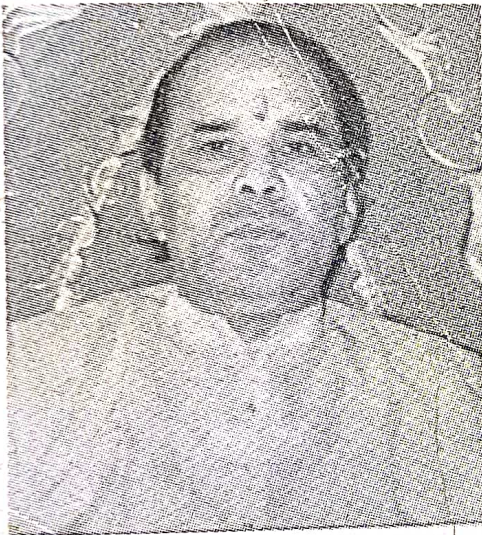
दुर्लभ गोपनीय एवं रहस्यमंय साधनाएं, प्रत्यक्ष प्रयोग एक सिद्ध चैतन्य पर्व

६.१०.९४ से १२.१०.९४ तक

लखनऊ (उ० प्र०) में

मां भगवती जगदम्बा की प्रत्यक्ष उपस्थिति का साहचर्य एवं पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में जीवन के दोनों पक्षों को लेकर सम्प कराए जाने वाले अलौकिक प्रयोगों का दुर्लभ पर्व!

लक्ष्मी कल्प वृक्ष प्रयोग, सिद्धाश्रम गमन प्रयोग, शक्तियुक्त ब्रह्मत्व दीक्षा, पूज्यपाद परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द हृदय धारण प्रयो गोपनीय एवं दुर्लभ पद्धति से बगलामुखी साधना, देवत्व प्राप्ति दीक्षा एवं रतिकाम सौन्दर्य प्रयोग . . .

वास्तव में इस नवरात्रि का तो एक-एक दिन नवीनता और हलचल से भरा ही होगा क्योंकि यह एक साधना शिविर ही नहीं जीव में मोड़ लाने की क्रिया जो है। किसी भी असुविधा से बचने के लिए समय से काफी पूर्व ही अपना रिजर्वेशन अवश्य करा लें।

सम्पर्क

डॉ० एस. के. बनर्जी, आनन्द होमियो हॉल, फैजाबाद (उ. प्र.), फोन : ०५२७-८१२५६५
श्री एस. के. मिश्रा, ३१७, मधवापुर, इलाहाबाद (उ. प्र.)
श्री एस. सी. कालरा, फोन : ०५३६-७२१६, ७२३७
श्री सी. डी. शर्मा, लखनऊ, फोन : ०५२२-३८३६००
श्री वेद प्रकाश शर्मा, सी. २१/११, पेपर मिल कॉलोनी, निशात गंज, लखनऊ
श्रीमतीं मनमोहिनी शर्मा, लखनऊ, फोन : ०५२२-७२४६८
श्री रामदेव तिवारी, लखनऊ
श्री ध्रुव कुमार दास, न्यू लखनऊ
श्री आर. एस. चौधरी, लखनऊ

शिविर शुल्क- ६६०/-

आयोजन स्थल : कमर्शियल काम्प्लेक्स, विश्वास खंड - ३, गोमती नगर, लखनऊ

क्योंकि दीक्षा ही शक्ति का अजस्र प्रवाह जो है

आगामी दीक्षा कार्यक्रम

साधक अपनी सुविधानुसार इन दीक्षाओं में से मनोवांछित दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

- ज्ञान दीक्षा
- जीवन मार्ग दीक्षा
- तंत्र साफल्य दीक्षा
- दस महाविद्या दीक्षा
- लक्ष्मी कल्पवृक्ष दीक्षा
- सिद्धाश्रम प्राप्ति दीक्षा
- गुरु प्रत्यक्ष सिद्धि दीक्षा
- गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा
- भगवती जगदम्बा प्रत्यक्ष दीक्षा
- रोग - शोक निवारिणी कात्यायनी दीक्षा
- परम गुरुदेव सच्चिदानंद हृदयस्थ धारण दीक्षा
- शक्तिपात से कुण्डलिनी जागरण दीक्षा
- पूर्ण पौरुष प्रदायक कामदेव दीक्षा
- रोग निवारक धनवन्तरी दीक्षा
- रतिकाम सौन्दर्य दीक्षा
- सहस्रार जागरण दीक्षा
- अप्सरा प्राप्ति दीक्षा
- चैतन्य लामा दीक्षा
- साबर सिद्धि दीक्षा
- राज्याभिषेक दीक्षा
- ब्रह्माण्ड दीक्षा

दिनांक २४ से ३० सितम्बर ९४

ये दीक्षाएं पूज्यपाद गुरुदेव केवल ''गुरुधाम'' दिल्ली में ही उपरोक्त दिवसों में प्रदान करेंगे।

सम्पर्क : गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन : ०११-७१८२३४[illegible]